प्रकाशक
सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट
बीकानेर (राजस्थान)

प्रथम संस्करण
सन् १९६० ई.
मूल्य – ३) रुपये

मुद्रक
अजन्ता प्रिन्टर्स, जयपुर

अनुक्रमणिका



प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ मे बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० परिणक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिहजी वहादुर द्वारा सस्कृत, हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी ।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानो एवं भाषाशास्त्रियो का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारभ से ही मिलता रहा है ।

सस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर मे विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तिया चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१. विशाल राजस्थानी-हिन्दी शब्दकोश

इस संवध में विभिन्न स्रोतो से सस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दो का सकलन कर चुकी है । इसका सम्पादन आधुनिक कोशो के ढंग पर, लवे समय से प्रारभ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके है । कोश मे शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ, और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाए दी गई हैं । यह एक अत्यत विशाल योजना है, जिसकी सतोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है । आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य मे इसका प्रकाशन प्रारभ करना सभव हो सकेगा ।

२. विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भडार के साथ मुहावरो से भी समृद्ध है । अनुमानत. पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग मे लाये जाते हैं । हमने लगभग दस हजार मुहावरो का, हिन्दी मे अर्थ और राजस्थानी मे उदाहरणो सहित प्रयोग देकर सपादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है । यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है ।

यदि हम यह विशाल सग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह सस्या के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिए भी एक गौरव की बात होगी ।

३. आधुनिकराजस्थानीकाशन रचनओं काप्र

इसके अन्तर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

१ कळायण, ऋतु काव्य । ले० श्री नानूराम सस्कर्ता

२. आभै पटकी, प्रथम सामाजिक उपन्यास । ले० श्री श्रीलाल जोशी ।

३ वरस गांठ, मौलिक कहानी सग्रह । ले० श्री मुरलीधर व्यास ।

'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमे भी राजस्थानी कवितायें, कहानिया और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४ 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन सस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानो ने मुक्त कठ से प्रशसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एव अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका है। इसका भाग ५ अङ्क ३-४ 'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक' बहुत ही महत्वपूर्ण एव उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अङ्क एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य-सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वा भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। इसका अङ्क १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और बृहत् विशेषाक है। अपने ढग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सम्बन्ध मे इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एव विदेशो से लगभग ८०[1] पत्र-पत्रिकाए हमे प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशो मे भी इसकी माग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओ के लिये 'राजस्थान भारती' अनिवार्यत सग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमे राजस्थानी भाषा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखो के अतिरिक्त सस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्रीनरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचन्द नाहटा की बृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५. राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसधान, सम्पादन एव प्रकाशन

हमारी साहित्य-निधि को प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियो को सुरक्षित रखने एव सर्वसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एव शुद्ध रूप मे मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। सस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रथो का अनुसधान और प्रकाशन संस्था के सदस्यो की ओर से निरतर होता रहा है जिसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६. पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई सस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से लघुतम सस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अ श 'राजस्थान भारती' मे प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती मे प्रकाशित हुए हैं।

७. राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओ की खोज की गई। जिसकी सर्वप्रथम जानकारी 'राजस्थान-भारती' के प्रथम अ क में प्रकाशित हुई है। उसका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य 'क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८. राजस्थान के जैन सस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबध राजस्थान भारती में प्रकाशित किया जा चुका है।

९. मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतो का सग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एव जैसलमेर क्षेत्र के सैकडो लोकगीत, घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरिया और लगभग ७०० लोक कथाऐं सग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतों के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सर्वप्रथम राजस्थान-भारती' मे प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल संग्रह 'बीकानेर जैन लेख सग्रह' नामक वृहत् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवत उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथो का सम्पादन एव प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचंद भडारी की ४० रचनाओ का अनुसधान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सबंध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान-भारती' मे लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखो और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रथो का अनुसंधान किया गया और ज्ञानसार ग्रथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६३ लघु रचनाओ का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त सस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज, और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियो के निर्वाण-दिवस और जयन्तिया मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्यिक गोष्ठियो का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमे अनेको महत्वपूर्ण निबध, लेख, कविताएँ और कहानिया आदि पढी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियो तथा भाषणमालाओ आदि का भी समय-समय पर आयोजन किया जाता रहा है।

१६. बाहर से ख्यातिप्राप्त विद्वानो को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्री कृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रन्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानो के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षो से महाकवि पृथ्वीराज राठौड आसन की स्थापना की गई है। दोनो वर्षो के आसन-अधिवेशनो के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और प० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूडलोद, थे ।

इस प्रकार सस्था अपने १६ वर्षों के जीवन-काल मे, सस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक सकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह संभव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पडते इसके कार्यकर्त्ताओ ने 'राजस्थान-भारती' का सम्पादन एव प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओ के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरतर चलता रहे। यह ठीक है कि सस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा सदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्य को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं; परन्तु साधनो के अभाव मे भी सस्था के कार्यकर्ताओ ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर सस्था के गौरव को निश्चय ही बढा सकने वाली होगी ।

राजस्थानी-साहित्य-भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अश ही प्रकाश मे आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एव अनर्घ रत्नो को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिको के समक्ष प्रस्तुत करना एव उन्हे सुगमता से प्राप्त कराना सस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्त्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तको के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सभव नही हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक सशोध एवं सास्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओ के विकास की योजना के अतर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये रु० १५०००) इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल रु० ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन-प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष मे प्रदान की गई है, जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तको का प्रकाशन किया जा रहा है ।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३ अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	” ” ”
६. दलपत विलास	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	” ” ”
८. पंवार वश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बद्रीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचन्द नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचन्द नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबन्ध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचन्द कृतिकुसुमांजलि—	” ” ”
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचन्द नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	” ” ”
२१. राजस्थान के नीति दोहा—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थान व्रत कथाएं—	” ” ”
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	” ” ”
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५ भड्डुली—	श्री अगरचन्द नाहटा म:विनय सागर
२६. जिनहर्ष ग्रथावली	श्री अगरचन्द नाहटा
२७. राजस्थानी हस्तलिखित ग्रंथो का विवरण	,, ,,
२८. दम्पति विनोद	,, ,,
२९. हीयाली-राजस्थान का बुद्धिवर्धक साहित्य	,, ,,
३०. समयसुन्दर रासत्रय	श्री भंवरलाल नाहटा
३१. दुरसा आढा ग्रथावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जैसलमेर ऐतिहासिक साधन सग्रह (संपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रथावली (संपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवर्द्धन शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचन्द नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नही हो रहा है ।

हम आशा करते हैं कि कार्य की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमे अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त संपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथो का प्रकाशन सम्भव हो सकेगा ।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षाविकास सचिवालय के आभारी है, जिन्होने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट-इन-एड की रकम मंजूर की ।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एवं पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अत: हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवर्द्धन किया, जिससे हम इस वृहद् कार्य को सम्पन्न करने मे समर्थ हो सके । सस्था उनकी सदैव ऋणी रहेगी ।

इतने थाडे समय मे इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थो का संपादन करके सस्था के प्रकाशन-कार्य मे जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादको व लेखको के अत्यत आभारी हैं।

अनूप सस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय वीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियटल इन्स्टीट्यूट वडोदा, भाडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान-भडार वीकानेर, मोतीचद खजान्ची ग्रंथालय वीकानेर, खरतर आचार्य ज्ञान भण्डार वीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी वंवई, आत्माराम जैन ज्ञानभडार वडोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशकर देराश्री, प० हरदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक सस्थाओ और व्यक्तियो से हस्तलिखित प्रतिया प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रन्थो का संपादन संभव हो सका है। अतएव हम इन सवके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते हैं।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एवं पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय मे ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छत: स्खलनक्वपि भवत्येव प्रमादत:, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधव:।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमें लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुन मा भारती के चरण कमलो मे विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुन. उपस्थित होने का साहस वटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मंत्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
वीकानेर

वीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
स० २०१७
दिसम्बर ३,१९६०.

डिंगळ गीत

भूमिका

राजस्थानी भाषा के विशाल साहित्य-भण्डार मे 'दूहों' के बाद सभवत 'डिंगळ गीतों' की ही बारी आती है। जिस प्रकार हर राजस्थानी कवि ने कुछ न कुछ दूहे अवश्य लिखे हैं उसी प्रकार उसने डिंगळ गीतों की रचना भी अवश्य की है। जब तक डिंगळ गीतों के इस अथाह सागर की नाप-जोख कर उनकी संख्या नहीं निर्धारित की जाती, तब तक हम इसे हजारों की अनिश्चित सख्या में ही मान कर सतोष करेंगे।

प्रस्तुत सकलन के गीतों की चर्चा करने से पूर्व 'डिगळ' और 'गीत' शब्दों का थोडा परिचय देना समीचीन होगा। 'डिंगळ' राजस्थानी साहित्य का अपना शब्द है जिसका सही अर्थ आज तक किसी को भी ज्ञात नहीं हो सका। अनेक देशी व विदेशी विद्वानों ने इसकी व्युत्पत्ति के सम्बन्ध मे अनेक कल्पनाये की हैं। इन कल्पनाओं का मुख्याधार 'पिंगळ' और 'डिगळ' शब्दों का ध्वनिसाम्य ही नहीं अपितु इनका युग्म शब्दों के रूप में प्रयोग भी है।

राजस्थानी साहित्य के प्रतिष्ठित अधिकारी इटालियन विद्वान डा० एल० पी० टैसीटोरी ने पिगळ को सुसस्कृत भाषा बताते हुए उसकी तुलना में डिगळ को गवारू भाषा बता कर इसे व्युत्पन्न करने की चेष्टा की है। डा० हरप्रसाद शास्त्री, प्रो० नरोत्तमदास स्वामी, डा० मोतीलाल मेनारिया, चारण विद्वान उदयराज उज्ज्वल आदि ने भी अपनी-अपनी पृथक धारणाये प्रस्तुत की हैं। भाषा-शास्त्र के सुविख्यात विद्वान डा० जार्ज ए० ग्रियर्सन ने डिगळ को पिगळ के

अनुकरण पर बना हुआ शब्द माना है। यही धारणा सबसे अधिक उपयुक्त प्रतीत होती है। इसके पक्ष मे सबसे पुष्ट प्रमाण यही है कि राजस्थानी साहित्य में इनका प्रयोग प्राय एक स्थान पर तथा प्रतिस्पर्धा के रूप मे ही पाया जाता है। चारणों और भाटों के परम्परागत वैमनस्य के मूल मे भी यही प्रतिस्पर्धा रही है। इस प्रतिस्पर्धा के स्पष्ट उल्लेख अनेक चारणी ग्रथों मे प्राप्य है जिनमे उन्होंने पिगळ की जी भर निन्दा की है।

यह मानी हुई बात है कि पिंगळ साहित्य डिंगळ की तुलना मे कम समृद्ध नहीं है। इस साहित्य की प्राचीनता भी डिंगळ से किसी हालत मे कम नहीं है। भट्ट चन्द वरदाई कृत प्रिथीराज रासो को पिगळ का तिष्ठित ग्रथ मानने से पिंगळ की परम्परा उससे भी दो-तीन शताब्दी पूर्व ६-१० वीं तक पहुँचती है। डिगळ साहित्य को भी हम इससे अधिक पहिले नहीं ले जा सकते। डिंगळ और पिंगळ की उत्पत्ति शौरसेनी तथा गौर्जरी नामक दो पृथक अपभ्रशों से मान लेने पर इनके पृथक् विकास की बात माननी पड़ती है। संभव है कि शौरसेनी का प्रभाव-क्षेत्र राजस्थान में अधिक न रहने के कारण उसका साहित्य इतनी मात्रा मे यहां उपलब्ध न हो। पर सोलहवीं शताब्दी से, जब से डिंगळ साहित्य प्रचुर परिमाण मे प्राप्त होता है, पिंगळ साहित्य भी न्यूनाधिक मात्रा मे मिलता है। तथ्य तो यह है कि प्रायः हर चारण कवि ने डिगळ के साथ-साथ पिंगळ में भी रचना अवश्य की है। इस नाते हम पिंगळ को व्रज भाषा से भिन्न राजस्थान की अपनी शैली मानते हैं। साहित्य और कलाओं की समृद्धि के स्वर्णयुग-मुगलकाल-मे डिगळ और पिगळ दोनों समान रूप से राजस्थान में फली-फूली हैं। जिस प्रकार चारणों ने पिंगळ में भी रचना की उसी प्रकार भाटों तथा रावों ने भी डिंगळ मे रचना की है। प्रतिस्पर्धा होते हुए भी राजदरबारों मे दोनों शैलियों को पर्याप्त प्रश्रय मिलता रहा है।

अभी तक डिंगळ को अपेक्षाकृत नया शब्द मानने वाले इसका सर्वप्रथम प्रयोग उन्नीसवीं सदी मे बांकीदास के काव्य में ही ढूंढ पाये थे। पर जैन कवि कुसळलाभ के छद शास्त्र 'उडिंगळ नाम माळा' तथा सायांजी झूला के 'नागदमण' मे इस शब्द का प्रयोग देख कर इसका प्रचलन पतरह्वीं सदी के प्रारम्भ में भी स्वीकार करना पड़ता है। वहुत सम्भ है आगे चलकर इसकी प्राचीनता और पहिले तक प्रमाणित की जा सक। दूसरी वात ध्यान देने की यह है कि सायांजी के 'नागदमण' में जि ग से यह प्रयुक्त हुआ है उससे पिंगळ और डिंगळ की प्रतिस्पर्धा भी स्पष्टतया लक्षित होती है। कालियनाग और कृष्ण के युद्ध का चित्र प्रस्तुत करते हुए सायांजी ने लिखा है :—

गोडी दांग मारा गुड़े गुंठणारा
पडे पाइ पारा मथे मैंण धारा
उड़ै पींगळा डींगळा रा अगारा
ग्रहै गूदरै जेम कुळाळ गारा

पिंगळ का सम्बन्ध कृष्ण द्वारा वश में किये जा रहे नागराज से जोड़ने के कारण यहां भी चारण कवि ने डिंगळ की तुलना में पिंगळ को हेय ही सिद्ध किया है।

कौन कह सकता है कि पिंगळ और डिंगळ की इसी प्रतिस्पर्धा ने पिंगळ के छद शास्त्र की तुलना मे अपना नया छंद-विधान आविष्कृत करने की प्रेरणा चारण कवियों को दी हो। हाल ही में हुई कुछ खोजों के अनुसार डिंगळ छंद शास्त्रों के कई लेखकों ने इस शास्त्र के प्राचीन आचार्यों में भट्ट जाति के विद्वानों का नामोल्लेख किया है जिससे चारणों को इस शास्त्र के आविष्कर्ता मानना असंदिग्ध नहीं रह गया है। यद्यपि चारण कवियों ने पिगळ भाषा की भांति परम्परागत पिंगळ छन्दों मे भी अनेक डिगळ रचनायें की है, पर अधिकाश साहित्य डिगळ के नये छदों मे ही रचा गया है। डिंगळ का यह मौलिक छद शास्त्र उसके लिए एक महान गौरव का विषय बन गया है।

इन गीतो के विषय में एक बात बता देनी विशेष आवश्यक है। यह धारणा कि ये गीत चारण कवियो द्वारा गाये जाते थे, भ्रामक है। जिस अर्थ मे सगीत विद्या के अनुसार पद तथा गीत आदि गाये जाते हैं उस अर्थ मे इनका गायन कभी नहीं होता। हा, इनका सस्वर पाठ अवश्य होता है, जैसा कि वैदिक ऋचाओ का। गीतों का यह पाठ (recitation) अपने आप में एक कला है, जो धीरे धीरे गीतो की लोकप्रियता के साथ ही विलीन होती जा रही है।

गीतो के छद-विधान से सबधित कोई नौ ग्र थ अभी तक प्रकाश में आये हैं। प्रायः इन सभी मे गीतों के लक्षण, रचना-नियमव उदाहरण दिए गए हैं। १७वीं से उन्नीसवीं शताब्दियो के बीच लिखे गए इन ग्र थों मे सर्वाधिक गीत सख्या कवि किसनाजी द्वारा रचित 'रघुवर जसप्रकाश' नामक छद ग्र थ मे है। किसनाजी ने ६१ प्रकार के गीतों के अतिरिक्त गीतों के ग्यारह प्रकार के दोष, व वयणसगाई अलकार आदि का भी विस्तृत वर्णन किया है।

गीतों के इतने भेदोपभेद होते हुए भी अधिकांश गीत 'साणोर' 'सुपखरौ', 'सावझड़ौ' तथा 'भुजगी' जैसे प्रमुख छदों में ही लिखे गए हैं। प्रस्तुत सकलन के गीत भी प्राय. इन्हीं भेदों से सवधित है।

इस सकलन मे ५३ गीत दिये गए हैं जिनका चयन विपयगत विविधता की दृष्टि से किया गया है। देवी स्तुति, क्षत्रिय प्रशसा, वीर व दातार प्रशंसा, साहित्य व चारण कवियों की प्रशंसा, प्रसिद्ध वीर व वीरांगनायें, कायर-निंदा, प्रसिद्ध दातार, कुदान-निंदा, संयोग व वियोग शृङ्गार, नशे की स्तुति व निंदा, कपूत सपूत, मरसिये, शांतरस, तथा खेती की महिमा—इन विविध विषयों के गीतों को सकलित करने का ध्येय गीतों की विविधता से परिचित कराना ही है।

उपर्युक्त गीतों मे से बहुत से मेरे अपने संग्रह के गीत हैं तथा शेप मेरे सहयोगी मित्र कुवर चण्डीदान सादू के सग्रह से लिये गए

है। अनेक गीत पत्र-पत्रिकाओं मे प्रकाशित भी हो चुके है। पर, हमारा उद्देश्य केवल अप्रकाशित गीतों को ही छापने का न होने के कारण इस ओर ध्यान नहीं दिया गया है।

गीतों के पाठ, शब्दार्थ और भावार्थ लिखने का मूल काम कुंवर चण्डीदान सॉदू ने ही किया था। पर उन्हें वर्तमान रूप में मैंने लिखा है। टिप्पणियां तथा अनुक्रमणिका भी मैंने जोड़ी है। गीतों के पाठ, शब्दार्थ व भावार्थ मे अनेक स्थानों पर गलतियां हो सकती हैं। कई ऐसी गलतियों का टिप्पणियों में उल्लेख भी कर दिया गया है। गीतों की शब्दावली मे रूढ़ व अनुकरणात्मक शब्दों के अर्थों मे सर्वमान्यता का अभाव रहने के कारण भी ऐसे कई स्थानों पर विद्वानों का मतभेद सभव है। ऐसी तथा अन्य सभी गलतियों के लिए मैं स्वय ही दोषी रहूँगा, क्योंकि कुवर चण्डीदान सॉदू द्वारा किए गए अनेक अर्थों से भी असहमत होने के कारण मैंने उन्हें अपनी मति के अनुसार बदल दिया है। शब्दकोष मे हर कठिन शब्द का अर्थ देने का प्रयत्न किया है। पर अकारादिक्रम से शब्द न दिये जाने का खेद है। इस कारण अनेक शब्दों के अर्थ कई जगह आगये है।

यहाँ मै कुवर चण्डीदान सॉदू के विषय मे दो शब्द लिखना भी चाहूँगा। ये उन उन इने गिने चारण विद्वानों में है जिन्हें प्राचीन परम्परा के आम ज्ञान के साथ-साथ मौलिक रचनाओं का भी वरदान प्राप्त है। व्याकरण व छद-शास्त्र पर इनका अच्छा अधिकार है। राजस्थानी भाषा के सक्षिप्त व्याकरण तथा उत्कृष्ट कोटि के रूपकबद्ध डिंगळ गीतो की रचना इन्होंने स्वय की है। आधुनिक राजस्थानी नाटक व काव्य-प्रणयन के अतिरिक्त सस्कृत ग्रन्थों के अनुवाद भी आपने किए हैं। डिंगळ गीतों का एक बहुत बड़ा सग्रह आपके पास सुरक्षित ही नहीं है अपितु उसे समझने व समझाने की क्षमता भी है। आज जब प्राचीन डिंगळ के जानकार धीरे-धीरे लुप्त होते जा रहे हैं तो विद्वान युवक कुंवर चण्डीदान सादू की विद्वत्ता से लाभ उठाना बड़ा

आवश्यक हो जाता है। यह खेद की बात है कि ऐसे विद्वान को हमारी विषम सामाजिक परिस्थितियों के कारण रुचि के अनुकूल व्यवसाय भी हम नहीं दे पाये। वे आजकल राजस्व विभाग के कर्मचारी हैं जहां रहकर साहित्य सेवा के लिए समय निकाल पाना बड़ा कठिन है।

गीतों का यह संकलन कोई छः सात वर्ष पहिले ही सम्पादित कर लिया गया था, पर सुविधाओं के अभाव में प्रकाशित नहीं किया जा सका। सादूळ राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट के सुयोग्य संचालक श्री अगरचंद नाहटा के सद्प्रयत्नों से यह अब प्रकाश में आ रहा है। इसलिए इसका अधिकांश श्रेय उन्हीं को मिलना चाहिए। राजस्थानी गीतों के प्रारम्भिक पाठकों को इन गीतों के द्वारा गीत-साहित्य का अध्ययन करने की प्रेरणा प्राप्त होगी तो हम अपना प्रयास सफल समझेंगे।

मीरा मार्ग वनीपार्क
जयपुर

—रावत सारस्वत

डिंगल गीत

श्री करणीजी का गीत

आसिया वाकीदास का कहा हुआ

तूने कोप किया और (राव) कान्हा को मार डाला। रिड़मल को तूने राज्य दिया। हे चारणी, इस लोक में तू ही चारणों के गावों की लाज रखती है।

तेरे द्वारा वरप्राप्त लोगों (चारणों) की भूमि को नष्ट करने वालों की जड़े उखाड़ कर तू उन पर आकाश ढहा देती है। हे किनियावंशोत्पन्न, आरणयक वृक्षों वाली देवी, तुम्हारे झाड़ों (वृक्षों) तक को भी कोई नष्ट नहीं कर सकता।

अपराधी म्लेच्छों को मारने वाली तू अपने सेवको पर भले ही तुष्ट होती है। हे करणी, तेरे वरद हस्तों की छाया होने पर चारणों के गांवों को कौन नष्ट कर सकता है।

हे वांकीदास, मेहोजी की पुत्री (करणी) को मत भुला, जो पुकार सुनते ही सकट हर लेती है। चारणों के अधीनस्थ गांव (क्षत्रियों के) गढों की ओट मे निडर रहते हैं और इन गढों की मर्यादा मढ (करणी देवी के मदिर) के सरक्षण मे सुरक्षित हैं।

गीत श्री करणीजी रौ
आसिया वांकीदास रौ कह्यौ

कोधौ तैं कोप साभियौ कानौ
रिडमल नैं दीधौ तैं राज
चारणवाड़ां तणी चारणी
लोक मही तू राखै लाज

वरपाडा धरपाडां वाळी
आभ जडा नाखै ऊपाड
कोय न गाज सकै किनियाणी
जीभणियाळ तुहाळा झाड

मेछा अपराधिया मारणी
भला सेवगा आवै भाव
करै करा छाया तूं करणी
गाजै कुण गढवाडा गाव

बाका मेहासधू म बिसरै
संकट हरै साभळै साद
गढवाडा गढ ओलै गाजै
मढ रै ओलै गढां मजाद

क्षत्रियों की तारीफ का गीत

क्षत्रियों की दोनों (पुत्र-पुत्री) सताने ही इस प्रकार अच्छी हैं कि वे कलियुग के बुरे कीचड़ में लिप्त नहीं होतीं। क्षत्रिय-कुमार खड्गधाराओं में स्नान करते हैं और कुमारियां अग्नि-शिखाओं में (जौहर-ज्वाला) नहाती हैं।

राजपूतों की दोनों सताने ही प्रशसनीय हैं, जिनके शरीर में कलियुग का प्रवेश नहीं हो पाता। इनके पुत्र तलवारों की धारों के सन्मुख होकर उनमे धस जाते हैं, और पुत्रियां अगारों की ज्वालाओं में घुस जाती हैं।

राजपुत्रों की दोनों सताने ही खूब हैं, जो कलियुग के कीचड़ में नहीं फसतीं। इनके बेटे तलवारों की धारों पर चढ़ कर लड़ते हैं और बेटियां लकड़ियों के ढेरों पर चढ कर जल-जाती हैं।

ये दोनों स्वामिधर्म और पातिव्रत्य का भली भाति पालन करती हुई युद्ध और अग्नि को अपने अगों पर स्वीकार करती हैं, तथा शस्त्र-प्रहारों एव अग्नि-शिखाओं से लिपट कर स्वर्ग की ज्योति मे अन्तर्हित हो जाती हैं।

गीत छत्रियां री तारीफ रौ

इम छत्रियां तणा बेत बिहुं आछा
　　　　भूंडइ कळ न कीच भरइ
कवर सनान करइ किरमाळां
　　　　कवरी सु झळां न्हाण करइ

रजपूतां जामण दुहुं रूड़ा
　　　　बप जां रइ नह कळ बसइ
सारा धार धसइ सनमुख सुत
　　　　धार अंगारा सुता धसइ

हइ राजविया जाय विनइ हद
　　　　कळ कीच माहे न कळइ
बिजड़ां धार लड़इ चढ बेटा
　　　　बेटी काठा चढे बळइ

स्यामधरम पतिव्रत अति साधइ
　　　　अग. आराण आसगइ आग
सुज मिलि जाय जोत हूता स्रग
　　　　लोहां झडा लाकड़ां लाग

गीत

राठौड सहसमल का कहा हुआ

युद्ध करने वाले लड़ाकू वीरों को सहसमल इस प्रकार कहता है कि विधाता का लिखा हुआ ही होगा, यह सोच कर धैर्य धारण करो। भयकर युद्धों में असिधाराओं पर पैर रख कर मृत्यु का आलिंगन करने के लिए उतावले रहने वाले भी (विना मौत आये) नहीं मरते ।

युद्ध मे हर्षित होने वाला रावत करणसिंह का पुत्र जोरदार शब्दो मे यह कहता है कि जो शस्त्र-प्रहारों से भिड़ने से किनारा नहीं करते, और कट कर गिर पड़ने को प्रस्तुत रहते है, वे कभी नहीं मरते ।

कर्मध्वज (राठौड़) की जीभ निरतर यही उच्चारित करती है कि परमात्मा ने जितने सांस-उसांस गिन कर दिये है, वे यत्न करने पर भी नहीं वढाये जा सकते, और न शस्त्रों के घावों से घटाये ही जा सकते हैं ।

चाहे कोई जहर खाले, अफीम लेले अथवा अस्थिपञ्जरों से भरे हुए श्मसानों मे घर वना कर रहने लग जाये, जब तक जीना है तव तक उसे कोई भय नहीं, पर मृत्यु के निश्चित दिन उसे अवश्य मरना होगा ।

हे वीरो, युद्ध को देख कर टलो मत, तलवारों की वौछारों मे अपने शरीर को नहलाओ। यत्न करने से ही शरीर को भय उत्पन्न होता है, और आगे वढ कर देह का भक्ष्य देने से तो डाकिन भी नहीं लेती ।

गीत
राठौड़ सहसमल रौ कह्यौ

बेढक बेढका सहसौ इम बाचै
धीरज लेख प्रमाण धरै
धकचाळा धारा पग धरता
मरता फिरै सो नाह मरै

रीझलजुध करणावत रावत
घणा अबीठा सबद घडै
ओझड झटा टळै नह अडता
झडता फिरै सो नाह झडै

सास उसास मेल्हिया साहब
रसणा कमधज ओम रटै
बधै नही जतनां बाधाया
घाव घटाया नाह घटै

खावै जहर अमल पण चाखै
करक मुसाणा मढी करै
जीवै नर जतरै नह जोखम
मरण तणौ दिन अवस मरै

रोळौ देख टळौ मत रावत
दुजडा झडा झिकोळो देह
जतन किया उपजै तन जोखौ
लै लै कियां न डाकण लेह

दातार की प्रशंसा का गीत

दुर्ग तोड़ना आसान है, बिना आड़ के लड़ना आसान है, शत्रुओं को मारना और स्वय मरना भी आसान है, पर हे सिंहों के सिंह विजयसिंह ! एक बात बड़ी कठिन है कि दान देने का काम कैसे बन पड़े !

घोड़े पर सवार होना, मँहगे इत्र लगाना, बहुमूल्य वस्त्र पहिनना और सुमधुर तांत्रिक वाद्यों से सरस तान सुनना—ये सब सरल हैं, पर हे दूसरे भीमसिंह, दातार के बिना दान देने के प्रबल धक्के को कौन सहे !

समुद्र को पार करना आसान है, अहंकार धारण करना आसान है, द्रव्य को एक ओर गाड़ कर रखना आसान है और अपार ससार का अत पा लेना भी आसान है, लेकिन दानवीरता की विकट घाटियों को पार करना बहुत कठिन है।

पृथ्वी पर गगनचुम्बी उज्ज्वल महल बनाना तथा शत्रुओं को चमकती तलवारों की ज्वालाओं से जलाना आसान है, पर हे केसरीसिंह के पौत्र, प्रसन्नतापूर्वक दान दे-दे कर पृथ्वी पर अमर रहने की कला बहुत कठिन है।

गीत दातार री प्रसंसा रौ

सहल तोड़बो कोट बिन ओट लडबो सहल
मारबो बैरिया अनै मरबौ
सीह रा सीह विजपाळ क्यूं कर समझै
कठण हिक बात आचार करबौ

पमग आरोह मूंघा अतर पहरबौ
तालि रस सरस सुणबौ सरस तान
बिजाई भीम कुण सहै दाता बिना
देण रौ बहौत करडौ थकौ दान

समंद तरबौ अनै गरब धरबौ सहल
दरब धरबौ सहल परा दाटौ
आमवै छेह संसार अणपार रौ
घणो दातार रौ विकट घाटौ

जमी असमान रचबौ महल ऊजळा
दोखिया बीजळा झळा दहबौ
केहरीहरा या घणी मुसकल कळा
रीझ करि करि इळा अमर रहबौ



गीतों की तारीफ का गीत

ईसर राठौड का कहा हुआ

राठौड़ ईसर राज्यसिंहासन में समान अधिपतियों एवं रीझ कर दान देने का शौक रखने वाले प्रबल दानियों से इस प्रकार पूछता है कि आयु के इन ढलते दिनों मे इमारतें खडी करना अच्छा है अथवा यश के गीत गवाना अच्छा है।

कल्याण का पुत्र राठौड़ अपनी बराबरी वालों से यह कह कर अपनी अभिलाषा प्रकट करता है कि इमारतों के गवाक्ष तो टूट कर गिर जाते हैं पर यश-गीतों के झरोखे नहीं टूटते।

राठौड़ कहता है, भूपतियो, सुनो, पत्थरों को तराश कर बनाई हुई छः छः गज वाली कलियां, कगूरे और छज्जे सभी गिर कर पत्थरों का ढेर बन जाते है, पर कीर्त्ति के महलों की कारीगरी अमर रहती है।

ईसर राजवंशों के प्रमुखों और कुल-मुकुटों से इस प्रकार के वचन कहता है कि महलों के झरोखे गिर पड़ेंगे, पर, राठौड़ कहता है कि यशगीत अमर रहेंगे।

गीत भीतां री तारीफ रौ
ईसर राठौड़ रौ कह्यौ

इम पूछै पाट पटंतर ईसर
मोजै सचूंप अतमला
कळतै थकै दिहाडै कमधज
भीत भली कै गीत भला

समपति कहै कलियाण समोभ्रम
नवसहसो दाखै इम नोख
भीतां तणा गोखडा भाजै
गीता तणा न भांजै गोख

छह गज कळी कागरा छाजा
पड़ियां ढगल हुवै पाखाण
भाखै कमध सुणो भूपतियां
कीरत महल अमर कमठाण

ओहा वयण दाखवै ईसर
माझी वस तणा कुळमौड़
झड़सी महला तणा झरोखा
रहसी गीत कहै राठौड

डिंगल की तरीफ का गीत

क्या तो व्याकरण है और क्या भाखा (व्रजभाषा) तथा प्राकृत ही। सस्कृत के साथ-साथ भी क्यों फिरते हो ! लाखों की जागीरों के ठाकुरों के मस्तक तो डिंगल गीतों के चमत्कार के सामने झुकते हैं।

यह (डिंगल) नायिका-भेद के पाठों से नहीं सीखी जाती। जहां लायक व्यक्ति (सद्गुरु) के हाथ लगते हैं वहीं इसकी प्राप्ति हो सकती है। इस पर भी उन विरुदप्राप्त कवियों में से वचन-बाणों की चोट करना तो कोई सुकवि ही जानता है।

सीखने से भी जिसका भेद तुरत समझ में नहीं आता, और जिसे देखकर चित्त विचार मे पड़ जाता है, ऐसी इस डिंगल वाणी के जौहर के पीछे अनेक बातों के जानकार कवि भी घमड छोड़ कर फिरते हैं।

यह तो योगमाया की भक्ति करने से वे ही व्यक्ति सीख सकते हैं जो पृथ्वी पर इसके विकट मार्ग को देखकर मुड़ न जायें। इसकी युक्तिपूर्ण उक्तियों के विषम प्रकारों को तो कोई-कोई वचनसिद्ध शक्तिपुत्र (चारण) ही जानते हैं।

गीत डिंगल री तारीफ रौ

किसू व्याकरण अवर भाखा अनैं पराक्रत
संसक्रित तणौ क्यू फिरै सागै
लाख रा ठाकरां तणा माथा लुळै
आखरा तणा गजबोह आगै

नायका पाठडा हूंत आवै नही
लायका छरा री अतर लाहा
कोइक विरदायकां माय जाणै सकव
वायका सायका तणी बाहा

तिकण रौ सीखियां भेद नावै तुरत
सुरत पण पेखिया पडै सासै
बिधक घण जाण रा माण छाडे बहै
बाण रा जहूरा तणै वासै

जोगमाया तणी भगति कीधा जुडै
प्रथी सिर मुडै नह विकट पैंडा
सगत रा पुत्र जाणै कोइक वचनसिध
उगत री जुगत रा घाट अैंडा

चारण कवियों की प्रशंसा का गीत

सागरजी जैसे सिद्ध, हुक्मीचंद खिड़िया जैसे कवीश्वर और नृपति महेशदास के पौत्र जैसे बुद्धिमान इन चार पदार्थ तुल्य उत्तम चारणों को भगवान ने हमसे वापिस ले लिया।

अलूजी कविया जैसे संत, जगाजी खिड़िया और महादानजी महड़ू जैसे सुकवि तथा चारण जाति के शृंगाररूप भादा (किसनाजी अथवा अमरजी) जैसे अमूल्य रत्नों के समान चारण कवियों को हमें देकर भी, हे करतार ! तुमने किस अपराध के कारण वापिस ले लिया !

प्राणरहित सुन्दर देह की भांति चारण समाज इनके बिना सूना सा रह गया है। हे देव, तुमने प्रेमपूर्वक चारण कवियों का पोषण किया, पर एक बार इनको हमें देकर फिर भले (व्यर्थ) छीना !

जब ये कवि धर्म-धारण कर सत्य वचन कहते तो राजा लोग विनयपूर्वक हाथ जोड़ते थे। हे हरि, अब चारण समाज मजाकों का आदि हो जायेगा और चारण कवि हीनता को प्राप्त हो जायेंगे।

गीत चारण कवियां री प्रसंसा रौ

सागर सिद्ध कवेसर हुकमो
नृपति महेसहरो बुधवान
चार पदारथ आछा चारण
उरा लिया पाछा भगवान

कवियो सत खिड़ियो महड कवि
गिणता भादो वरण सिगार
दूकी रतन अमोलक दीधा
किसैं गुनह लीधा करतार

आ बिन बरण रह गयो ऊणो
जिण विध सुबप बिहूणो जीव
पाता प्रोत करे तैं पोस्या
दे अर खोस्या भला दईव

आसंग धरम रोडता जद औ
हुय नृप नरम जोडता हाथ
हरि अब बरण मसकर्या हिलसी
पूण मही मिलसी कवि पात

चारणों की प्रशंसा का गीत

सीकर के रावराजा देवीसिंह का कहा हुआ

राव, राणा आदि उपाधिधारी राजाओं तथा दूसरे सारे ससार को कछवाहा देवीसिंह यह बात कहता है कि पृथ्वी पर नाम, सुयश और बड़ाई रूपक जोड़ने वालों (कवियों) के ही कारण रहते हैं।

(ये कवि) अकर्मण्य लोगों को वचन-कोड़ों से मारते हैं। (इनके सामने) कंजूस बनने से काम नहीं चलता। इन्हें आठों पहर खूब द्रव्य लुटाने से ही नवों खडों में नाम स्थायी रह पाता है।

चद्रसिह का पुत्र (देवीसिह) कहता है कि हे यश की इच्छा रखने वालो, आओ, उमगसहित दान का आचरण करो ! इन दान के लोभियों (चारण कवियों) से खूब स्नेह करो और पृथ्वी पर अपार यश प्राप्त करो।

किसी ने सच्चे हृदय से ही यह बात कही है कि कवीश्वर अवश्य ही जगदीश्वर के समान हैं, क्योंकि ये मनुष्यों के जीवन और मरण को संसार में अमर बना देते हैं, जिसके साक्षी सूरज, इन्द्र और चांद हैं।

इनको दान मे दिया हुआ धन व्यर्थ नहीं जाता क्योंकि ये कीर्त्ति का बखान कर उसे समुद्र पार तक पहुँचा देते हैं। जो ठाकुर चारण कवि का चाकर रहता है वही संसार में श्रेष्ठ है।

गीत चारणां री प्रसंसा रो
सीकर रावराजा देवीसिंघ रौ कह्यौ

सुपहा राव राण अवर जग सारै
कूरम देवो बात कहै
प्रथमी नाम सुजस मोटापण
रूपगजोड़ा हूत रहै

माठा बचन कोरडां मारै
काठां हुवां सरै नह काम
आठू पहर सुद्रब अूधमिया
नवखड सिरै अूबरै नाम

चदसुजाव कथै बडचावो
आवो उमग करो आचार
लोभ्या हूंत हेत घण लावो
प्रथवी जस पावो अणपार

जीवण मरण अमर राखै जग
साखी सूरज इंद्र सस
साचै हेत कहीज कवेसुर
ईसर रै जोड़ै अवस

ज्या दीधो धन अहळ न जावै
पांगी दाखै समंद परै
चारण तणो रहै जो चाकर
सो ठाकर ससार सरै

पाबूजी राठौड का गीत

आसिया वाकीदास का कहा हुआ

जो पहिले विवाह-मण्डप में भांवर फिरने के लोभ में स्नेह से भीगा था, वही बाद में युद्ध की वाहवाही के लोभ मे महाक्रोध से युक्त हुआ। उस रसिक ने जिस वागे को पहन कर राजकुमारी का पाणिग्रहण किया, उसी वागे से उसने कवारी (बिना किसी से लड़ी हुई) सेना का वरण किया (युद्ध किया)।

जहा विवाहोत्सव के मगल गीत गाये जा रहे थे, वहीं युद्ध का वीर-गर्जन हुआ। जो राठौड़ विवाह की खुशी में दानादि देने को प्रसन्न हुआ था, वही युद्ध के लिए क्रोधित हो गया। जिसके शिरोभूषण पर पुष्प-वर्षा की सघन बौछारें हुई थीं, उसी पर भयंकर शस्त्र-वर्षा हुई।

वह अपनी कथा अक्षय करने को भले ही 'काळमी' नामक घोड़ी पर सवार हुआ। वचन-पालन के अपने विरुद को उसने भुजाओं पर धारण किया। पवारों के घर पर जो वरमाला से पूजित हुआ था, वही रणक्षेत्र में शत्रुओं की तलवारों से पूजित हुआ।

चारणों की गायों की रक्षार्थ चढ़ कर, खीचियों के दलों को खण्ड खण्ड करके, शत्रुओं को नष्ट करने वाला वह वीर पावू रणभूमि रूपी सेज पर सो गया। उसका यश तब तक रहेगा जब तक गिरनार और आबू पर्वत इस पृथ्वी पर स्थित हैं।

गीत राठौड़ पाबूजी धांधलौत रौ
आसिया बांकीदास रौ कह्यौ

प्रथम नेह भीनौ महा क्रोध भीनौ पछै
लाभ चमरी समर झोक लागै
रायकवरी वरी जेण वागै रसिक
वरी घड कवारी तेण वागै

हुवे मगळ धमळ दमगळ वीरहक
रग तूठौ कमध जग रूठौ
सघण वूठौ कुसुम वोह जिण मौड सिर
विखम उण मौड सिर लोह वूठौ

करण अखियात चढियौ भला काळमी
निवाहण वैण भुज बाधियो नेत
पवारा सदन वरमाळ सू पूजियौ
खळां किरमाळ सू पूजियौ खेत

सूर वाहर चढे चारणा सुरहरी
इतै जस जितै गिरनार आबू
विहड खळ खीचिया तणा दळ विभाडे
पौढियौ सेज रणभोम पाबू

जैसलमेर के रावल दुर्जनसाल का गीत

सादू हूपा का कहा हुआ

देखो, जब युद्ध का नगाड़ा बजा तो विकराल भाटी वीर (दुर्जनसाल) युद्ध में जुट पड़ा। भगवती का पति (शिव) पैदल ही उसका सिर लेने के लिए पीछे-पीछे फिर रहा है।

(उसकी देह से) असीम क्षत्रियत्व उफन पड़ा (और उसने) शस्त्र चलाकर दक्षिणी सैन्यदल का संहार कर दिया। भूतेश्वर (शिव) बोले—हे बडे दानी, दुर्जन, (अब तो) तुम्हारा मस्तक देदो।

अस्थिर मति वाले कायर भाग गए, (लेकिन) खूमाण का पुत्र (दुर्जनसाल) अब भी युद्ध-स्थल में पाठोच्चारण करता हुआ सच्चे दिल से लड़ रहा है। शिवदेव नाचते हुए उसका सिर माग रहे हैं।

सेना रूपी बादलों में बिजलियां सी तलवारें चमक रही हैं और वर्षा की भांति बाणों की ध्वनि सुनाई पड़ रही है। काशी में निवास करने वाले अविनाशी (शिव) एक पैर के सहारे (बड़ी लगन से) उसके सिर की याचना कर रहे हैं।

तलवारों की पैनी धारें (उसके सिरत्राण से टकरा कर) झड़-झड़ कर पड़ रही हैं। पुकारते ही सहायतार्थ दौड़ने वाले (दुर्जनसाल) से महेश कह रहे हैं कि हे दुर्ग को दृढता प्रदान

गीत जैसलमेर रावल दुरजणमाल रौ
सादू हूपा रौ कहियौ

भाळौ जुध जूट कराळौ भाटी
तरमाळौ घुरियौ तिण वार
लार फिरै पाळौ सिर लेवा
भगवत्ती वाळौ भरतार

हाथ चलाय दखण दळ हणिया
अ‍ूफणिया खत्रवट अणपार
अणिया दे माथौ भूतेसर
दुरजणिया मोटा दातार

काचै मतै गया उड कायर
आरण बाचै पाठ अजेव
सुत खूमाण लडै दिल साचै
सिर जाचै नाचै सिवदेव

तेगा दळ बादळ तडिता सी
बरखा सी सर सोक बज
अेकण पगवाणू अविनासी
कासीबासी कमळ कज

खर-खर पडै बाढ रा खागा
बदै महेस चाढ रा बात

करने वाले माढाधिपति- आपका सिर घावों से परिपूर्ण हो गया है, (अब तो) इसे देदो !

(उस) योद्धार के प्रहारों को कौन सहन करे ! शंकर (उसे रिझाने के लिए) सैकड़ों लटके (हाव भाव) कर रहे हैं (और कहते हैं कि) जगन्नाथ के अटके की भांति टुकड़े-टुकडे हो जाने पर (तुम्हारा सिर) मेरे क्या काम आयेगा !

शिव कह रहे हैं कि हे भक्त, (तुम्हारे पीछे) फिरते-फिरते मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है, थोड़ा मेरा कहना मानो ! हे वीर, मै तुम्हारे घोडे के साथ-साथ दौड़ता हुआ थक गया हूँ, (अब तो) मेरी सुधि ले !

शंभूनाथ ने जब बार-बार—'हे अजय वीर, तेरा भला हो'—कहा (कह कर याचना की) (तब कहीं) यह जैसलमेर के वीर का सिर, मुण्डमाला मे सुमेरु की भाति सजने वाला, प्राप्त हुआ।

उसका जीवात्मा वैकुण्ठ मे जा बसा। उसका अपरिमित यश दसों दिशाओं में व्याप्त हो गया। वह रणरसिक (लड़ता हुआ) टुकड़े-टुकड़े होकर कट गया और त्रिपुरारि (शिव) ताली बजा कर हँस पड़े।

अब तौ कोटगाढ रा आपौ
छक धू गयौ माढ 'रा छात

झेलै कवरा जोधहर झटका
सकर लटका करै सत
हर-अटका जोड़ै हुय जासी
आसी किरा बटका अरथ

फिर फिर भगत कहै हर फोड़ा
कहिया थोडा मूझ कर
दे थाकौ घोड़ा संग दौड़ा
खोडा लै म्हारी खबर

सभूनाथ कह्यौ सौ बेरा
भला होय तेरा अणभग
मळियौ माळ सुमेरां माफक
ओ जेसलमेरा उतबग

बसियौ जाय हंस वैकुंठा
पूंगौ दसदसियौ अरापार
रज रज सेस हुवौ ररारसियौ
ताळी दे हसियौ त्रिपुरार

महाराणा सागा का गीत

बारठ जमणा का कहा हुआ

स्वय परमेश्वर श्रीकृष्ण ने सौ बार जरासध के सामने रणविमुख होने के दाव दिये थे। (लेकिन बाद में) मधुसूदन (कृष्ण) ने असुर (जरासध) के दावों को अलग करके, घात लगा कर उसे मार डाला था।

पार्थ (अर्जुन) एक बार हस्तिनापुर मे अपनी स्त्री पर हाथ पड़ने पर भी (द्रौपदी के चीर-हरण के समय) हट गया था। लेकिन बाद में दुर्योधन ने जो किया उसे देख कर अर्जुन ने उसमें वह कैसी की !

एक बार तो दस सिरो वाला मन्दबुद्धि रावण राम की स्त्री (सीता) को हर ले गया, लेकिन उन्हीं जगनायक भगवान (रामचद्र) ने पानी पर पत्थर तैरा दिए।

तूने तो ससार मे एक ही युद्ध हारा है, इसी पर हृदय मे कायरता क्यों लाता है ! हे सागा, मालदे के वैर का प्रतिशोध मांगने वाला तू असुरों के हृदय में खटक रहा है।

गीत महाराणा सांगा रौ

बारठ जमणा रौ कह्यौ

सत वार जरासध आगळ श्रीरग
विमहा टीकम दीध वग
मेल्हि घात मारे मधुसूदन
असुर घात नाखे अळग

पारथ हेकरसा हथणापुर
हटियौ त्रिया पडंता हाथ
देख जका दुरजोधन कीधी
पछै तका कीधी कांइ पाथ

इकरा राम तणी तिय रावण
मद हरेगौ दह कमळ
टीकम सोइज पथर तारिया
जगनायक ऊपरा जळ

अेक राड भव माह अवत्थी
औरस आणै केम उर
माल तणा केवा कज मागण
सागण तूं सालै असुर

बीकानेर के राठौड अमरसिंह का गीत

बाई पदमा सादू का कहा हुआ

तू सदा (शत्रुओं के) शहरों को लूटता और (उनके) देशों पर विजय प्राप्त करता था। हे वीर, तुम्हारी वह कमाई (आज) कठिन हो गई है। हे जैतसी के पौत्र, वंश को उज्ज्वल करने वाले कुल-शृंगार, अमरसिंह, तलवार उठा, अकबर की फौज आ गई है।

हे बीका के वंशज, सिंह तुल्य पराक्रमी वीर, तू भूमडल में (शत्रुओं की) भूमि पर आक्रमण करता था। हे अजेय, शत्रुओं का समूह तुम्हारे सिर पर आ गया है। हे कल्याणमल के पुत्र, अब तो नींद से उठ ! हे परम वीर, भुजाओं में खड्ग सभाल कर आकाश से जा लग !

हे प्रत्यक्ष में शत्रुओं को कुचल देने वाले शक्तिशाली वीर, अरवखां तोपों मे गोले भर कर आसमान से लगा (गर्वोन्नत होकर) आ पहुँचा है। हे निडर वीर राठौड़, अब तो नींद हटा ! हे जैतसी के पौत्र, प्रबल होकर अपना पराक्रम दिखा !

गीत बीकानेर रा राठौड़ अमरसिंघ रौ
वाई पदमा सांदू रौ कह्यौ

सहर लूटतौ सदा तू देस करतौ सरद
कहर नर पडी थारी कमाई
उजागर झाल खग जैतहर आभरण
अमर अकबर तणी फौज आई

बीकहर सीह धर मार करतौ वसू
अभग अरव्रंद तो सोस आया
लाग गयणाग भुज तोल खग लकाळा
जाग हो जाग कलियाण जाया

गोळ भर सबळ नर प्रगट अरगाहणा
अरबखा आवियौ लाग असमाण
निवारौ नीद कमधज अबै निडर नर
प्रबळ हुय जैतहर दाखवौ पाण

उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह का गीत

बोगसा गोरधन का कहा हुआ

मानसिंह (कछवाहा) के हाथी के अग्रभाग में, सैनिकों के झुण्ड को लिए, हाथी की तरह वह खड़ा था। उस समय प्रताप की अचूक तलवार मुगल बहलोलखां के मस्तक पर बही।

उदयसिंह के पुत्र, चेटक के सवार ने अत्यधिक घमंडी मिरजा पर देह को बहरने वाली (तलवार) का, हाथ के जोर से, (ऐसा) प्रहार किया (मानो) पहाड़ की चोटी पर बिजली पड़ी हो।

जब शूरवीर वीरों के वीरत्व पर प्रसन्न हो रहे थे, बड़े बड़े पहाड़ रक्त से भीग रहे थे और दूसरे कायर राजा युद्ध से भाग रहे थे, तब यवन (बहलोलखा) के सामने आते ही (प्रताप ने) तलवार का प्रहार किया, जो साबुन को काट देने वाली तांत की तरह (उसके शरीर को) काट गई।

मौका पाकर उस वीर की तलवार उस उजबक (बहलोलखा) पर ऐसी बही जिससे उसका सिरत्राण कट कर सिर कटा, कवच के टुकड़े-टुकड़े होकर अंग कटे और घोड़े की पाखर (लौहनिर्मित जाली) कट कर रक्त से लाल रंगा घोड़ा भी कट गया। राणा की इस हथवाह (प्रहार करने की खूबी) की हिन्दू-मुसलमान दोनों (अथवा दोनों दलों) ने सराहना की।

गीत उदयपुर महाराणा प्रतापसिंघ रौ
बोगसा गोरधन रौ कह्यौ

गयद मान रै मुहर ऊभौ हुतौ दुरद गत
सिलहपोसा तणा जूथ साथै
तद वही रूक अणचूक पातल तणी
मुगल बहलोलखा तणै माथै

तणै भ्रम ऊद असवार चेटक तणौ
घणां मगरूर बहरार घट की
आ चरै जोर मिरजा तणै आछटी
भाचरै चाचरै बीज भटकी

सूरतन रीझतां भोजतां सैलगुर
पहा अन दीजतां कदम पाछै
दात चढता जवन सीस पछटी दुजड
तांत साबण ज्युंही गई आछे

वीर अवसाण केवाण उजबक वहे
राण हथवाह दुय राह रटियौ
कट झलम सीस बगतर बरग अंग कटे
कटे पाखर सुरग तुरंग कटियौ

जोधपुर के महाराजा गजसिंह का गीत

मोतीसर चतरा का कहा हुआ

क्रोधपूर्ण नेत्रों से चारों दिशाओं के युद्ध में सलग्न रह कर तू ने सातों समुद्रों का मंथन कर डाला। सभी राजा तुम्हारी ओट मे (अधीनस्थ) हैं, फिर आज तू किस पर तलवार उठा रहा है ?

मानमर्दित होकर देवड़ा (सिरोही के राजा) तुझे किश्तों द्वारा दण्ड अदा कर रहे हैं। भाटी (जैसलमेर के राजा) अपनी लड़की का विवाह तुमसे करके सबधी बन गये हैं। सभी (राजाओं) ने तुमसे मिल कर संधि करली है, फिर हे गजसिंह, तू किस पर अपना बल प्रकट कर रहा है ?

पूर्व और पश्चिम की समुद्र पार तक की पृथ्वी तथा दक्षिण-सभी जगहों की सेनायें (सैन्य बल) और बारूद समाप्त हो गई है। तुम्हारे पराक्रम के समान ही तुम्हारा आतंक (उन पर व्याप्त हो गया) है। फिर भी हे मारू (मरुधरा के राजा), तू किस पर मत्सर कर रहा है ?

तुम्हारा यश सातों समुद्रों के तटों तक पहुँच गया है, फिर भी ये रणवाद्य किसके लिए बजाये जा रहे हैं ? तूने तो सुलतानों से भी बढ़-चढ़ कर (प्रतिस्पर्धा कर) उन्हें वशवर्ती कर लिया है, फिर हे राजा, अब किस पर क्रोध कर रहे हो ?

गीत जोधपुर महाराजा गजसिंघ रौ
मोतीसर चतरा रौ कह्यौ

चख लागौ थकौ चहू दिस चोळै
हीलोहळ सातूं हीलोळै
अधपत सको ताहरै ओलै
तू खग आज किणी सिर तोलै

खड देवडा भरै डड खधी
सगपण कर भाटी सनबधी
सारा मिलै तुझ सू सधी
बळ किण सिर दाखै गजबधी

पूरब पिछम धरा दध पारू
दिखण तणौ खूटौ बळ दारू
संकत राज तणौ तो सारू
मछर धरै किण ऊपर मारू

बाजै वळै किणी सिर बाजा
पूगौ जस सातू दध पाजा
सुरताण सू बध बध साजा
रोस धरै किण ऊपर राजा

नागौर के राव अमरसिंह का गीत

उत्तम विरुदों को जीतने वाले सुभट अमरसिंह ने आगरे में अपने सुयश की कथा को चिरस्थायी बना दिया। उस राठौड़ की कटार ने पांच हजार के मनसब वाले मुगल (सलाबतखां) को धराशायी कर दिया।

दिल्ली की मृगनयनी शाहजादियां (अपने मृत पतियों की) कब्रों पर बार-बार फिरती हुई इस प्रकार विलाप कर रही हैं जैसे वर्षा ऋतु मे मोर कूक रहे हों।

दसों परिचारिकाये उनके पास है, फिर भी वे चपई वर्ण के चीर पहनी हुई चद्रमुखियां नि श्वास छोड रही हैं और पूछ रही हैं कि हमारे वे श्रेष्ठ पति कहां है।

आंखों में काजल आजे हुए, आशा-विलुब्ध होकर झरोखों मे खड़ी ये मुसलमानों की सुन्दरी पत्नियां ढलती रात मे पपीहा की तरह अपने प्रियतमों को पुकार रही है।



गीत नागौर रा राव अमरसिंघ रौ

अमर आगरै अखियात उवारी
भड़ जीपण व्रद भारी
पचहजारी मुगल पाडियौ
कमधज तणी कटारी

झुरै रै मिरगानैणी झुरै
मेह तणी रुत मोरां
जोगणपीठ दियै सहजादी
घूमरि ऊपर घोरां

दस दस पासि खवासी दासी
चपक वरण पहरियां चीर
ससिवदनी नांखै सिसकारा
मीया कठै हमारा मीर

आस अळूझ गोखडै ऊभी
कोया काजळ कीबी
गळती रात पुकारै गोरी
वाबहिया ज्यू बीबी

जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह की हाडी रानी जसमादे का गीत

बादशाह से हुए युद्ध में दिन के समय में भी अ धकार छा गया। सारी बादशाही में खलबली मच गई। (ऐसी अवस्था में) जसवतसिह की प्रियतमा हाडी रानी हाथी पर चढ कर (अपने सैनिकों को) आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती हुई लड़ रही है।

दिन उगते ही यवन (मुसलमान) बहुत से वीर सैनिको को साथ में लेकर चढ आये हैं। लेकिन औरगजेब आगे कैसे बढ़ सकता है (हाडी रानी द्वारा अवरुद्ध होने के कारण), उसे तो युद्ध से भागा हुआ ही सुनेगे।

भावसिह जैसे पराक्रमी जिसके भाई और वीर जसवतसिह जैसे जिसके पति हैं वह (बूंदी के राव) शत्रुसाल की लड़की चगत्तों (मुगलों) से लड़ने के लिए प्रहार करती हुई तलवार बजा रही है।

जिसके ससुराल और पीहर के दोनों पक्ष निष्कलक है और (राव) अमरसिंह जिसके ज्येष्ट तथा (राव) शत्रुसाल जिसके पिता हैं, उस रानी ने अपने शौर्य से हिंदुस्थान के यज्ञोपवीत की भांति पवित्र, धर्म की रक्षा कर ली।

गीत जोधपुर महाराजा जसवंतसिंघ री
हाडी राणी जसमादे रौ

दिन माचै दूंद खूंदवै दमगळ
पतसाही मे रोळ पडै
हाथी चढ हलकारै हाडी
लाडी जसवंत तणी लडै

आगे दीह जवन चढ आवै
सुहडा भडा लिया बहु साथ
औरंगसाह धसै किम आघौ
भागौ ही सुणजै भाराथ

भाआू जिसा अरोडा भाई
भड जसवत जेहा भरतार
चिगथा लड़ण चलावै चोटा
सत्रसल सुता बजावै सार

पख दहुं निृमळ सासरौ पीहर
जेठ अमर सत्रसाल जणौ
राणी पाणी धरम राखियौ
तागौ हिंदुसथान तणौ

राठौड दुर्गादास का गीत

जब रणबांकुरे योद्धा युद्ध में लीन हो गए तो पुरानी दिल्ली की शाहजादियां (यों) कहने लगीं कि अब औरंगशाह घर (महलों में) कैसे आयेगा, उसके (सारे) मार्ग तो दुर्गादास ने रोक लिए हैं।

(बादशाह की) बेगमों के न तो हार पहिनने और न चीर धारण करने का ही शौक रह गया है। वे कोयल के से स्वरों में रात दिन यही कहती है कि हमारा पति शाहंशाह रंगमहलों में नहीं आ पाता, (क्योंकि) आसकरण का वीर पुत्र (दुर्गादास) उसका मार्ग रोके हुए है।

शत्रु से अपनी (छीनी हुई) धरती (लौटा) लेने के लिए वह युद्ध मे लगा हुआ है, और तलवार लेकर (शत्रु के) बल को खड-खड कर रहा है। वह परम पराक्रमी, नींबा का पौत्र, बादशाह के मार्ग को छोड़ नहीं रहा है ।

अपार आंसू गिराती हुई (विरहिणी) मुगलानियां मुगलों (अपने पतियो) के लिए विलाप कर रही हैं, (और कहती हैं) कि हे मारू (मरुधरा के वीर) दुर्गादास, हे हिन्दू, हमारे पतियों को घरों की ओर भेज।

गीत राठौड़ दुरगादास रौ

जूनी ढेलडी रे जपै सहजादी
बाका जोध विळूधा
औरगसाह घरा किम आवै
राह दुरग्गौ रूंधा

हार न चोर न हूस हुरम्मां
वाचै कोकल वाणी
नाह साह रंगमहल न आवै
आडौ भड आसाणी

लागौ वेध खेद धर लेवा
खाग लिया बळ खांडै
असपत रा मारग अडपायत
नीबाहरौ न छांडै

मुगला काज झुरै मुगलाणी
आसू नाख अपारा
मारू दुरग घरां दिस मोकळ
हिंदू साम हमारा

जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह का गीत

दधवाडिया द्वारकादास का कहा हुआ

दिल्ली के दरवाजों से लगा कर, इधर द्वारिका के समुद्र तक की सारी पृथ्वी रूपी यह नायिका स्नेहरहित होकर (किसी का भी) आश्वासन नहीं मानती थी। पर अब अजीतसिंह जैसे पराक्रमी पति को देख कर वह अपने अन्य अनेक पतियों (राजाओं) को छोड़ कर पतिव्रता हो गई है।

यह पृथ्वी रूपी नायिका अपने स्वामियों के मत्सर की परवाह नहीं करती थी, उनके क्रोधित वीरों और घोड़ों का घमंड (इसके आगे) चूर-चूर हो गया था। पर अब अजीतसिंह के कठोर शासन के आगे वह दूसरे व्यक्तियों (राजाओं) की ओर देखती तक नहीं है।

बड़े बोल बोलने वालों (दंभी राजाओं) को छिटका कर, बलिष्ठ व्यक्तियों (पराक्रमी राजाओं) के गले में अपने सुन्दर हाथ डाले वह केश खोले फिरती थी। वही पृथ्वी जसवनसिंह के बलशाली और चतुर पुत्र के आगे, सब नखरे छोड़ कर, नतमस्तक हो, आज्ञानुवर्तिनी हो गई है।

हे प्रियतमा (पृथ्वी) के सबल बल का हरण करने वाले, तूने इसके पहाड़ रूपी पयोधरों का मर्दन कर इसे सीधी (गर्वहीन) बना दिया है। हौंस से उकसती हुई आपकी अश्वारोहिणी द्वारा रौंधी हुई यह पृथ्वी अब आपकी अर्धांगिनी हो गई है।

गीत जोधपुर महाराजा अजीतसिंघ रौ

दधवाड़िया द्वारकादास रौ कह्यौ

लगा दिली फळसा अठी द्वारका समद लग
दिलासा न धारै धरा दुरखी
जोरवर जोय भरतार अगजीत नू
पत घणा छाड ह्वी हेकपुरखी

मछर माट्या तणौ न धारै मेदनी
भिरड घोडा भड़ां गुमर भागा
नर बियां हूंत धारै नही निजारा
अजा रा अकारा अमल आगा

बडमुखां नांख छूटा पटा बहंती
सकस बर घातियां हाथ सखरा
जसा रा धूत मजबूत आगळ जमी
नमी हुकमी हुई छोड नखरा

पयोधर पहाड मसळे करी पाधरी
लाडली तणा बळ सबळ लैणा
रूंदळी दळै अूकस हमस रैवतां
राज री हुई कसपाण रैणा

यह पृथ्वी रूपी नायिका सारा वांकपन (भंगिमा) छोड़ कर नेत्र सीधे (तिरछे नहीं) रखती हुई, द्वितीय मालदे (अजीतसिंह) से मिजाज नहीं करती है। पड़ोसियों से छेड़छाड़ नहीं करती हुई यह राठौड़ (अजीतसिंह) से भोगविलास करती है।

इस प्रकार यह पृथ्वी रूपी नायिका अब घूंघट निकाल कर तुम्हारी पत्नी बन गई है और चखों से नखों तक सोलह शृंगार सजा रही है। पति राजराजेश्वर अजीतसिंह और उपभोग्या वसुंधरा की यह जोड़ी अमर रहे!

मालदे दूसरा हूंत न धरै मगज
सरब तज बांक चख राख समळा
करंती नही पाडोसियां ढचरका
कमध सू लचरका लियै कमळा

हुई इम वैर इळ गूघटो काढ हव
सभै चख नखां बिच सोळ सिरणगार
राजराजेसवर जोड़ कायम रहो
भोगवरण धरा अगजीत भरतार

खडेला के राजा सुजानसिंह का गीत

आज जयसिंह (जयपुर) और जसवतसिंह (जोधपुर) नहीं हैं तथा न जगतसिंह (उदयपुर) ही है। दूसरे सब क्षत्रिय भी पीठ दिखा गये हैं। पृथ्वी पर मदिर ढहाया जा रहा है और (देव) सिंहासन उलटा जा रहा है। मोहन (भगवान्) पुकार रहे हैं कि हे सुजानसिंह, (ऐसे सकट के समय मेरी सहायतार्थ) आओ !

माधोसिंह के पुत्र (जयसिंह), गजसिंह के पुत्र (जसवतसिंह) और करणसिंह के पुत्र (जगतसिंह) तो मोक्ष को प्राप्त हो गए। दूसरे (सभी) राजा धर्म की मर्यादा को छोड़ रहे हैं। ऐसे सकट के समय मुझ परमेश्वर की लाज, हे दूसरे सेखा, तुझ से ही रहेगी। (अत) अब इसे रख !

मानसिंह के पौत्र (जयसिंह), मालदेव के पौत्र (जसवतसिंह) और अमरसिंह के पौत्र (जगतसिंह) ने तो विश्राम कर लिया (मर गए)। दूसरे राजा लोग (भी) भयत्रस्त होकर नहीं आये। आज मै अकेला हूँ और शत्रुओं का दल चढ़ आया है। हे श्यामसिंह के पुत्र, इनसे लडने के लिए पधारो !

पुकार सुनते ही सेहरा बॉध कर (मृत्यु का वरण करने के लिए दूल्हा बन कर) वह हँस कर प्रफुल्लित हो उठा। जैसी प्रीति (भगवान के प्रति) उसकी थी, परखने पर वह वैसा ही निकला। बादशाह से शत्रुता लेकर तलवार चलाता हुआ वह स्मरण करते ही ठीक आ पहुँचा।

बादशाह की सेना को धराशायी कर वह उसका तकिया लगा कर सो गया। उसके समान कोई भी दूसरा आदमी या देवता नहीं है। म्लेच्छ सेना का सहार कर सुजानसिंह (ब्रह्म की) ज्योति मे विलीन हो गया। अब चाहे कोई (मूर्त्ति के) पत्थर को उखाड़ो अथवा उसकी पूजा करो।

गीत खंडेला रा राजा सुजानसिंघ रौ

नही आज जैसिंघ जसराज जगतौ नही
दे गया खत्री सह पूठ दूजा
प्रथी पाळट हुवै पाट मदिर पडै
सादि मोहरण करै आव सूजा

महासुत गजनसुत करणसुत ग्या मुगत
राय अन परहरै धरम रेखा
साकडी बार अब राख तोसूं रहै
सरम मौ परम ची बिया सेखा

मानहर मालहर अमरहर वीसमै
आन पह ओसकै नकूं आया
आज हूं अेकलौ असुर दळ उळटिया
जुडण कज पधारौ स्याम जाया

साद सुण सेहरौ बाध हस अूससौ
प्रीत हूती जिसौ परख पायौ
आद सुरताण सूं मांड खग बाहतौ
याद करतां थका भलौ आयौ

पाड पतसाह घड़ सिराणैं पोढियौ
देव नर सरीखौ नकौ दूजौ
मार मेछाण दळ जोत सूजौ मिळै
पथर पाडौ तथा कोय पूजौ

भोसला राजा साहजी के पुत्र शिवाजी का गीत

उपाध्याय धर्मवर्धन का कहा हुआ

या तो शक्ति (देवी) की साधना से अथवा अपनी भुजाओं की शक्ति से इस बांके वीर ने बड़े-बडे गढों को प्रकम्पित कर दिया। दूसरा तो कौन उमराव इसके सामने आकर अड़े, स्वय बादशाह भी शिवा की धाक से डर रहा है।

जो शत्रु छेड़छाड़ करते थे उन सबको इसने रौंद डाला। जो जीते बचे वे तिनका लेकर (दीन बन कर) जी रहे हैं। शिवराज की सबल आवाज को सुनकर दिल्ली का स्वामी (औरगजेब) बिल्ली की तरह डर रहा है।

दिल्ली शहर को देख कर, बादशाह से मिल कर और फिर सारी दुनिया के देखते-देखते वह जोशीले नाम वाला अपनी सेना में कुशलतापूर्वक लौट आया। बादशाह हैरान होकर हाथ मलता रह गया।

अपने धर्म को उन्नत बनाने के लिए, म्लेच्छों के शहरों पर वज्रपात के समान, उन्हें जड़ से उखाड़ कर समतल कर देने वाला, वह परम उदार हृदय हिंदुओं का राजा, अब आकर दिल्ली पर अधिकार करेगा यह जानकर बादशाह मन में प्रबल सोच कर रहा है।

गीत भोंसला राजा सिवाजी साहजियौत रौ

उपाध्याय धर्मवर्धन रौ कह्यौ

सकति काइ साधना, किना निज भुज सकति
बडा गढ धूणिया वीर बाकै
अवर उमराव कुण आइ साम्हौ अडै
सिवा री धाक पतिसाह सांकै

खसर करता जिके असर सहु खूंदिया
जीविया तिके त्रिण लेहि जीहै
सबळ आवाज सिवराज री साभळै
बिली जिम दिली रो धणी बीहै

सहर देखै दिली मिलै पतिसाह सूं
खलक देखत सिवौ नाम खारै
आवियौ वळे कुसळे दळे आपरै
हाथ घसि रह्यौ हजरत्ति हारै

कहर मेछा सहर डहर कंद काटिबा
लहर दरियाव निज धरम लोचै
हिंदुऔ राइ आइ दिली लेसी हिवै
सबळ मन माहि सुरताण सोचै

गोठड़े के महाराज बलवंतसिह का गीत

कविराजा भवानीदान का कहा हुआ

तू बड़ी-बड़ी बातें बनाता था और, लड़ने के लिए व्यग्र होकर, भुजाओं में तलवार सभालता हुआ, कट मरने की कामना करता था। तू कहता था कि युद्ध में शत्रुओं को पीठ नहीं दिखाऊंगा। हे चौहान, उठ, वही मेहमान (शत्रु) आ गये हैं।

रणवाद्यों के बजने की ध्वनि, घोड़ों की विषम हिनहिनाहट और (तोपों व बन्दूकों को दागने के लिए जलाई गई) रस्सियों की चमक असह्य ज्वाला प्रज्वलित करना चाहती हैं (भयकर युद्ध के लिए ललकार रही है)। तू कहता था कि मैं खड्ग-प्रहारों से लड़ूंगा, वही मन को भाने वाले पाहुन (आज) तुम्हारी बाट देख रहे हैं।

जग, चम्बल के चारों ओर घाटियों (रास्तों) पर अधिकार कर लिया गया है, सातों घेरे लग गये हैं और गृद्ध मांस-भक्षण के लिऐ लुभायमान हो रहे हैं। तू चाव से युद्ध के लिए बातें किया करता था, हे वीर, अब बाहर आ, सेना खड़ी है।

यह वचन सुन कर, वह आंखों से नींद त्याग कर, आलस्य मोड़ता हुआ, युद्ध से अतृप्त रहने वाला, साहसपूर्वक आगे बढ़ कर तलवार चलाता हुआ, चावपूर्वक भुजबल से (शत्रुओं के) रुधिर का विचित्र ढग से स्वाद लेता हुआ, व्यग्र होकर शत्रुओं पर गजब (के वेग से) आया।

गीत गोढड़ा रा महाराज बलवंतसिंघ रौ

कविराजा भवानीदान रौ कह्यौ

बडा बोलतौ बोल उदमाद करतौ बिढण
तोलतौ खाग भुज बिढण ताया
जुधखळा न देसू पूठ कहतौ जिकौ
भूठ चहुवाण मिजमान आया

बाज तासा घमक हीस घोडा बिखम
चमक तोडा अखम भाळ चावै
भाखतौ लडूं खग भाट मनभावणा
जकै दळ पावणा बाट जोवै

जाग चामळ गिरद कोध घाटा जपत
लाग आटा सपत गोध लूभा
काढतौ वचन मुख चाव जुध कारणै
आव भड बारणै कटक ऊभा

सुण वचन चखा तज नीद असळाकतौ
उरड खग हाकतौ जुध अधायौ
चाव भुजबळा स्रोयण अजब चाखतौ
आखतौ खळां सिर गजब आयौ

घण पतग बोह डोळी बहै घायलां
पतग भड़ छायलां कोह पूरौ

अनेक पक्षी (मांस-भक्षण के लिए) फिर रहे हैं और घायलों की डोलियां जा रही हैं। चिनगारियों की बौछारें रणरसिकों के क्रोध की पूर्त्ति कर रही हैं। भूरे बाघ की भांति पराक्रमी वह वीर क्रोधपूर्वक तलवारों के प्रहार कर उन अजेय आततायी वीरों के सिर काट रहा है।

नींद से जगाये हुए सिंह की भांति बलवतसिंह जगा और सूर्योदय होते ही अंग्रेजों से जा भिड़ा। जब तक उसका शरीर खड्ग धाराओं की भेंट हुआ तब तक उसने क्रोधित होकर आधी शत्रु सेना का सफाया कर दिया।

अंग्रेजों के हृदय को अच्छा नहीं लगने वाले, अप्सराओं के प्रिय, बहादुरसिंह के पुत्र ने शत्रु सेना को शोक मग्न कर दिया। युवावस्था मे जिस खड्ग और साहस को उस चौहान ने सभाला था उसे मरणपर्यंत खूब निभाया।

ताप खग झडां तोडै कमळ तायलां
भडां अजरायला बाघ भूरौ

जगायौ सिंघ बळवंत जिम जागियौ
बागियौ दीह अंगरेज बारां
खीज करि खळा आभौ कटक खागियौ
धड जितै लागियौ खाग धारां

अभायौ बहादर सुतन साहब उरां
अरि घडा जमायौ सोक अछरीक
तरुण वय सभायौ खडग साहंस तिकौ
मरण लग निभायौ भलौ मछरीक

खीवसर के ठाकुर पंचायणसिह का गीत

तलवार रूपी मुख से शत्रुओं को मार कर उनके सिरों रूपी मोतियों को चुगता हुआ वह वीरों में प्रमुख पंचायणसिह रूपी हस शेरशाह की सेना रूपी मानसरोवर के जल में प्रविष्ट हुआ।

वादशाह की विपम सेना रूपी सरोवर में, (सारे दुष्ट) राजाओं के धड़ों रूपी कमलों पर पैर रखता हुआ, कर्मसिह का पुत्र (पचायणसिह) रूपी राजहस तलवार से शत्रुओं के (श्रेष्ठ वीरों रूपी) रत्न चुगता हुआ चला।

तलवार रूपी मुख से म्लेच्छों के सिरों रूपी मानिकों को, युद्ध करने के वहाने संग्रह करता हुआ, शत्रु सेना रूपी मानसरोवर मे हंस की भांति पंचायणसिंह प्रविष्ट हुआ।

शत्रु सेना मे देख-देख कर शत्रु रूपी कमल-पत्रों पर सिर रूपी मोती चुग कर वह हस (पचायणसिंह) रंभा के विमान पर चढ़ कर स्वर्ग की पाल तक जा पहुँचा (वीरगति प्राप्त कर स्वर्ग चला गया)।

गीत खींवसर ठाकर पंचायणसिंघ रौ

मोताहळ कमळ चुगतौ मांझी
असमर मुह साझतौ अर
पै लीलग पंचायण पैठौ
सेर तणै दळ मानसर

साह आलम घड़ सगत सरोवर
पह धड ठहतौ पोयपण
कमसीहौत राजहस कमियौ
रिम रै खग चुगतौ रतन

मुख किरमाळ मेछ धू मागक
सग्रहतौ करतौ समर
पाबासर अरि सेन पचायण
पैठौ धीरत तणी पर

रंभ झूलणै कमळ दळ रौदां
दोखी घड़ मझ देख दिखाळ
भ्रिसणा सीस चुगे पाणीहंड
पुंहतौ हंस चढे स्रगपाळ

नागौर के राव अमरसिंह की कटार का गीत

गाडण केसोदास का कहा हुआ

रण-क्षेत्र में मांस के गूदों के ग्रास निगलती हुई, रक्त से रगी हुई, तीव्र वेग से चलने वाली, अमरसिंह की कटार (शाहजहां के) आमखास में उत्तप्त होकर चल रही है (वध कर रही है)।

(हे अमरसिंह), सैन्यदलों का विनाश करने वाली आपकी यह कटार, (आपके द्वारा) चलाई जाने पर, बादशाह के दरबार में अनेक मुसलमान खानो और सुलतानों को चीरती हुई विचरण कर रही है।

हे जोधपुरी वीर, तुम्हारी कटार अजेय वीरों के उरस्थल विदीर्ण करती हुई और ध्वजधारियों (नरेशों) के धड़ चीरती हुई, क्रोधित होकर मुसलमानों मे विहार कर रही है।

हे (राव) मालदे के वंशज, (तुम्हारी) विकराल कटार (बादशाही) दरबार मे मुसलमानों के टुकड़े-टुकड़े करती हुई और मुस्लिम नरेशों का भक्षण करती हुई विचरण कर रही है।

सोने के काम वाली (कटार) बादशाह के दरबार मे राजकुमारो पर राजी हुई। गजसिंह के पुत्र (अमरसिंह) ने हाथी बांधने वालों (राजाओं) को निगल लिया (नष्ट कर दिया), (यह देखकर) यह (कटार) गर्वोन्नत होकर गरज उठी।

गीत नागौर राव अमरसिंघ री कटार रौ
गाडण केसौदास रौ कह्यौ

गूदा मांस रा गिळती रिण गटका
चळवै रगी सुचाळी
विच अबखास बहै बळबळती
अमर तणी अणियाळी

सुभियाणा खानां सुरताणा
थाटा भजण थारी
फोरी फिरै घणा फाडती
काठहडै ज कटारी

आल्है गोसलतन खाना मभि
उर खणती अनबंधा
जमदढ तूझ तणी जोधपुरा
धड खणती धजबधा

विकराळी दरबार विचाळै
बरबरती बागाळां
मालहरा माल्है प्रतिमाळी
भखती लील भुवाळा

सोनहरी दीवाण दिलेसर
रायजादा हुइ राजी
गजनतणै गिळिया गजबधी
अूग्रजती आ गाजी

उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की तलवार का गीत

आढा किसना का कहा हुआ

भीमसिंह के हाथों में रह कर विजय प्राप्त करने वाली, शत्रुओं के टुकड़े-टुकड़े करना चाहने वाली तथा श्यामाङ्गी (कालिका की भांति) उज्ज्वल रक्त का स्वाद चखने वाली, भयंकर नगी तलवार गजयूथों के सिर पर (इस प्रकार) नाच रही है मानों सावन की घटाओं में विजली चमक रही हो।

(यह) महाकाल की पुत्री राणा के हाथों में सुशोभित होती है (एवं) शत्रुओं को विलोड़ित करती है। गजयूथों रूपी अंधकार को नष्ट करने वाली यह दीपावली की कान्ति सी शोभायमान होती है। प्रज्ज्वलित होते ही अग्नि ज्वालाओं की तरह जला देने वाली यह तलवार वर्षा ऋतु की विजली की समानता प्राप्त करती है।

(महाराणा) अड़सी की संतान (भीमसिंह) के सुयश को प्रकाशित करने वाली (यह खड्ग) उसके हाथों में सुशोभित होती है। महाकाली की आशा (रक्त पिपासा) को पूर्ण करने वाली, होदों सहित हाथियों को खण्ड-खण्ड कर देने वाली, युद्धों में चतुरंगिनी सेनाओं को वज्रपात के समान विनष्ट कर जमीन से टकरा जाने वाली इस तलवार का वेग चातुर्मास की विजली के समान है।

हे भीमसिंह, उन्मत्त वीरों का रक्तपान करने वाली, शत्रु-सेनाओं को काट देने वाली, अनम्र जागीरदारों से खिराज भराने वाली, प्रहारों में जमीन तक जा लगने वाली, युद्धों मे गजयूथों को विभक्त कर देने वाली, हाथों में रहने पर विजय प्रदान करने वाली, तुम्हारी यह तलवार घन-घटा की वज्राग्नि ही है।

गीत उदयपुर महाराणा भीमसिंघ री तरवार रौ
आढा किसना रौ कह्यौ

करां भीमेण पावणी फतै चावणी अरिंदां कटा
सामग स्रोयणां छटा अचावणी साव
नंगी अध्रियामणी गयदां थटां सीस' नाचै
बीजळा सामणी घटा दामणी बणाव

सोहै राण पाणा सत्रा डोहै काळवाळी सुता
आजे दीपमाळ वाळी गै तमा भनेब
अुदता मंगळां झळां तरेसा प्रजाळवाळी
जोपै बरस्साळवाळी चचळा जनेब

अडस्साणी सुजस्सां प्रकास री करग्गां ओपै
सिवा पूर आस री विहंडी गजा साज
जगां चातुरंगा पब्बै विनास री प्रथीजपा
तेग वेग सपा चत्रमास री तराज

रत्तां मैमटां री पीण कटारी हैजमा रिमा
लटा री अलट्टा जाग जमी धक्कां लाग
भाराथा थटां री गजां विभाग कराक भीम
जैतहथां थारी खाग घटा री बज्राग

जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के भाले का गीत

वरजूबाई का कहा हुआ

हे अजेय, तुम्हारा उत्तम भाला समस्त पृथ्वी पर सुशोभित है। उदय होते हुए सूर्य की भांति सारा जगत इसकी आन के सामने (अथवा-आकर) नतमस्तक होता है। हे अभयसिंह, समस्त पृथ्वी की लाज तुम्हारे भाले के भरोसे ही है (क्योंकि अपने इस) एक भाले से ही तूने सारी पृथ्वी का उपभोग कर लिया है।

(जब) गजयूथों एवं अश्व-समूहों की फौजें युद्ध के नगारों की भयंकर गर्जना (करती हुई) मार्गों की धूलि को आकाश में उड़ा कर उसे पूर्णतया ढक देती है, (तब) हिन्दू-मुस्लिम दोनों जातियों की नेकी आपके भाले की नोक पर ही टिकी रहती है और दोनों पक्ष आपके भाले की ओट मे (सुरक्षित) रहते हैं।

जब केसरिया वस्त्र पहिने हुए सैन्यसमूह मे नगाड़ों के बजने से गर्जन होता है, और लौह शृंखला पहिने हुए असंख्य उन्मत्त हाथियों के झुण्ड (बढे आते हैं) तब आपके भाले के भरोसे ही सारी बादशाही खुशियां मनाती है और समस्त हिन्दू जाति भी आपके भाले के भरोसे ही आनंद करती है।

(आपकी सेना इतनी विशाल है कि इसके मार्ग मे) अग्र भाग के सैनिकों को जल से पूर्ण सरोवर मिलते हैं तो पृष्ठ भाग के सैनिकों के लिए केवल कीचड़ ही बच पाता है। राजा-राणा भी (डर कर) इसकी आवभगत करते हैं और यह किसी का भी भय नहीं मानती। हे दूसरे गंगेव, अजीतसिंह के पुत्र, आज तो दोनों दलों की नेकी आपके भाले पर ही आ लगी है।

हे राजा, साहू जैसे असंख्य (राजा) आपके भाले (के डर) से (भयभीत होकर) चौंकते रहते हैं और दशों दिशाओं मे इसकी दुहाई दी जा रही है। आपके भाले के बल पर ही दिल्ली की सारी बादशाहत और स्वयं दिल्ली का बादशाह भी निश्चिन्त है।

गीत जोधपुर महाराजा अभैसिंघ रै सेल रौ

बरजू बाई रौ कह्यौ

आछौ अगंजी ताहरौ भालौ सारी प्रथी सीस ओपै
अगा सूर ज्यूही सारी प्रथी वंदै आण
सारो प्रथो तणी लाज भालै थारै अभैसिघ
प्रथो सारी भोग राळी हेकै भालै पाण

गैजूहा सिधवां फौजा गरूठ त्रबाळां गाज
बाज गैलां खेहा ढंकै पूर बोमवाह
बेहू राहा तणी नेकी राज रै छडाळ बंधी
राज रा छड़ाळ तणै ओलै दुहू राह

रणाचार बरूथां डंडाळां धूस पड़ै रोड
अडीलां छंछाळा लौह लंगरा अपार
कूत रै भरोसै सारी खुरासाण जोखां करै
कूत रै भरोसै जोखा करै हिंदूकार

हरोलां तटाक पूर चदोलां कदंबी हाथा
संका नको फौजां धरै राजा राणा सेव
अभै थाटां तणी नेकी आज तो अजीतवाळा
गाजै थारै आण बागी दूसरा गगेव

दसू दिसा राजा थारै सेल री दुहाई दीजै
थारै सेल साहू जिसा ओभकै अथाह
सेल थारै नचीती दिली री सारी पातसाही
सेल थारै नचीतौ दिली रौ पातसाह

सांदू रामा का गीत

महाराज प्रिथीराज राठौड का कहा हुआ

हे (चारणों की) सांदू शाखा के प्रमुख, तू भले ही (धरने में) सम्मिलित हुआ और भले ही न भी हुआ (अर्थात् धरने में सम्मिलित होकर भी युद्धार्थ लौट आया)। तू अपने शस्त्र की नोक से (राणा) प्रताप की सहायता करने के लिए जिस समय (मुगलों के) विशाल सैन्य समूह में (अपने वीरों को) प्रेरित करता हुआ आगे वढा (उस समय) तुझे धन्य है।

हे (सांदू) राण, तूने (धरने में) अनशन कर दान की जागीरें नहीं ली अपितु युद्ध के लिए तलवार हाथ में ली। तेरे शस्त्र गले मे घाव करते हुए (धरने में आत्महत्या के लिए) नहीं अपितु (युद्ध मे) शत्रुओं के घाव करते हुए सुशोभित हुए।

हे आंवा के पौत्र, तूने अपने दल को वेरोक टोक आगे वढाया और अनेक शत्रुओं के घाव कर (उन्हें) धराशायी किया। तागा करने (अपने गले मे कटार खाकर आत्महत्या करने) में घमड करने वाले अन्य चारण तुम्हारी वरावरी नहीं कर सकते।

चारण समाज मे सारे चारण (इस वात को) जानते हैं कि इस समय में अजेयों पर जय प्राप्त करने वाला, धरमा का पुत्र रामा धरने मे नहीं वैठ अपितु (वीर गति प्राप्त कर) रंभा के रथ पर वैठा (विमानारूढ होकर वैकुण्ठ गया)।

गीत सांदू रामै रौ
महाराज प्रिथीराज राठौड़ रौ कह्यौ

गयौ तूं भलां भलां तूं न गयौ
धिन धिन तूं सांदवा धणी
जाड अणी मां हेडो जा कळ
अणी करण पातला अणी

तै लिय आहव राण त्रजड हथ
लै लांचण सासण न लिया
सोहै ससत्र सालिया सात्रव
कंठ सोहै न खालिया किया

दळ आपरौ नत्रीठौ दीनौ
घाये लीना प्रसण घणा
आंबाहरा न बीजा ओपम
तागा वाळा नसा तणा

चारण जाणै माय चारणा
अबै समै बिच नथ अनथ
धरमा तणौ न बैठौ धरणै
रामौ बैठौ रंभ रथ

माहव किनिया का गीत

राजपूत और चारण भाई-भाई हैं, यह ठीक ही कहा जाता है। युग बीत जाने पर भी यह कथा (कहावत) स्थायी रहेगी। बड़े कवि माहव ने (भी) (क्षत्रियों के साथ युद्ध में लड़ कर) मरने की बात बनाई और (भागकर) घर आकर बातें नहीं बनाई (युद्ध के वर्णन नहीं किए)।

दूसरे पचायण, इस चारण ने, अमर बनने के लिए उत्साह पूर्वक लड़ते हुए, अपनी मृत्यु को अद्भुत बना दिया। दोनों पक्षों की सेनाओं द्वारा (यह) भला कहा गया और पत्र देने के लिए नोखा (नामक गांव) नहीं आया।

वह अड़ीला चारण-कुमार जोशीले वचन बोलता हुआ, योद्धाओं को ललकारता हुआ, (भुजा के तलवार को) सभाता हुआ और प्रहार करता हुआ, क्षत्रिय-कुमार के आगे होकर काम आया (लड़कर वीर गति को प्राप्त हुआ), पर कथा कहने के लिए घर नहीं आया (रणविमुख नहीं हुआ)।

कवारी (अविजित) सेना का दूल्हा (वरण करने वाला) जीवण का पुत्र (वह) किनिया (माहव) अपने स्वामी के लिए युद्ध करने को गुजरात गया और अप्सरा का वरण कर हरिसिंह के साथ रथ मे बैठा। (वैकुण्ठ गया), पर कथा कहने के लिए घर नहीं आया।

गीत माहव किनिया रौ

चवै साथ रजपूत भाई भलौ चारणां
जरू कथ रहाई जुगां जातां
बडै कवि महावै मरण ची वणाई
बणाई नहीं घर आय बातां

अभिनमौ पंचायण अूबरण उससतौ
निज मरण कियौ चारण अनोखै
कटक सारौ भलौ राह बी कह्यौ
न आयौ कागदां दियण नोखै

बाहतौ साहतौ भड़ां बाकारतौ
अढगा बोलतौ वयण अडवौ
कुवर रै आगळा काम आयौ कुवर
गांम नायौ कथा करण गढवौ

सांम रै काम गुजरात जोवण सुतन
विढण घड कुंवारी तणौ बनियौ
रंभ वर हरी रै साथ बैठौ रथा
कथा नायौ घरै कहण कनियौ

महाराणा भीमसिंह की सतियों का गीत

आढा किसना का कहा हुआ

भीमसिंह की मृत्यु कानों से सुनते ही (उनके) चित्त में अत्यधिक पातिव्रत्य जागृत हो उठा और (उन्होंने) इहलौकिक रागादि सुखों से विमुख होकर उनका त्याग कर दिया। तीव्रध्वनि करने वाले ढोलों के समूहों के बजते हुए वे सतियां अग्नि-ज्वालाओं में प्रवेश करने के लिए उठीं।

गंगाजल से स्नान करके, वस्त्रों से सज कर, जब वे गजगामिनियां (निकलीं) तो उनकी कान्ति बिजली से भी अधिक सुशोभित हुई। अग्निशय्या पर सोने वाली वे पद्मिनियां दुलहिन से भी सौगुनी अधिक सुन्दर लगीं।

जरीनिर्मित वस्त्रों और आभूषणों के नूतन वर्ण की चमक (से मेल खाते हुए) अग्नि में प्रविष्ट होने की वीरता के तेज से दीप्त उनके मुख धन्य हैं। (राजा) जगतसिंह के पौत्र, भीमसिंह से विवाह करके जिस प्रकार भोग-विलास द्वारा वे प्रसन्न हुई थीं (उसी प्रकार) प्रसन्न हृदय से अग्नि-ज्वालाओं में प्रवेश करने के लिए वे आईं।

(जिस प्रकार) वे इत्र से सींची हुई कुसुम-शय्याओं पर सोती थीं उसी प्रकार (उन्होंने) असह्य प्रदीप्त ज्वालाओं को सहन किया। (राणा) अड़सी के पुत्र (भीमसिंह) के साथ (जिस प्रकार उन्होंने) मृत्यु लोक की सैर का आनंद लिया था, (उसी प्रकार वे) सतियां स्वर्ग-लोक की सैर के लिए प्रस्तुत हुईं।

गीत महाराणा भीमसिंघ री सतियां रौ

आढा किसना रौ कह्यौ

सुणे भीम म्रित स्रवण श्रत जाग पतव्रत सुचित
राग अहलोक सुख त्याग रूठी
ढमकतां कराळां झूमरा ढोलडा
आग झाळां धसण सती ऊठी

गंग जळ मज सझ बसण गजगामणी
सुज प्रभा दामणी अधक सरसी
पदमणी सेझ पावक तणी पोढवा
दुलहणी हूत सौगुणी दरसी

झळक नवरग जरकस बसण भूखणां
तेज धन धगन मुख वीरताई
जगाहर भीम कर लगन विलसी ज्युही
अगन झळ धसण मन मगन आई

सोवती सेझ कुसमी अतर सीचती
तेम बिखमी खमी झाळ ततियां
सुत अरस सहल म्रित लोक री बिलसता
सझी सुरलोक री सहल सतियां

मृत्यु का उल्लास लिए, मुख से 'हर-हर' का उच्चारण करती हुई आठों ही (सतियां) दृढ मन से अपने पति का अनुगमन करती हुईं, अग्नि-ज्वालाओं में स्नान करने के लिए प्रविष्ट होकर तर गईं। इनकी समता करने वाली विश्व में (सूर्य-चक्र-पथ में) अन्य कौनसी (स्त्रियां) तरीं ?

राजसी निवास स्थानों को छोड़ कर (वे) सतीलोक के (अपने) आवासों में जा वसीं। पृथ्वी पर सूर्य और सुकवि (दोनों) इसके साक्षी हैं। उमग से भरी हुईं रानियों ने अपने पति के लिए शरीर को होम कर अपनी कीर्त्ति को स्थायी वना दिया।

हुलस-म्रित धरी आनन उचर हरहरी
ओड कुण भानचक तरहरी आन
कंत री लार आठह तरी बिळकुळी
अनळ झळ धरहरी करण असनान

ढांण सतपुर बसी छोड रजठाणियां
सूर प्रथमाणियां सुकव साखी
करे तन होम उमगाणियां कंत कज
राणियां बात अखियात राखी

महाराणा सांगा का (मरसिया) गीत

सूर्योदय के विना जैसे आकाश, दीपक के विना जैसे घर (और) वर्षा के विना जैसे पृथ्वी है, उसी प्रकार (महाराणा) सांगा के विना (यह) ससार (हो गया) है।

रवि के विना जैसे व्योम, ज्योति के विना जैसे आवास (और) जलयुक्त मेघ के विना जैसे धरती है, वैसे ही, हे जयसिंह के पौत्र, तुझ कल्पतरु के विना यह पृथ्वी जान पड़ती है।

दुनिया को जीवन प्रदान करने वाला जलधर चला गया, (और अन्य) दीपकों की लौ भी शोभित नहीं हो रही हैं। बादशाहों को वन्दी बनाकर (उन्हें पुन.) मुक्त कर देने वाला प्रचण्ड सूर्य के समान (महाराणा) सांगा अस्त हो गया है (मृत्यु को प्राप्त हो गया है)।

मरसियौ महाराणा सांगा रौ

आगा विण सूर जेहवौ अंबर
दोपक पाखै जिसौ दुवार
पावस विना जेहवी प्रथमी
सांगा विण जेहवौ संसार

विण रवि बौम वसण जोती विण
धाराहर विण जसी धर
जैसीहरा जिसी जाणेवी
तौ विण प्रथमी कळपतर

जळहर गयौ दुनी जीवाडण
फबै नही दीपक फरक
साहां ग्रहण मोखणौ सांगौ
आथमियौ मोटौ अरक

कल्याणमल के पुत्र महाराजा रायसिंह का (मरसिया) गीत

आढा दुरसा का कहा हुआ

बड़े शूरवीर और उत्तम दातार रायसिंह ने (चिर) विश्राम कर लिया (मृत्यु को प्राप्त हो गए)। अब युद्ध के लिए कुंवारी (बिना लड़ी हुई अथवा अविजित) सेना का वरण कौन करेगा?

युद्ध और दान में श्रेष्ठ, कल्याणमल का पुत्र (रायसिंह) चला गया। अब लाखों की सेना का कौन सामना करेगा, लाखों के मूल्य के श्रेष्ठ हाथी हमें कौन प्रदान करेगा, (और) रीझ कर करोड़ों का दान (भी) कौन देगा?

(हे) शत्रु-सेना को जीतने वाले, (राव) जैतसी के पौत्र, कुल-श्रृंगार, सर्वनाश कर देने वाली शत्रु-सेना का वरण (अब) कौन करे? हे राजा, रत्न के मोल (एक करोड़) का दान (भी अब) कौन दे?

हिन्दुओं का सिरमौर (रायसिंह) दोनों बातें (अपने साथ) लेकर चला गया। चारों ही युगों के आंकड़े (वह) रद्द कर गया। अब हाथियों को राज-द्वारों पर झूमते ही (आंखों से) देखेंगे (और) करोड़ों के खजानों की बात ही कानों से सुनेंगे।

मरसियौ महाराजा रायसिंघ कल्याणमलौत रौ

आढा दुरसा रौ कह्यौ

बडौ सूर सुदतार रायसिंघ विसरामियौ
विढण कुण कवारी घडा वरसी
कुंजरां तणी मौहताद करसी कवण
कवण कौड़ां तणी मौज करसी

कळहगुर दानगुर हालियौ कलाउत
लाख ऊपर कवण वाग लेसी
अम्हां गजराज लख मोल कुण आपसी
दान कुण रीझ सौ लाख देसी

जैतहर आभरण सतर घड जीपणा
वरै कुण घडा दहवाट बाजा
दान फौजां तणा कवण गहणा दियै
रतन रौ मौल कुण दियै राजा

हिदवा छात दोय बात ले हालियौ
बाळ्यौ आक जुग चिहूं वाने
हसत हव हीडता देखसा रायहर
कौड हव खजानै सुणस काने

अकबर बादशाह का गीत

दुरसा आढा का कहा हुआ

हे हुमायूं के पुत्र अकबरशाह, (मेरे इस) संशय का निवारण कर (कि तू) धनुर्धारी लक्ष्मण अथवा धनुर्धारी अर्जुन का अवतार है या दश सिरों वाले रावण का नाश करने वाले रामचद्र अथवा कस का संहार वाले कृष्ण का अवतार है।

वेद साक्षी है कि मनुष्य की क्या औकात है (जो इतने बड़े साम्राज्य का स्वामी बन सके)। हे बादशाह, इस बार सच-सच कह (कि तू) भ्रमर वेध करने वाले (लक्ष्मण) अथवा मत्स्य वेध करने वाले (अर्जुन) का अवतार है या पत्थर तैराने वाले (रामचंद्र) अथवा पहाड़ को (अगुली पर) धारण करने वाले (कृष्ण) का अवतार है।

हे दूर के योगी, तुम्हारे चमत्कार (अद्भुत कृत्य) देखते हुए (यह निश्चित है कि) तुम आदमी नहीं कोई महान् (दैवी शक्ति के) अ श हो। (बताओ, तुम) मेघनाद को मारने वाले (लक्ष्मण) अथवा कर्ण का विध्वस करने वाले (अर्जुन) हो या रघुवंशी (रामचद्र) अथवा यदुवशी (कृष्ण) हो ?

हे दिल्लीश्वर, बता, तू इनमें से कौन सा है ? (तू) अनत (देव) है अथवा मनुष्य यह तो प्रकट कर ! (तुम्हें) समुद्र पर पुल बांधने वाला (रामचद्र) कहें अथवा काली नाग को नाथ देने वाला (कृष्ण) कहें ।

गीत अकबर बादसाह रौ

दुरसा आढा रौ कह्यौ

वाणावळि लखण अरजण बाणावळि
सिर दस रोळण कंस संघार
सांसौ भाज हुमायु समोभ्रम
अकबरसाह कवण अवतार

निगम साख मानुख गत काही
असपत कथ साचौ अण वार
वेधण भ्रमर क तू झकवेधण
गिरतारण कै तू गिरधार

जोगी परा करामत जोतां
आदम नही बडौ कोइ अंस
धूसण धर ख क करण विधूसण
वस रघू कै तू जदुवस

आख दलीस कूण तू इण मे
अनत किना नर प्रगट इहां
सायर बांधणहार दिलेसर
काळी नाथणहार कहा

चेतावनी का गीत

आसिया बांकीदास का कहा हुआ

अंग्रेज देश पर (चढ़) आए हैं । (उन्होंने देशवासियों का) आत्म बल छीन लिया है। जिस धरती को भूस्वामियों ने मर कर भी (शत्रु को) नहीं दी थी, वही धरती भूस्वामियों के जीवित रहते ही (हाथ से) चली गई।

(अंग्रेजों की) फौजें देख कर भी (राजाओं ने) फौजें नहीं बनाई (और) शत्रुओं को विनष्ट नहीं किया । जो धरती (रूपी पत्नी) कंधों तक अपने पति (राजाओं) का चूड़ा और खांच (धारण किए हुए थी—अर्थात् पूर्णतः वशवर्तिनी थी—वह) उसी चूड़े से (दूसरे पति के घर) चली गई (अर्थात् पहले पति का चूड़ा भी नहीं उतारा—क्रांतिविहीन समर्पण हो गया)।

छत्रपतियों (राजाओं) को (यह बात) अप्रिय नहीं लगी (और) गढ़ों के स्वामियों की धरती (सदा के लिए) गुम गई । इन कायरों ने धरती को गंवाते समय (तनिक भी) बल-प्रदर्शन नहीं किया (और उनके) देखते-देखते ही (वह धरती) चली गई।

दक्षिणी (मराठे) दो-चार महीनों तक (अंग्रेजों से) लड़ते रहे । भूमि (उनके हाथों से) चली गई यह तो होनहार थी। मराठों ने वश रहते न तो (अंग्रेजों की) सेवा स्वीकार की और न अपना देश ही (उनको) दिया।

गीत चेतावणी रौ

बांकीदास आसिया रौ कह्यौ

आयौ अंगरेज मुलक रै ऊपर
आहस लीधा खैंच उरा
धणियां मरे न दीधी धरती
धणियां ऊभां गई धरा

फौजा देख न कीधी फौजां
दोयण किया न खळा डळां
खवां खांच चूड़ै खावंद रै
उणहिज चूड़ै गई इळा

छत्रपतिया लागी नहं छाणत
गढपतियां धर परी गमी
बळ नहं कियौ बापडै बोता
जोतां जोतां गई जमी

दुय चत्र मास बाजियौ दिखणी
भोम गई सो लिखत भवेस
पूगौ नही चाकरी पकडी
दीधौ नही मराठै देस

पृथ्वी और आकाश को तोपों से गर्जित कर भरतपुर का राजा (युद्ध करने के लिए) खूब बढा। अंग्रेज (सेनापति) का सिर पहिले (धरती पर) पड़ा, (फिर कहीं वह स्वय मारा जा सका)। जीवित रहते (उस) वीर ने (शत्रुओं को) भूमि नहीं दी।

(कवि कहता है कि) पृथ्वी छीनी जाने और स्त्रियों पर अत्याचार होने के ये दोनों अवसर (वीरों के) प्राण दे देने के (उपयुक्त) हैं। रे हिन्दु-मुसलमान जवानों, कुछ तो राजपूती (वीरता) रखो।

हे जोधपुर, उदयपुर और जयपुर के राजाओं, आप लोगों के वश समाप्त हुए ही समझो। वांकीदास का यह कथन है कि इस समय (यदि धरती तुम्हारे हाथ से) चली गई तो फिर कभी (लौटकर) नहीं आयेगी।

बधियौ भलौ भरतपुर वाळौ
गाजे गजर धजर नभ गोम
पहलां सिर साहब रौ पडियौ
भड़ ऊभां दीधी नहं भोम

महि जातां चीथातां महळा
ए दोय मरण तणा अवसाण
राखौ रै कीहिक रजपूती
मरदा हिन्दू मूसळमाण

पत जोधांण उदैपुर जैपुर
पह थारा खूटा परियाण
आंकै गई आवसी आंकै
बांकै आसल किया बखाण



नीम की प्रशंसा का गीत

हे सखि, घायलों के साथी उस (नीम वृक्ष) को बोना चाहिए (और अपनी प्यारी) निधि की तरह उसे सदा स्थायी रखना चाहिए। हे सहेली, यह कार्य बड़ा पवित्र और सरल (भी) है। आओ, (ऐसे उत्तम वृक्ष) नीम को सींचने चलें।

रायसिंह की रानी कहती है कि वीर-प्रमुख रतनसिंह के पुत्र (रायसिंह) रणरसिक हैं। (इसलिए वह बार बार घायल होते ही रहते हैं।) (उनकी) जीवन रक्षा की निशानी यह नीम ही है। और हे सयानी, यह (बड़ा) पवित्र और सरल कार्य (भी) है।

(इसको) पीस कर घावों पर बांध दिया जाए और (इस प्रकार) प्रियतम की जीवन रक्षा होने से स्वयं भी जिया जाय। हे पगली, अगरु-चदन का क्या करें ! हे सखि, हमें तो नीम ही सींचना चाहिये।

अपरिमित बलशाली शरीर वाले (रायसिंह) घावों से पीड़ित हो गये। यत्नपूर्वक (नीम का) पट्टा (उनके घावों पर) बांधा गया। इस लोक मे (उन्हें) दूसरा जन्म मिला। (इसी गुण के कारण) नीम (वृक्ष) भामिनी (रायसिंह की रानी) के मन को भाया।

गीत नींम री प्रसंसा रो

बाइयै तिकौ घायलां बेली
थित नित कर राखीजै थेली
सूदौ सोरौ काज सहेली
हालौ नीब सीचवा हेली

रासा तणी पयपै राणो
रणरीझल मांझी रतनाणी
सूदौ सोरौ काज सयाणी
निबडौ जीव तणी नासाणी

बाटे तन घावां बांधीजै
जीवै पीव आप जोवीजै
कालो अगर चनण की कीजै
सखी अम्हीणौ नीब सिचीजै

घट अगणित बळ पीडा घायौ
बौह जतना पाटौ बंधवायौ
जमण दूसरौ भमण जिवायौ
भामण तणौ नीब मन भायौ

जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह का गीत

उज्जैन में असि-प्रहारों के बीच एक विशाल स्वयवर रचा गया। हे जसवतसिंह, (तुम्हारे बड़े भाई) अमरसिंह की आदी की हुई (वीर गति प्राप्त कर विवाह करने की अभ्यस्त की हुई) अप्सरा हृदय में हर्षित हो (तुमसे विवाह करने के लिए आई, पर) वाट देखती ही रह गई। (तुम्हें युद्ध से भगता हुआ देखकर) वह करुण क्रंदन करके रोती ही रह गई।

हे कुलउद्धारक, सूरसिंह के पौत्र, तुमने (अपने हृदय को) कायर कर लिया। भयातुर होकर हृदय को प्रफुल्लित करने वाला मद्य (अप्सरा के हाथों का मद्य) नहीं पिया। बड़े भाई द्वारा भ्रम में डाली हुई अप्सरा (तुम से) विवाह करने के लिए आई, पर हे मुरुधराधीश, वह निःश्वास छोड़ती ही (हताश होकर) चली गई।

पूर्व समय मे राज्याधिकारी (अमरसिंह) ने अप्सरा को अभ्यस्त किया था (वरण करने का लोभ दिया था), किन्तु तूने इस वार किनारा कर लिया (कायरता दिखा कर उसे वरण से वंचित कर दिया)। तुम्हारे पार्श्व में ही दलपतसिंह और रतनसिंह (अप्सराओं से) विवाह करते रहे, और हे गजसिंह के पुत्र, (तुमसे विवाह करने के लिए आई हुई) अप्सरा बाट देखती ही रह गई।

हे राजा, तू तलवारों के प्रहारों से डर कर भाग गया और (अपनी सारी) बारात (सेना) को विवाह-मडप (रणस्थल) मे ही मरवा कर घर लौट आया। वह सुन्दर अप्सरा, जो ससार मे तुमसे ही विवाह करने की वाट देख रही थी, उबटन लगाये ही रह गई (कुंवारी ही रह गई)।

गीत जोधपुर महाराजा जसवंतसिंघ रौ

महा मडियौ जाग उज्जैरण खागां मधै
रुदन बिलखावती रही रोती
हेळवी अमर री हीय करती हरख
जसा अपछर रही बाट जोती

किया काचा अमर सूरहर कळौधर
डरत गत न पीधौ फूलदारू
बडा री भोळवी हूर आवी वरण
मेलती गई नीसास मारू

पाटवी हेळवी बेगमै पैलकै
तैं समै अैलकै लीध टाळा
पागती दलौ नैं रतन परणीजतैं
बाट जोती रही गजनवाळा

जैं तो वीवाह री बाट जोती जगत
रूक बळ आसियौ गियौ राजा
मराड़ी जान घर आवियौ माडवै
तेल चढती रही अछर ताजा

रायसर के रावल इंद्रसिंह का गीत

(रावल इद्रसिंह की चांपावत वश की स्त्री) चांपावत कहती है–हे दासी, जल्दी दौड़ो, चरवा (रसोई पकाने का वर्तन (चूल्हे पर) चढ़ाओ ! (तोपों के) गोले चलने की आवाज हो रही है, दक्षिणी (मराठे) लड़ रहे हैं, आज तो रावल (मेरे पति) भाग कर आयेंगे।

दासी ने हाथ जोड़ कर, मदस्मित से यह कह कर ताना दिया कि आप भोली हैं, युद्ध के समय पति के लौटने का विश्वास कैसे हो सकता है।

उम्मेद कुवर (इद्रसिह की स्त्री) कहती है कि मैं (अपने स्वामी के) विभिन्न भेदों को जानती हूँ। वे बस्सी और खाटू में भी नहीं लड़े थे। युद्ध में (मेरे) पति सदा ही भागते हैं।

हे कामिनि, शीघ्रतापूर्वक भोजन तैयार करो ! हे भामिनि, राह की ओर देखो ! तलवार, पगड़ी और घोड़ा शत्रुओं को देकर (मेरे) पति पैदल ही आयेंगे।

राजकुमारी ने अपने पति की रुचि के अनुकूल भोजन बनवाया था, (लेकिन) इंद्रसिह ने (भाग कर आने में) इतनी जल्दी की कि भोजन आधा ही बना था कि वह आ गया।

गीत रायसर रा रावल् इंद्रसिंघ रौ

चांपावत कहै चाढवौ चरवा
दौड़ौ बेग ज दासी
बाजत गोळा दिखणी विढिया
आज तो रावळ आसी

जोडै करग बडारण जंपै
मुळक 'र दीधौ मोसौ
रणवेळा कंथा आवण रो
भोळां किसौ भरोसौ

बसी अनै खादू नह विढियो
भिन भिन जाणू भेदां
भारथ नाह सदा ही भाजै
उचरै वयण उमेदां

कासौ करौ सताबी कामण
भामण पंथ दिस भाळौ
पाती पाग पमंग दे पैलां
आसी कंथ उपाळौ

भरता तणी परख कर भोजन
रायजादी रधवायौ
इसडी करी उंतावळ इंदै
अधसीजे ही आयौ

उलहने का गीत

महड़ू दला का कहा हुआ

बहुमूल्य लोरियां गा-गा कर तुम्हारी माताओं ने तुम्हें व्यर्थ ही पलनों पर झुलाया। हे प्रियतमों, आपको किसलिए पालन-पोषण करके जीवित रखा गया! लोक-लज्जा धारण करके ही (आपको) फिरगी (अंग्रेज) से टक्कर लेनी थी, (और नहीं तो) (अपने) स्वामी के द्वार पर विष खाकर प्राण दे देने थे।

आपको (कम से कम) लौट कर तो नहीं आना था! अपने (इस कलुषित) मुख को लेकर कहीं दूर निकल जाते! सब को एकत्रत कर इस प्रकार अपना व्यक्तित्व तो नहीं खोना था। आबरू के वट्टा लगते समय आपको आक (आक के पौधे का दूध) पी लेना उचित था (अर्थात् अपने बूते से बाहर की बात भी कर डालनी थी), पर अपने स्वामी जसवंतसिंह के जाते समय (पकड़े जाते समय) जीवित लौट कर नहीं आना था।

देखो, (इन) शत्रुओं ने पूर्वजों के कलंक लगा दिया। (इन्होंने) पूरी की पूरी हरामखोरी आज अपने सिरों पर मँढली। कहो, स्वामी को खोकर (पकड़वा कर) जीवित लौट कर आपने क्या कर लिया? इन लुच्चों ने सारे देश की लाज गँवादी।

पूर्वजों की (मर मिटने की) रीति का पालन न करके (इन्होंने) प्रत्यक्ष मे ही कलंक का टीका लगवा लिया। बुरी नीयत विचार कर (अर्थात् भाग कर) इन्होंने कुलों को कलंकित कर दिया। चौहानों की स्त्रिया वारवार अपने प्रियतमों से कह रही हैं कि आप क्षत्रियत्व की सारी आनवान को छोड़ आये हैं।

गीत ओलमै रौ
महड़ू दला रौ कह्यौ

मूघां हालरा उगेरे ब्रथा हलाया पालणै माता
पोखे केण कारणै जिवाया थानै पीव
लोक लाज धारणै फिरंगी हूंतां भाट लेता
जहर खाय धणी रै बारणै देता जीव

आघा जाता मूडो ले'र पाछोई न आवणो छो
करे भेळा सारा क्यू गमावणो छो कूत
आबरू थावता बट्टो पीवणो सही छो आक
जीवणो नही छो धणी जावतां जसूत

देखो बेरागरां छाप बडां रै लगाय दीधी
आवगी हरामखोरी लीधी माथै आंज
कहो धणी गमावे जीवता आवे किसू कीधी
लुच्चा सारा देस री गमाय दीधी लाज

चौडै ली कुछाप माथै न धारी बडां री चाल
खोटी सल्ला विचारी लगाई कुळा खोड़
नौरा ले-ले पीव सू सभर्‌या तणो कहै नारी
मेल्ह आया सारी छत्रीपणा री मरोड

मूंजी का गीत

आसिया बाकीदास का कहा हुआ

मुझे न तो वीर रस का वर्णन ही अच्छा लगता है और न यश तथा नीति-वर्णन ही। हे कवि (चारण), (वृथा ही अपने) गीत क्यों सुना रहे हो, मुझे गीतों की गरज नहीं है।

मुझे तो पैसा हाथ लगने पर प्रसन्नता होती है, (तुम्हारी इस) माथापच्ची (गीतों) से प्रसन्नता नहीं होती, (इसलिए) मेरे लिए काव्य-रचना क्यों करते हो, अपने घर वालों के लिए ही काव्य बनाओ।

(अपने) गुण (काव्य चातुरी) को (मेरे सामने) प्रकट करने में क्यों समय खराब करते हो ? इसे अपने पास ही (गठरी में बांध कर) रखो। तुम काव्य के रचयिता बने हो, पर यहां काव्य की परख करने वाला कौन है ?

(तुमने वर्णमाला के) बावन अक्षरों को एकत्रित कर कागज लिख-लिख कर तैयार कर लिये हैं। यदि (यहां) वाचालता दिखलाई तो मैं लड़ूंगा और चिढ जाऊंगा, पर चार कौड़ी भी तुम्हें दान में नहीं दूंगा।

गति मूंजी री

बांकीदास आसिया रौ कह्यौ

वीरा रस तणी न भावै वरणण
नह भावै मोनू जस नीत
गरज नही म्हारै गीतां री
गढवा काय सुणावै गीत

मोद मचै कर चढियां माया
माथापच नह मोद मचै
रच थारा घरका रा रूपग
रूपग म्हारा काय रचै

खोटी हुवै किसूं गुण खोलै
गाठ बाधियां राखै गुण
बणियो तू, कायव रो बकता
कायब कूता अठै कुण

आखर बावन करे अेकठा
तै कागळ लिख कीना त्यार
लापरपणो कियो तो लडसूं
चिड़सू दियू न कोड़ी च्यार

बीकानेर के महाराजा रायसिंह का गीत

दुरसा आढा का कहा हुआ

हे रायसिंह, ससार में (तुम्हारी) यह कीर्त्ति चिरस्थायी रहेगी। (ऐसे) महोत्सव पर, छोटी सी बात मानकर (तुच्छ दान समझ कर) दूसरे किसी ने भी एक ही रीझ में पचास हाथियों का दान (कभी) नहीं दिया था।

हे कल्याणमल के पुत्र, अपरिमित दान देने वाले वीर, एक ही हाथ और एक ही उदार (धन्य) हृदय से तूने एक साथ ही पचास हाथी दे डाले।

(इस प्रकार) बड़ा पर्व (दान देने का अवसर) प्राप्त करके, सिर पर यह सेहरा बाध कर (दूल्हा बनकर) और पृथ्वी पर यश-विस्तार करके अन्य किसी भी वीर ने मरुधराधिपति (रायसिंह) जैसे हाथी न तो दिए है और न भविष्य में दे सकेगा ही।

चित्तौड़ के राणा के यहां वरमाला पहिनने के (विवाह के) अवसर पर पद्मिनी के महलो मे जाने की तलाक पड़ते समय (जो एक-एक सीढी पर हाथी का दान देगा वही महलों मे मुख्य मार्ग से जा सकेगा—ऐसी तलाक) जगत्‌सिरोमणि रायसिंह ने हाथी दिए।

गीत बीकानेर महाराजा रायसिंघ रौ
दुरसा आढा रौ कह्यौ

रहसी जग बोल घणां दिन रासा
मोटै अब छोटै व्रन मान
हेकण मौज पचास हाथिया
दूजै किणी न दीधा दान

हेकण हाथ धिनो चित हेकण
मौज वरीसण त्रिभैमणा
सौ अधियाळ सुडाळ सांवठा
तैं दीधा कळियाण तणा

बाधे सिखर बडै अब लाधे
इळ पुड नाम बधे अनमध
दीन्हा नकौ नही कौ देसी
मारूराव जिसा मदगध

रायसिंध चीतगढ राणा
वरमाळा लेवा जिण वार
पदमण महल तलाक पडता
जग चै नैण दिया जूथार

पद्मिनी के महलों में शयन करने वाले (राजा लोग) पहले हाथियों का दान देते थे, इसी सम्मान को चित्त मे विचार कर राजा रायसिंह ने एक-एक पेड़ी पर हाथियों का दान दिया।

बीकानेर के राव कल्याणमल और चित्तौड़ के राणा उदयसिंह के इस संबंध और जसमादे तथा रायसिंह के विवाह के अवसर पर पांच सौ घोड़ों और पचास हाथियों का यह दान पृथ्वी और आकाश की समाप्ति तक चिरस्थायी रहेगा।

पदमण महल पौढतां पैली
ऐरावत देता इण आग
इळपत रासै चित आलोचे
नग नग पैडी दीन्हा नाग

गढ बीकाण चीतगढ सगपण
कलौ उदैसिंध इळ आकास
जसमा नार रायसिंघ जोडौ
पमग पाचसौ हसत पचास

उदयपुर के महाराणा भीमसिंह का गीत

आढा किसना का कहा हुआ

विधाता ने दोनों हाथ जोड़ कर कहा कि हे करतार, (मेरा तो सारा) कार्य बिलकुल ठप्प हो गया है (क्योंकि) दीवान भीमसिंह के आगे तीनों ही लोकों में (मेरे द्वारा लिखे गए) अक्षरों का बल नहीं लग पाता।

ब्रह्मा (विष्णु से) कहते हैं कि मैं जिनके कर्म (भाग्य) में काले अक्षर (दरिद्रता) लिखता हूँ (उन्हीं अभागों के) घरों पर (दान में दिए हुए) काले हाथी झूमते हैं। राणा अड़सी का पुत्र (भीमसिंह) उसकी (मेरे लिखे की) तनिक भी परवाह नहीं करता है।

ब्रह्मा ने विष्णु से जाकर कहा कि पृथ्वी पर (मेरे लिखे) अक्षरों की मर्यादा मिट गई है, (क्योंकि) राणा भीम दुष्टों (राजाओं) से राज्य छीन कर (उन्हें) दरिद्र बना देता है (और) दरिद्रों को राजा बना देता है।

(यह) अपरिमित दानी, हमीर का पौत्र (मेरे लिखे) उलटे अक्षरों को मिटा कर सुलटा कर देता है। जिनके भाग्य में बकरी बांधना ही लिखता हूँ उनके हाथी बधवा देता है और जिन्हें खेतों का स्वामी बनाता हूँ उन्हें ग्रामों का स्वामी बना देता है।

(इस पर) परब्रह्म ने कहा कि हे ब्रह्मा, व्यर्थ का विवाद और गर्व छोड़ कर अपना काम किये जाओ। इस कुल ने तो पहले

गीत उदयपुर महाराणा भीमसिंघ रौ

आढा किसना रौ कह्यौ

कर बिहुवै जोड विधाता कहियौ
काम खैंच बाधौ करतार
भीम दिवाण अगै त्रीभुवणै
लगै न अखरै जोर लगार

कह ब्रह्मा हू लिखू जकां रै
क्रम काळा अक कलम करै
नह धारै अड़सी अप वाळो
गज काळा हीडळै घरै

देवराज हू जाय कयो दुज
खोस राज रंक करै खळ
रकां राय करै भिम राणो
आका मिटी अजाद इळ

बकरी बाघ बाधदै वारण
धारण खेतां गाव धर
अंवळा मेट करै सवळा अंक
हेळ हमीर हमीरहर

भी तुम्हारे लिखे बिना ही विभीषण को लंका (का राज्य) देकर इसकी (इस बात की) परीक्षा देदी थी।

(कवि कहता है कि भगवान) रामचंद्र के अंशावतार, पार्थ के समान बाहुबली (महाराणा) भीमसिंह का प्रताप (इस) पृथ्वी पर अविचल बना रहे। (इस) उदार-हृदय चक्रवर्ती (नरेश) ने सरस्वती और लक्ष्मी को एक साथ कर दिया है (अर्थात् कवियों को दान देकर धनाढ्य कर दिया है)।

काहियौ ब्रम्ह ब्रमा कर कामो
वाद निकामो छाडे बंक
इण घर आगैहि दीध परख आ
लिखियां बिना बिभीसण लक

अस राम अवतार भीम इळ
प्रतपौ अवचळ पाणां पाथ
चक्रवत दोनुहि कीध बिलंद चित
सुरसत लिछमी हेकै साथ

महाराणा भीमसिंह द्वारा दान में दी गई घोड़ी की प्रशंसा का गीत

महादान महड़ू का कहा हुआ

कम आयु वाली, चौड़े उरस्थल वाली, दौड़ने पर (निरंतर) वेगपूर्वक आगे बढ़ने वाली, टक्कर लगने पर करोड़ों के मूल्य के गढ़ों को तोड़ गिराने वाली, जिसकी मोटी-मोटी आंखें सालिग्राम के आकार के समान हैं, जो हाथियों को भी पीछे धकेल देती है—ऐसी उत्तम घोड़ी (महाराणा) भीमसिंह ने कविराजा को प्रदान की।

(युद्ध में) शत्रुओं को पीछे ठेल देने वाली, बड़े नखरे से (चंचलतापूर्वक) लंबी-लंबी छलांगें भरने वाली, राजाओं से (कोषाधिपतियों) से भी नहीं खरीदी जा सकने वाली, जल से भरे जलाशयों (या नदियों) को लांघ जाने वाली, भलफने पर दौड़ते हुए हरिणों के कधों मे धनुष की प्रत्यञ्चा डलवा देने वाली, छलांगें भरने वाली, कच्छ देश मे उत्पन्न हुई (ऐसी) घोड़ी महाराणा (दीवाण) ने कवि को प्रदान की।

गंगाजल की तरंगों के समान दुर्गों को लांघ जाने वाली, दो तंगो से कसी जाने पर वायु के साथ छलांगें भरने वाली, अपने शौक की देवश्रशी उत्तम घोड़ी, हर्षित होकर दान देने वाले महाराणा भीमसिंह ने, अपनी कीर्त्ति के निमित्त, (कवि को) प्रदान की।

विशाल देह वाली, सुन्दर रूप वाली, दो वर्ष की आयु वाली, पालकी की भांति (सुखप्रद) चाल वाली, ढाल के समान उरस्थल वाली, धनुप के समान कंधों वाली, अत्यधिक चंचलता दिखलाने वाली (घोड़ी), हे लाल नेत्रोंवाले, रसिक शिरोमणि, उन्मत्त दातार, आपने (कवि को) प्रदान की। (अत) आपको शाबाश है !

मोडाण (विशेप प्रकार की हरिणी) की भांति, बिना पखों के ही मार्गों मे उड़ने (अत्यधिक वेग से चलने) वाली, मछली

गीत महाराणा भीमसिंघ री बख्सीस री घोड़ी री प्रसंसा रौ

महादान मंहड़ू रौ कह्यौ

दिनां थोड़ी चौडी उरां घोडी वेग बधै दौड़ी
तोडी फेट लागां गढा कोड़ीमोल तेरा
मोटोड़ी चसम्मा साळग्राम जोडी गजा मोडी
भाणवा आछोडी घोडी बगसी भीमेरा

ठेलणी अरिदां छंदा प्रलंबा हालणी ठेका
पोहां जाय न लेणो छलेणी पूर पाण
कछेरी मलेणी म्रिगां तुजोहा घलेणी कंधां
दीधो भाप लेणी पाता बलेणी दीवाण

जावै कोट उलंगी तरंगी ताछ गगी जळां
बेतगी भिडगी लाहा भरै सगी बाव
रीभगी उमंगी देवअंगी आप रगी राणै
पगो काज कीधी चगी पमगी पसाव

देह री विसाळा रूप रसाला दुसालां दीनां
चाला सुखपाला उरा ढाला कंध चाप
कोयणा गुलाल वाळा वाहै देवाळै काला
आला ताला करतो विलाला अवी आप

मोडाणा तछेरी बिना पछे री उडाणा मांगा
तलपफां मछेरी जत्रा रछेरी तयार

की भांति (वेग पूर्वक) मुड़ जाने वाली, यत्र में से खेंच कर निकाले गए तार की भांति सुधारी हुई (तैयार की गई), हाथियों को भी (वक्षस्थल की टक्कर से) पीछे मोड़ देने वाली, लाखों के मोल में खरीदी हुई, हाथियों से भी उत्तम, कच्छ देश की उत्पन्न हुई, किशोर वय की घोड़ी (आपने) प्रदान की।

सगीत की तालों पर नृत्य करने मे निपुण वह थालों पर भी नाच कर सकती है। उसकी अत्यधिक लवी छलांगों की प्रशंसा सारा संसार करता है। वह घोड़ी आने-जाने मे सचमुच ऐसी अच्छी फिरती है कि मानो शिकार के लोभ मे किसी चीती (चीते की मादा) ने छलांग मारी हो।

पुरानी लम्बी नागिन की भांति अयाल की लम्बी लटों वाली, असली धाट (प्रांत) के क्षेत्र में उत्पन्न, पीठ पर थपकी लगने पर, रान लगते ही (सवार होते ही) नटिनी की भांति, उचक कर वेगपूर्वक दौड़ने लग जाती है।

(भूरे वाघ के समान) अतुल पराक्रमी (भीमसिंह) ने यश-काव्य से प्रसन्न होकर अत्यधिक मूल्यवान घोड़ी प्रदान की, जिसकी इच्छानुसार प्रसरण करती हुई कीर्त्ति समुद्रतटपर्यन्त पृथ्वीतल पर व्याप्त हो गई। आभूषणों से सजा कर (उस) तपाई हुई (भली प्रकार फेरी हुई) घोड़ी को खोल कर जव (अश्वशाला से) वाहर लाये तो ऐसा लगा मानों भरपूर शृंगार किये हुए कोई शाहजादी हो।

पितृ तुल्य भीमसिंह ने पाबू (राठौड़) की 'काळमी' अथवा भोज (वगड़ावत) की 'वत्रळी' घोड़ी के समान, हृष्ट पुष्ट, अत्यधिक वेग वाली, द्वितीया के चन्द्रमा के समान सुन्दर मुख वाली, सेना की शृंगार रूप घोड़ी दान मे दे डाली, (जव कि दूसरे) राजा इस समय शौक के लिए भी (ऐसी घोडी) खरीद तक नहीं सकते।

गजेद्रां गछेरी लीधी खरीदै लछेरी गजां
अछेरी कछेरी कीधी बछेरी आचार

नच्चै थाळा अूपरां संगीत ताळां न्रत्तकारी
आलमाजिहान धावा बदंती अमाप
उडंडाणी आव जावां खरीती फिरती आछी
झालिया परीती चीती लीधी जाणै झांप

लंबी धूना नागणी प्रलंबी आळ लटांवाळी
अूपनी असल्ली खेत धटावाळी अेम
अिसो अूठ लागां रान उडै झटापटा वाळी
ताळी पीठ वागां नारी नटावाळी तेम

भिडंगी रूपगा रीझे आयजादी दीधी भूरै
पंगी चायजादी प्रथीरोधो सिधूपाज
लगा आभूखणा तायजादी खोल बारै लीधी
सायजादी लड़ालूम कीधा साजबाज

भाती पूर ताती ससो दोज री सारखी मुखा
असी भूप धारै न को चोज री अबार
बापो भीम पाबू री काळमी भोज री सी बूंळी
समापी मोज री घोडी फोज री सिगार

कुंवर राघवदे चूंडावत ने घोड़ा दिया उस भाव का गीत

ओपा आढा का कहा हुआ

(कवि कहता है कि आपका दिया हुआ यह) अश्वराज धरती पर एक कदम भी नहीं चलता है (और) सिर धुन कर (खड़ा) रह जाता है। इसे मैं अब किस दिशा में चलाऊँ ? हे राघवदे, आपने दिया सो तो मैंने देख लिया, पर अब आप इसे लौटालें तो लाखपसाव (लाख के मोल का दान) दिया मान लूंगा।

दुष्ट लोगों ने इसे (घोड़े को) मुझ ओपा के पीछे कर दिया, ऐसा इस कवि ने (मैंने) क्या अपराध किया था? यह आपका अश्वराज पुनः सँभाल लो तो मैं समझूंगा कि आपने मुझे श्रेष्ठ हाथी का दान दे दिया है।

(इसे) न तो डायन ही खाती है और न बाघ ही (इसके) समीप आता है। बेचने पर भी (यह) नहीं बिकता (और) एक छदाम का भी मोल (कोई) नहीं देता। हे चूंडा, आप (इस) घोड़े को वापिस ले लें (तो मैं समझूंगा कि आपने मुझे) हाथी अथवा गांव का ही दान दे डाला है।

इसकी कमर चौड़ी और छाती संकड़ी है (जब कि कमर पतली और छाती चौड़ी होनी चाहिए) तथा दंतपंक्ति आवरणहीन और कान नीचे की ओर लटके हुए हैं (सभी लक्षण विपरीत हैं)। हे कुंवर, किसी भी प्रकार इसे वापिस ले लीजिए (और कभी भी ऐसा) कुदान (किसी को) दान न दीजिए।

कंवर राघवदे चूंडावत घोड़ो दियौ तिण भाव रौ गीत

ओपा आढा रौ कह्यौ

धर पैड न चालै माथो धूणै
हाकूं केण दिसा हैराव
दीधौ सो दीठौ राघवदे
पाछौ ले तो लाखपसाव

पाप्यां घाल्यौ ओपा पूठै
कवियण कासूं खून कियौ
औ थारौ धजराज अवेरौ
दत जाणूं गजराज दियौ

डाकण भखै न बाघ अडोलै
दीधा बिकै न देवै दाम
चचळ परौ लीजिये चूंडा
गज दीधौ काइ दीधौ गाम

चौडो पूठ सांकड़ी छाती
कुरड उघाड़ो लोभा कान
लाखा बाता पाछो लीजे
कवर न दीजे दान कुदान

विक्रमसिंह की कूटनीति की प्रशंसा का गीत

राज्य रूपी समुद्र के चारों ओर के घाट (भाग निकलने के मार्ग) मंत्रणा रूपी वल द्वारा युक्ति लगा कर अपने अधिकार में करके बंद कर दिये। विक्रमसिंह की श्रेष्ट राजनीति रूपी विशाल जाल में बाल-बच्चों सहित समस्त राज्य-कर्मचारी (जल-जन्तुओं की भांति) फँस गये।

(इस नीति-जाल की) कड़ियां पूर्ण स्वामिधर्म के साथ बहुत मजबूत गढी (बनाई) गई हैं (और) सच्चे हृदय की खुली हुई डोर किनारों पर बंधी है। प्रौढ (राजनीतिज्ञ) द्वारा डाले गये इस फंदे को क्षत्रियत्व की विद्या को न पढ़े हुए ये (नादान) छोकरे कैसे पार कर सकते हैं!

(इस नीति-जाल में फसने पर) ग्राह (बड़े-बड़े अधिकारी) पूर्ण बल के साथ निकलने के लिए तड़पते हैं, कितने ही छोटे मच्छ (बिचले वर्ग के कर्मचारी) उछल-कूद करते है और राह (पाने) के लिए तृषित मछलियां (बहुत छोटे कर्मचारी) भी तड़पती हैं। जो जलजन्तु (कर्मचारी) घात करते थे (षड्यन्त्र) करते थे उन्हें दृढ बंधन मे डाल लिया है, और जिनको भी पकड़ां है उनको दृढ पाश में डाला है (पूर्णतया अपराधी सिद्ध करके पकड़ा है)।

खूमाण के चतुर पुत्र (विक्रमसिंह) ने (अपनी) धीमर-कला (मछली पकड़ने की कला) से (सभी) मत्स्य-ग्राहों को छल कर, पृथ्वी पर (उनका) गर्व खण्डित कर दिया है। जो (इस जाल में) उलझ जाते हैं उनसे कुछ भी करते-धरते नहीं बनता। (वे) न तो पुनः सुलझ कर ही (और) न जाल को चीर कर ही (बाहर आ) सकते हैं।

गीत विक्रमासिंध री कूटनीति री प्रसंसा रौ

जड़ै चौतरफ राज दरियाव घाटा जपत
सल्हा वळ मारफत अकत साहै
सह पड़ै मुसाहिब बाळ बच्चा सुदा
महा विक्रम तणै जाळ माहै

घण बळी जबर भ्रम स्याम साबत घडी
नेक मन अघडी डोर नाकै
छत्रिवट उकत पढिया नकू छोकरा
डोकरा तणै फद केम डाकै

आफळै ग्राह झींगा किता अूछळै
तडफड़ै तमगळ राह तासै
जळत्रखा घात करता जिके जकड़िया
पकडिया जिता मजबूत पासै

क्रत बिलंद सुतन खूमाण धीमर कळा
झक मकर छळया धर गरब झाड़ै
निपट उळझै जिकां ताळ लागै नही
फेर सुळझै नकूं जाळ फाड़ै

अफीम की शोभा का गीत

(इस) काले रग के (अफीम) का यश-वर्णन (वखान) कहां तक करें ! यह राग-रंग पूर्ण आनन्दोसत्वों के ठाट-वाट से प्रसन्न होने वाला, भयंकर सिंधू राग बजने पर (युद्ध छिड़ने पर) क्रोध और वीरत्व (प्रदान करने) वाला तथा चद्रमुखियों से (रस-केलि करते समय) प्रेम करने का अद्भुत मत्र है ।

जो भरपूर यौवन में वेपरवाह मस्ती करते हैं (वे यदि इसे ग्रहण करे तो उनके हृदय मे) मृगनयनी स्त्रियों के लिए नित नया प्रेम वढाता है (और उनकी) उन्मत्त कामेच्छाओं को सदा पूर्ण करता है। (इसलिए) काशी मे निवास करने वाले भैरव भी इसे रुचिपूर्वक लेकर खाते हैं ।

युद्धारभ होने पर दोनों ओर के दलों मे (जव) युद्ध की हुकारे होने लगती हैं, नगाड़ों की गड़गड़ाहट गरजने लगती है, तासे और तवल (युद्ध के वाद्य) वज उठते हैं, और भालों एव तलवारों के प्रहारों से सेनायें घायल हो जाती हैं—आहा ! ऐसे समय में अफीम अत्यत प्रिय लगता है।

(जव) रणोन्मत्त वीर (सदा से) चौगुना (अफीम) लेकर (युद्ध के लिए) चढाई करते हैं (और) आंटेदार वध वाली पगड़ियां पहिने हुए (वे) लाल नेत्रों वाले आंटीले (वांकुरे) शीघ्रता से घोड़ों को हांकते हैं, उस समय, हे श्याम वर्णधारी (अफीम) तेरे वीरत्व को गजब की शावाशी (देनी पड़ती) है।

गीत अमल री सोभा रौ

रंजै हगामां होकवा हुवै रंग राग रा
विकट सिंधू बगां आग बजराग रा
अजब चंदावदन मत्र अनुराग रा
कठा लग करा बाखाण किसनाग रा

नेह म्रिगनैणियां वधै नित नवानी
हाम पूरण सदा काम ची हवानी
जकै कर दवानो फैल हद जवानी
खांत कर लियण कासी भंवर खवानी

हूक बळ कळळ दळ बळोबळ हुवां हल
त्रहक डक डक त्रबक बजे तासा तबल
धमाधम साबळां बीजळा घाय बळ
ओह लागै गजब असी वेळा अमल

वीर कर चौगणा चढै रण बावळा
उडडी रातखिया खड़ै अूंतावळा
सूरपण झोक लागै गजब सावळा
आटियल पेच पडिया थका आवळा

(अफीम के) घोल की गहरी अंजलियां भर-भर कर पीने से (मुख-कान्ति ऐसी प्रतीत होने लगती है मानो) उदयाचल पर सूर्य उदित हो गया हो। थकित हंस सी (सुकुमारी) स्त्री आंखों (की ओर देखने मात्र) से प्रकम्पित हो जाती है, और शय्या में भोग-विलास के समय हर्ष और हास्य-विनोद की वृद्धि होती है।

(कवि कहता है)—अफीम न लेने वालों (सादे लोगों) ने (मुझे) कहा कि उन (अफीम लेने वालों) की मरने-मारने की जो बात सातों समुद्रों तक (सर्व व्याप्त) है, (वह हमें) सुनाओ। (इस पर मैंने केवल इतना ही कहा कि) जिन्होंने काले नाग के झाग (अफीम) को नहीं खाया वे जैसे आये थे वैसे ही (इस) जन्म को हार कर चले गए (अर्थात् कुछ भी नहीं कर सके)।

हास रस सेज सुविलास उपजै हरख
थाकिया हस सी रहै नैणां थरक
गाळमा. तणा भर पियां खोबा गरक
उदैगिर ऊपरा जाण ऊगौ अरक

मरण मारण तणी सात समदां मही
कहौ जी उणा री बात सादा कही
जकै नर हारिया जनम आया ज्युही
नाग काळा तणा भाग खाया नहीं

अफीम की निंदा का कीत

छत्ता का कहा हुआ

(कवि कहता है कि हे अफीम,) मैंने बड़ी मूर्खता की जो आपका साथ किया। आपके लक्षण (अवगुण) तो अब नजर आये। हे बड़े ठाकुर अमल, मेरी प्रार्थना सुनो, मेरी काया के कलंक मत लगाओ (अफीमची मत बनाओ)।

शुरूआत में (मैं ने) अनजान में दस दिनों तक ही लिया था। उस समय मुझे पता नहीं था कि ऐसी गति भी होगी। आज (केवल एक दिन) ही नहीं लेने से जँभाइयाँ आने लगीं (और) मन में अत्यधिक चिन्ता व्याप्त हो गई।

जब (तुम्हारी) मनुहार हुई तो (इनकार करने पर) इस प्रकार कहा कि व्यर्थ का विवाद करके क्यों झगड़ते हो ? यदि एक-दो (अथवा) चार दिन अमल की मनुहार बन पड़े तो क्या बिगड़ जाता है ?

यह कथन सुना तब आपका संग किया था, (पर अब) छल करके (मेरी) फजीती क्यों करते हो ? रात-दिन आप ही के रंग मे रमे हुए (मुझ) 'छत्ता' का (कृपा करके) इस बार तो पीछा छोड़ दो (अर्थात् भविष्य में ऐसी गलती नहीं करूंगा)।

गीत अमल री निंदा रौ
छत्ता रौ कह्यौ

कियौ आपरौ संग मै बडी भोळप करी
आप रा लखरण अब नजर आया
अरज सुरण माहरी बडा ठाकर अमल
कळंक मत लगाड़ै मूझ काया

थेट सू लियौ दस दिवस भोळै थकै
जिका मैं इसो गत नांह जारणी
आज नह लियौ आवरण लगी उबासी
अत घरणी फिकर मन मांह आरणी

करी मनवार जद अेम सारां कह्यौ
झूठ री झौड कर कई झगड़ै
अेक दिन दोय दिन चार दिन अमल री
बरणै मनवार तौ किसूं बिगडै

कथन औ सुण्यौ जद आप रौ संग कियौ
कपट कर माजरणा काय काढौ
रयौ निस दिवस लग आप रंग रता री
छता री हमरकै गेल छाड़ौ

जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह को कहा हुआ गीत

पहाड़ों पर मोर बोलने लगे, सरोवरों में दादुर ध्वनि करने लगे (और) गुणी लोगों (संगीतज्ञों) ने मल्हार (वर्षाकालीन राग) गाना प्रारंभ कर दिया। हे अभिनव मालदे, अब तो हमारी सुनो! हे अजीतसिंह, वर्षा ऋतु आ गई है, (अब तो हमें) विदा दो!

मोर नाच रहे हैं, सरोवर स्वच्छ जल से पूर्ण हो गए हैं, वृक्षों की प्यास मिट गई है (और) भगवान् प्रसन्न हो गए हैं। हे जसवतसिंह के परम पराक्रमी पुत्र (अजीतसिंह), पर्वत-शिखरों पर बिजलियां चमक रही हैं, (और सर्वत्र) वर्षा हो रही है, (अब तो) सेवकों को (घर के लिए) विदा कर!

कोयलें कुहुक रही हैं, रींछनियां पहाड़ों पर चढ रही हैं और पश्चिम का पवन चलता हुआ रुक गया है। हे मरुधराधिपति अजीतसिंह, पंथ शीतल (मेघाच्छादित) हो गए हैं और पृथ्वी हरित वर्ण हो गई है, (अब तो घर जाने की) आज्ञा दीजिए!

हे नवकोटि (मारवाड़) के स्वामी, दान की जागीरे (हमे) दो (जिससे) आपका यश गाये और घर की ओर प्रस्थान करें। हे हिन्दुओं के सिरमौर, अब वर्षा-काल आ गया है (और) कविगण (चारण) निवेदन कर रहे हैं कि (हमें घर जाने की) आज्ञा मिल जाये!

गीत जोधपुर महाराजा अजीतसिंघ नैं कह्यौ

गिरा बोलिया मोर दादर सरां गहकिया
गुणियण राग मल्हार गायौ
अभिनमा मालदे हमे साभळ अरज
अजा दे सीख बरसाळ आयौ

सिखड नाचै सुजळ पूरिया सरोवर
तरा तिस गई करतार तूठौ
सेवगां बिदा कर जसा रा सहसबळ
बीज सेहरा खिवै इद्र बूठौ

पिक करै कोहक रीछी चढी पहाडां
बाजतौ रयौ पच्छम तणौ बाळ
पंथ सीतळ हुवा हुई लीली पुहम
रजा दीजै अजा मारवाराव

सांसण बगस नवकोट रा सैधणी
जस करां रावळौ घरै जावां
हिंदवा छात बरसाळ आयौ हमै
पात अरजा करै सीख पावां

संयोग शृङ्गार का गीत

परदेश जाते हुए प्रियतम से प्रियतमा इस प्रकार कह रही है—हे वल्लभ, वर्षा ऋतु आ गई है, चारों ओर मल्हार राग गाई जा रही है, (ऐसी रसीली ऋतु मे) पति के विना स्त्री कैसे जीवित रह सकती है ?

जल और स्थल एक साथ (एक स्थान पर) हो गए हैं, पृथ्वी पर (झुके हुए) लोर बरसने लग गये हैं पुराने तालावों में मेढक जग उठे (शोर करने लगे) हैं । कामिनी कहती है, हे कंत, दुःखों का अत हो गया है ।

(जब बादलों की) सातों तहों में बिजली सुशोभित हो रही हो (और) झुक-झुक कर ऊपर आ रही हो (तथा) जल से अघा कर वृक्ष पर्वत-शिखरों पर छा रहे हों—ऐसी ऋतु में कौन विदेश जायेगा !

देखिए तो सही, कोयल और मोर (आनदातिरेकजन्य) मधुर ध्वनि कर रहे हैं (और) दादुर की (तो) शोभा (ही) निराली है। सेवकों ने घोड़ा (कस कर) तैयार कर दिया है, (पर आपको) हमारी सौंगध है, मत जाइये ।

कमर मे दुकूल का बध लगा कर यह विदेशी वेष क्यों बना लिया है ? हे मदमत्त, (मेरे) निवेदन को ठुकराओ मत ! हे रंग-रसिक, घर ही में विराजे रहो !

गीत संजोग सिणगार रौ

पिव जातां परदेस कहै इम प्यारी
बालम रुत आई बरखा री
माचो दिस दिस राग मल्हारी
नाह बिना जीवै किम नारी

जळ थळ हुवौ एक ही जागा
लूंबिया लौर बरसबा लागा
कामण कहै कथ दुख भागा
जूना सरां डेडरा जागा

सातूं हि पड़दां बीज सुहावै
ओसर या ऊपर झुक आवै
छक छक तरू गिरा सिर छावै
जिण रुत कवण विदेसां जावै

कोयल मोर करै किलकारी
निरख निरख दादुर छिब न्यारी
ताजी चाकर कीध तयारी
हालो नह है सूंस हमारी

दुपटै पेच कमर रा दीधा
कासू भेस विदेसी कीधा
पाछी अरज म दे मदपीधा
रहजो रंगरसिया घर रीधा

हे सरदार, अब हुक्म दीजिए (जिससे) चंचल घोड़े तैयार (प्रस्तुत) करूं। (बादलों की गरज से) आकाश प्रकम्पित हो रहा है (और) मेघों की जल-धारायें (लेकर) सावन (मास) आ गया है। (अब) सिकार खेलो !

हे स्वामी, (हम) आपके चरणों की सेवा करेंगी, जैसी आज्ञा देंगे वैसा ही पालन करेंगी। पर, यदि आपके जाने की (बात भी) कानों से सुन लेंगी तो प्राण छोड़ देंगी पर (आपको) जाने (विदेश गमन करने) नहीं देंगी।

दीजे हुकम हमैं सिरदारां
त्यार करूं ताता तोखारां
धूजै अंबर मेहाजळ धारा
सावण आयौ खेल सिकारा

सायब कदम आप रा सेहां
हुकम करौ ज्यूं हुकमी व्हैहां
स्रवण जे'र चढण सुण लेहां
प्राण तजां पण जाण न देह

वियोग श्रृङ्गार का गीत

बारठ लच्छीराम का कहा हुआ

आम्रवृक्ष मजरियों से लद गये और उनमें कोयलें बोल (कूक) उठीं। कामदेव का वरण करने वाली वसंत ऋतु आगई है। घरों मे (सयोगी) स्त्री-पुरुष (हर्षजन्य) सवाई कांति से युक्त होगए (और) उसी प्रकार विरही जनों के मुखों पर उदासी छा गई।

शीतल, मद और सुगधित पवन के झोंके चल रहे हैं। (ऐसे समय मे संयोगी) जनों को देख कर प्रोषितपतिका (नायिकाओं) के (हृदय में) अग्नि-ज्वालायें (धधक उठी हैं)। कामदेव (पुष्पसायक) के विषाक्त बाण (हृदय को वेध कर) पार निकले जाते है और नवयौवना (नायिका) कपित होकर (आकंपन अनुभाव जागृत कर) काम-चेष्टाएं करने लगती है।

(इस वसंत ऋतु में) साजों (डफ आदि) की गड़गड़ाहट (ध्वनि सुनाई पड़ती है और) गुलाबी रंग की (रसिकों की) पगड़ियाँ (दिखाई देती हैं)। गुलाब के रक्तवर्ण के इत्र से (छैलों के वस्त्र) सरोबार (रहते हैं), राजगृहो मे गुलाब जल का छिड़काव (होता है तथा लोग) गुलाब के (पुष्पों से बने हुए) आभूषणों से लदे रहते है।

केसरमिश्रित स्वच्छ जल से भरे हुए हौजों मे कुमुद (पुष्प, और मन को) हर्षित करने वाले फव्वारे अद्भुत शोभायमान हो रहे है। ऐसी उद्दीपक (सामग्री को) देख कर सज्जन (नायक) अति शीघ्र मृगनयनी (नायिकाओं) से मिलने के लिए (उनका) स्मरण करते हैं।

सुखी (सयोगी) लोग (तो) कहते हैं (कि यह) वसंत ऋतु भली ही आई (और) दुखी (वियोगी) लोग उन्मत्त हृदयों से (इस) बात को सुनी-अनसुनी कर देते है। संयोगी लोग स्त्रियों के साथ क्रीड़ाये कर रहे हैं और वियोगी कामिनियों के बिना बिलख रहे हैं।

गीत विजोग सिणगार रौ

बारठ लच्छीराम रौ कह्यौ

दिया कोयला साद अब थया मौरा लदन
सदन दंपत थया दुत सवाई
ताम विरही जणा वदन आतंस पडी
आगमण मदन रुत बसंत आई

पेख जण पोखतां अगन झाळा पडै
छछाळा सीत मंद सुगध छूटै
कपै नवजोबना इसक चाळा करै
फूलवाळा विसक पार फूटै

गडागड़ साज तहताज रंग गुलाबी
रत अतर गुलाबां सडक रहणा
गाहां छत्रधरां छडकाव रंग गुलाबी
गुलाबी पुहप गरकाब गहणा

कुमकुमा हौद भरिया सुजळ कमोदण
फुहारा मोद अदभूत फावै
इसौ लख उदीपण सैंणिया अचारै
तुरत म्रिगनैणिया मिलण तावै

भणै नर सुखी रित बसंत आई भलां
दुखी अमणौ दिला बात दुलखै
संजोगी भामणी सहित क्रीडा सजै
विजोगी कामणी बिना विलखै

सपूत का गीत

कविया हिंगलाजदान का कहा हुआ

(जो) श्रवणकुमार की भांति (माता-पिता के प्रति अपना) प्रेम प्रदर्शित करता है (और) निष्कपट हृदय से (उनकी) मंगल-कामना करता है, (ऐसे पुत्र को) धन्य है (और) धन्य है उनको (भी) जिन्होंने ऐसे पुत्र को जन्म दिया, (जो) मातापिता को तीर्थ (तुल्य) माने।

(जो माता-पिता की) सेवा करे, (उनकी) आज्ञा का पालन करे, मात-पिना को शीर्षस्थ (अत्यंत आदरपूर्वक) रखे (और) स्वयं पैरों की धूल (अत्यत विनीत होकर) रहे वही सुपुत्र (के यश) का लाभ प्राप्त कर सकता है।

(जो) प्रातःकाल (माता-पिता के दर्शन करके) अत्यधिक मधुर वचनों द्वारा कहे (कि मुझे) भले ही दर्शन हुए हैं (और जो) माता-पिता के तन-मन का उत्तम भोजन (तथा) वस्त्रों से (सदा) पोपण करे (वही सुपुत्र कहलाने योग्य है)।

(जो) सच्चे मन से (अपनी) सामर्थ्य के अनुसार (माता पिता को आदरपूर्वक) रखता है (और) बड़े धैर्यपूर्वक सहज (भाव से उनके) अनुकूल आचरण करता है—ऐसा सुपुत्र तो तीनों लोकों में तलाश करने पर (भी) विरला ही मिल पाता है।

गीत सपूत रौ

कविया हिंगळाजदान रौ कह्यौ

सरवण री रीत प्रीत सरसावै
चावै कुसळ अूजळै चीत
जाया भलां धिनो धिन जानै
मानै कर तीरथ माईत

हीडा करै हुकम मे हालै
लाभ सपूती तणौ लहै
माईता राखै सिर माथै
रज पावां री आप रहै

दाखै फजर भला मुख दीठां
मीठा बचना न को मणां
पोखै सद भोजन पूगरणा
तन मन माता पिता तणा

साचै मन राखै घर सारू
बैठै सहज घणी बरदास
बेटौ इसौ मिलै जे विरळौ
तिरळीकी मा किया तलास

कपूत का गीत

कविया हिंगलाजदान का कहा हुआ

कुपुत्र (वह है जो माता-पित्ता का) कुछ भी कहना नहीं माने, भरपूर यौवन में गर्वोन्मत्त हुआ रहे, (अपनी) अर्द्धाङ्गिनी को कमाई (अपने द्वारा उपार्जित द्रव्य) दे और माता-पिता को अपयश दिलाये।

(जो) शयनागार में (स्त्री द्वारा दी गई) उचित शिक्षा पढ़कर (कुशिक्षा ग्रहण कर) कटु वचनों से (मात-पिता के हृदय को) दग्ध करता रहे, (जिसकी) अर्द्धाङ्गिनी (तो) घी-गेहूँ जीमे (और) दरिद्र मां भूख मरे।

(जो) कुपुत्र (स्वयं तो) गद्दे-रजाई का उपयोग करे (और जिसका) पिता गुदड़ी के नीचे पड़े (भूमि पर शयन करे)। (जो) लाडला (?) बूढ़ों (माता-पिता) से लड़ता रहे (और) मुँह से भी (उनसे) मधुर भाषण नहीं करे।

(जो) हृदय को शीतल करने वाला श्रवणकुमार (की तरह) न होकर हृदय को जलाने वाला कंस (की तरह) हो—(ऐसे कुपुत्र के जन्म पर तो) व्यर्थ ही थाली पीटी (वजाई) जाती है। (लेकिन क्या किया जाए) कलियुग ने कुए में भाग ही डाल दी है (सभी जल पीने वाले पागल हो गए हैं—अर्थात् कलियुग मे सभी कुपुत्र हो गए हैं)।

गीत कपूत रौ

कविया हिंगळाजदान रौ कह्यौ

कहियो फरजद न मानै काई
छक तरुणाई मछर छिलै
महळी नूं तो मिलै कमाई
माईतां नूं भूड मिलै

पढ पढ ठीक सीख पडवा मां
कडवा वचनां दगध करै
नीमै घी गोहूं जोडायत
मा तोडायत भूख मरै

बरतै सोड़ सोडिया बेटो
पैमद हेटौ बाप पडै
मूडा हूत न बौलै मीठो
लालौ बूढा हूत लडै

सरवण न हुवै हियौ सिळावण
हियौ जळावण कस हुवै
थोथै काम कुटीजै थाळी
कळजुग राळी भाग कुवै

मुर्गे का (मरसिया) गीत

नवलदान लालस का कहा हुआ

रे कायर मुर्गे, कोई क्या करे, काल बड़ा निकम्मा है। यदि मैं (यह) जानता कि तू (अकस्मात् ही सदा के लिए) चला जायेगा तो अनेक प्रकार से यत्न करता।

अर्धरात्रि में वर्षा होने लगी, हवा के झोंके लगने से (तू स्वय भी) झोंके खाने लगा—(ऐसे समय में हत्यारी) बिल्ली ने मौका देख कर घात किया (तुम्हें दबोच लिया)। हे मधुर ध्वनि करने वाले, (एक वार तो) लौट कर आ जाओ!

(अपनी मधुर) ध्वनि सुना कर स्नेहसहित ऊँचे हरे वृक्ष पर (उड़ कर) बैठता था। तीसरे पहर तीखे स्वर में दो टहूके (बाँग) देता था।

(तेरी प्रिय) इमली फूलों (और) फलों से प्रफुल्लित हो उठी है। (उसकी मौज लेने के लिए) एक वार तो फिर आओ! हे कलंगी धारी, स्वजनों के बीच फिर कर दो एक (मीठे) वचन (तो फिर) सुना जाओ!

गीत कूकड़ा रौ (मरसियौ)
नवलदान लाळस रौ कह्यौ

कायर कूकडा रे को कासू कीजै
काळ बडौ बेकाजा
जे तोनू जाणू जावतडौ
जतन करावत जाझा

आधी रात मेह पण आयौ
झाट पवन पड़ झोला
दगौ कियौ मिनडी पुळ देखे
बाहड मीठाबोला

बोल सुणा अूचो पण बहतो
हरियै रूंख सहेतौ
तीजै पोहर तणौ सुर तीखै
दोय टहूका देतौ

फूलां फळां आंबली फूली
अेकरसां भळ आजे
सैणां बीच बहे छोगाळा
दोयक साद सुणाजें

गीत

राठौड़ प्रिथीराज का कहा हुआ

तू प्रियतमा के साथ आनंद-केलि करता था (और पास में) पर्याप्त दास, खवास और धन-राशि थी। (पर), हे कल्याणमल, कभी नारायण (भगवान) का नाम नहीं लिया (और) व्यर्थ ही (संसार से) उठ चला।

शृङ्गार किये हुए सुसज्जित सुन्दरी (स्त्री) और धन-दौलत पास में ही मन्द-मन्द मुस्कुराते रहे। बहुत परिवार (और) कुटुम्ब (के बंधनों) से आवद्ध (प्राणी) हरि (नामस्मरण) के बिना जीवन हार गया।

जो आनंदपूर्ण शुभ्र अट्टालिकाये (नगर की) शृंगार तुल्य सुशोभित थीं (वे उनका उपयोग करने वाले मानव की मृत्यु पर व्यङ्गच पूर्वक) हँसती रह गई। लाखों का स्वामी लम्बी यात्रा पर (जाते हुए भी किसी को) अभिवादन (तक) नहीं भेज सका।

भाई-बन्धु (और सारा) कुटुम्ब एकत्रित होकर (कहने लगा) कि एक पल भी (इस) मृत शरीर को मत रखो (तथा) शीघ्रतापूर्वक (इस मृत) शरीर को कंधों पर उठाओ। (सारा) कुल—निकालो निकालो—कहने लगा।

घोड़े पैरों से भूमि खोदते (ही और) उन्मत्त हाथी पैरो से लौह शृंखला बजाते ही रह गए। सिंहासन पर बैठने वाला,

गीत

राठौड़ प्रिथीराज रौ कह्यौ

सुखरास रमंता पास सहेली
दास खवास मौकळा दाम
न लियौ नाम पखैं नारायण
कलिया उठ चलिया वेकाम

माचा पास रही मुळकती
सजि सुंदरि कीधा सिणगार
बहु परिवार कुटंब चौ बाधौ,
हरि बिन गयौ जमारौ हार

हास हसंता रह्या धौळहर
सुखमैं राजत जे सिणगार
लाखां घणी प्रयाणैं लाबैं
जाना नह भेजिया जुहार

भाई बंध कडूबौ भेळौ
पिड न राखौ हेक पुळ
चापरि करे अग सिर चाढौ
काढौ काढौ कहै कुळ

असिया रह्या पग आफळता
मदभर खळहळता मैंमत

वाहुल्य का स्वामी, पैदल ही (अपने) रास्ते पर (परलोक यात्रा पर) चल पड़ा ।

अर्द्धाङ्गिनी देहरी तक (उसके पीछे) दौड़ी (और) मां-वहिनें वहिद्वार (फलसे) तक (उसके चारों ओर) फिरीं । मरघट में कुटुम्बियों का मेला (जमघट) लगा । (पर), किसी ने भी (उससे) सुख-दु ख की वात नहीं की ।

(जो) कोमल शरीर (सुकुमार) कलियों (के स्पर्श) को भी नही सहन करता था (वही) अग्नि-ज्वालाओं का ताप सहन कर रहा है । (ऐसे सुकमार) शरीर को लकड़ी से धड़ाधड़ कुरेदा और टुकड़े-टुकड़े करके जला डाला ।

(जो) शरीर को केसर और चदन से चर्चित करता था, जिसके ऊपर भ्रमर मँडराते थे (वही) राख के वस्त्रों से सुसजित हुआ, और श्मशान मे घर (वना कर रह रहा है) ।

(जो धन) उसने उपार्जित किया सो जमीन खोद कर गाड़ दिया (परोपकार में व्यय नहीं किया) । साथ में एक तिनका भी नहीं जा पाया । (उस पंचभूत के पुतले का) पवन तत्व पवन मे समा गया और पृथ्वी तत्व मिट्टी मे जा मिला ।

बहळौ धणी सिंघासण वाळौ
पाळौ होय हालियौ पंथ

देहळी लग महळी पिण दौडी
फळसा लग मा बहण फिरी
मडहट लगौ कुटुंब चौ मेळौ
किणियन सुख दुख बात करी

कोमळ अंग न सहतौ कळिया
ताती झळिया सहै तप
घडी घडी कर तडी धीवियौ
बडी बडी बाळियौ बप

केसर चनण चरचतौ काया
भणहणाता ऊपर भ्रमर
रजियौ राख तणै पूगरणै
घणा मुसाणा बीच घर

खाटी सो दाटी घर खोदे
साथ न चाली हेक सिळी
पवन ज जाय पवन बिच पैठौ
माटी माटी मांहि मिळी

गीत

ओपा आढा का कहा हुआ

हे त्रिविक्रम (भगवान), आप (मार्ग से) भटके हुओं के मार्ग, पितृगृहविहीनों के पितृगृह (और) निराश्रितों के आश्रय (हैं)। मातृविहीनों की माता और, पितृविहीनो के पिता (भी) तुम ही हो।

हे अलख, तुम ही आलसियों के उद्यम हो, हे (ससार के) पालक, तुम ही पंखविहीनों के पख हो । तुम ही पंगुओं और टूटों के पग और हाथ हो। हे परमेश्वर, तुम ही अंधों की आंख हो।

हे परमेश्वर, तुम प्यासों के लिए पानी (और) भूखे सतों के लिए स्वादिष्ट भोजन हो । हे गिरधारी, तुम ही गूंगों की वाणी और हे महान् मेधावी, तुम ही बड़े हो।

हे व्रजवासी, थके हुओं के विश्राम (और) जल में डूबते हुओं की जहाज तुम ही हो। हे नारायण, तुम गृहहीनों के घर हो (और) हे महाराज, रोगियों के औषध (भी तुम ही) हो।

विपत्ति में सपत्ति (देने वाले) सच्चे स्वामी (तुम) हो (जो) स्मरण करते ही तुरन्त आते हो। से स्वामी (तुम) विषम घाटों के यात्रारक्षक (और) दुष्कालों के सुकाल हो ।

गीत

ओपा आढा रौ कह्यौ

पांतरिया बाट नपोरां पीहर
आळंबन निरधारां आप
तू तो मात नमायां तीकम
बापौ तु ही नबापा बाप

अलख तु ही आळसियां उद्दम
पाळग तुंही नपखा पाख
तूं पग हाथ पागळा टूटा
आधां तू परमेसर आख

परमेसर तू त्रसियां पाणी
सत भूखियां साक रसाळ
गूंगां वाच तुं ही गिरधारी
बडो तुं ही है अकल विसाळ

ब्रजवासी थाका वीसामौ
जल बूडा री तुं ही जिहाज
नीघरियां घर तू नारायण
मादा रौ औखद महाराज

साचौ धणी विपत में संपत
तेड्यौ आवै तीजी ताळ
विखमी घाट तणौ वोळाऊ
सांइ दुकालां तणो सुगाळ

तुम ही बेड़ियों के ताले तोड़ने वाले हो (और) पैदल चलने वालों की सुखपाल (पालकी) तुम (ही) हो। हे अनेक नामधारी, आवरणहीनों के लौहनिर्मित कवच और ढालविहीनों की ढाल (रक्षा) (तुमही) हो।

ओप आढा कहता कि हे ईश्वर, (मैं) नित्य हृदय में आपका नाम रखता (स्मरण करता) हूँ (क्योंकि) दुःखों से सुख देने वाला तू ही है (और) हे राम, उजडे स्थान की बस्ती (भी) तू (ही) है।

तोडण तुं ही बेडिया ताळा
पाळा री तूं है सुखपाल
बौहनामी अूघाड़ां बखतर
ढळियौ लोह नढाला ढाल

ओपौ आढौ कहै ईसवर
नित राखूं चित थारौ नाम
तसती माय देण सुख तूं ही
रान तणी बसतो तूं राम

हल की तारीफ का गीत

बारठ हरदान का कहा हुआ

हे हरदान, मन मे हठ मत कर, हल चला! (यदि याचना ही करनी है तो) श्रीकृष्ण (भगवान) की याचना कर, जिससे दरिद्रता मिटे। दूसरे लोगों से (तेरा) अभाव नहीं मिटेगा। (अतः) गीतों को छोड़ दें (और खेती की जमीन ठीक करने के लिए) फोगों (जगली पौधों) को काट!

उत्तम बैल, हल की साज-सज्जा और हाथों मे फावड़ा और कुल्हाड़ा (रखो)! जन-जन के आगे याचना करते फिरते हो (जिसका कारण यह है कि) हल (बीज डालने की नली के पति) की सेवा नहीं की।

रिणी गया, फतेहपुर गया (और) बाव तथा फलोदी-दोनों (जगहों पर भी) गया। बीकानेर और हिसार के बीच (भी फिरा, पर) हल के समान (दानी) मुझे कोई नहीं मिला।

(यदि) अच्छी वर्षा हो (तो) ऊनालू (फसल भी अच्छी) हो जिससे सारी गरज पूरी हो जाए। (यदि) चार महीनों तक (हल की) चाकरी करो तो (यह कुश का पिता हल) निहाल करदे।

गीत हल री तारीफ रौ
बारठ हरदान रौ कह्यौ

हरिया हळ हाक मती कर मनहठ
जाच किसन ज्यू दाळद जाय
अवरां नरा न भाजै अूणत
गीत फिटा कर फोग गुड़ाय

सखरा बळद हळा री सांजत
कसी कुहाडौ हाथ सही
जण जण आगै फिरै जाचतौ
नाईवर सेवियौ नही

फिरियौ रिणी फतैपुर फिरियौ
फिरियौ बाव फळौदी दोय
बीकानेर हंसार विचाळै
कूवा जिसौ न मिलियौ कोय

आछा मेह हुवै अूनाळ
सारी जिण सूं गरज सरै
चार महीना करौ चाकरी
कुस रौ बाप निहाल करै

टिप्पणियाँ

पृष्ठ २–३

प्रस्तुत गीत के रचयिता बांकीदास 'आसिया' शाखा के चारण थे। ये जोधपुर के महाराजा मानसिंह के कृपापात्र तथा विद्यागुरु भी थे। इनका जन्म जोधपुर राज्य के भाडियावास नामक गाव मे सवत् १८२८ मे तथा मृत्यु संवत् १८९० मे जोधपुर मे हुई। ये डिंगल, सस्कृत, फारसी आदि भाषाओ के पडित और इतिहास के अच्छे ज्ञाता थे। इनके बनाये हुए २७ पद्य ग्रथो के अतिरिक्त अनेक फुटकर गीत तथा २८०० के लगभग ऐतिहासिक बातो का सग्रह भी है।

इस गीत की जाति 'वेलियो साणोर' है। इसकी प्रथम चार पक्तियो में क्रमश १८, १५, १६, १५, मात्राये तथा शेष दोहो मे १६, १५, १६, १५, मात्राये होती हैं। तुक के अंत में गुरु लघु आते हैं।

गीत मे 'करणी' की स्तुति की गई है। चारण जाति मे उत्पन्न यह अलौकिकशक्तिसम्पन्ना नारी चारणो, राजपूतो तथा अनेक जातियो द्वारा देवी के रूप मे पूजी जाती है। बीकानेर जिले मे देशनोक नामक स्थान पर इनका मढ बना हुआ है। इनका समय १५–१६ वी शताब्दी है।

पृष्ठ ४–५

प्रस्तुत गीत 'छोटो साणोर' जाति का है। इसके प्रथम दोहले मे १९, १४, १६, १४ तथा शेष मे १६, १४, १६, १४ का क्रम रहता है। दूसरे तथा चौथे चरणो की तुक कही गुरु तथा कही लघु से मिलती है।

पृष्ठ ६–७

यह 'सोहणो साणोर' जाति का गीत है। इसके प्रथम दोहले मे १९, १४, १६, १४ तथा शेष दोहो मे १६, १४, १६, १४ का क्रम रहता है। तुकात मे लघु गुरु होते हैं।

पृष्ठ ८-९

यह 'वडो सारणोर' जाति का गीत है। इसके प्रथम दोहे में २३, १७, २०, १७ तथा शेष दोहों में २०, १७, २०, १७ का क्रम रहता है। तुकान्त में कही गुरु-लघु, कहीं लघु-गुरु तथा कहीं दो गुरु आते हैं।

पृष्ठ १०-११

यह भी 'वेलियो सारणोर' जाति का गीत है जिसका लक्षण पृष्ठ २-३ की टिप्पणी मे दिया गया है। इसके प्रथम दोहे की दूसरी और चौथी पंक्तियों के तुकात मे पाद पूरक 'ह' जोड कर मात्रा की पूर्ति की गई है।

पृष्ठ १२-१३

इस गीत के रचयिता नवलदानजी लालस (चारण) का जन्म जोधपुर राज्य के शेरगढ परगने के जुटिया नामक गाव मे सवत् १८२५ में हुआ था। इनके पिता का नाम रेळदान था। आठ वर्ष की अवस्था मे ही अनाथ हो जाने के कारण इनका पालन-पोषण पाटोदी के ठाकुर ने किया। वही साईदीन नामक एक फकीर से इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। साईदीन इनको आबू पर्वत पर ले गये और वहीं इन्होंने अपने गुरु की आज्ञा से 'आबू वर्णन' के 'रेणकी' छंद बनाये। इनकी बनाई हुई दो रचनायें और हैं जिनमे 'आठवें रो रुपक' एक है।

ये महाराजा मानसिंह के कृपापात्र थे। जालोर के घेरे मे जिन सतरह चारण कवियो ने महाराजा का साथ दिया था उनमें नवलदान भी थे। महाराजा ने सभी कवियो को जागीरें दी पर इन्हे कुछ नही मिल पाया। इस पर ये एक रोज अपनी जूतिया कपड़े में लपेट कर बगल मे दबा कर दरबार मे ले गये। महाराजा के पूछने पर कि 'कौनसी पुस्तक लाये हो' 'इन्होंने उत्तर दिया-जूतिया लाया हूं।' मेरी इतनी सामर्थ्य नहीं कि जूतिया बार-बार खरीद सकू।' इस पर महाराजा ने इन्हें नहरवा नामक गाव जागीर मे दिया।

इनका देहात सवत १८८७ मे हुआ। इनके राजूराम तथा पीरदान नामक दो पुत्र थे। राजस्थानी के प्रसिद्ध विद्वान श्री सीतारामजी लालस

आपसे पाचवी पीढी मे हैं।

एक वार वे प्रसिद्ध विद्वान वाकीदास आसिया से वहस कर वैठे। वाकीदासजी का कहना था कि खूब अध्ययन करने से ही कविता अच्छी वनती है, पर नवलदानजी ने कहा कि कविता मे तो उक्ति देखी जाती है। प्रस्तुत गीत उसी प्रसग मे कहा गया है।

गीत की जाति 'प्रहास साणोर' है जिसके प्रथम दोहे मे २३, १७, २०, १७ तथा शेष दोहो मे २०, १७, २०, १७ का क्रम और तुकात मे दो गुरु आते हैं।

पृष्ठ १४–१५

यह 'वेलियो साणोर' जाति का गीत है जिसका लक्षण पृष्ठ २–३ की टिप्पणी मे दिया है। इसके प्रथम दोहे की प्रथम पक्ति मे १८ के स्थान पर १६ मात्रायें ही हैं। ऐसे अपवाद प्रायः मिल जाते हैं।

सागर 'सिद्ध'—सागरजी जयपुर राज्यान्तर्गत सेवापुरा के रहने वाले कविया शाखा के चारण थे। ये वडे भक्त तथा चमत्कारी थे जिससे इन्हे 'संत' 'सिद्ध' आदि नामो से पुकारा जाता है।

कवेसर हुकमो–हुकमीचद खिडिया जयपुर राज्यान्तर्गत वनेडिया नामक गाव के रहने वाले चारण थे। डिंगल गीतो के श्रेष्ठ रचयिताओ मे इनकी गणना की जाती है।

महडू—महादानजी महडू जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के समकालीन थे। इनका जन्म संवत् १८३८ मे हुआ था। जोधपुर राज्य के 'पाचेटिया' नामक गाव मे इनकी ननिहाल थी और मेवाड मे 'सरसिया' नामक गाव के ये रहने वाले थे। इनकी वनाई हुई महाराणा भीमसिंह की झमाल प्रसिद्ध है।

भादो—अमराजी अथवा किसनाजी भादा (?)

नोट—प्रस्तुत गीत के दूसरे दोहे के अनुवाद मे अलूजी कविया तथा जगाजी खिडिया के नाम दे दिये गये हैं, पर वास्तव मे सागरजी कविया

तथा हुकमीचंदजी खिडिया के नाम ही दिये जाने चाहिए थे। डिंगल गीतों की वर्णन परम्परा के अनुसार जो वर्णन गीत के प्रथम दोहे मे किया जाता है प्राय' उसी को बाद के दोहो मे प्रकारान्तर मे दुहराया जाता है। प्रथम दोहे की दूसरी पंक्ति मे 'नृपति महेनहरो बुधवान' मे किन दो कवियों की ओर सकेत किया गया है यह स्पष्ट नही है। चार पदार्थो की तुलना मे चार कवियों का वर्णन ही यहा अभीप्ट है।

पृष्ठ १६-१७

गीत के रचयिता रावराजा देवीसिंह कछवाहा (शेखावत) है। शेखावाटी (जयपुर) मे सीकर नामक ठिकाना इनका था।

गीत की जाति 'छोटो साणोर' है जिसका लक्षण पृष्ठ ४-५ की टिप्पणी मे वर्णित है।

पृष्ठ १८-१९

गीत के रचयिता 'बाकीदास' का परिचय पृष्ठ २-३ की टिप्पणी मे दिया गया है।

गीत की जाति 'वडो साणोर' है जिसका लक्षण पृष्ठ ९-१० की टिप्पणी में दिया गया है।

पाबू—राठोड पाबू धांधलोत का समय चौदहवी शताब्दी है। इन्होंने देवल नामक चारणी से 'कालमी' नामक उत्तम घोडी यह वचन देकर ली थी कि चारणी की गायो की रक्षा का बुलावा आने पर वे तुरन्त आयेंगे। जब पाबूजी ऊमरकोट (सिंध-पाकिस्तान) मे वहा के सोढा शासक की पुत्री से विवाह करने गये हुए थे तो पीछे से उनके जामाता जीदराव खींची ने देवल चारणी की गायो का अपहरण कर लिया। चारणी ने पाबूजी को सहायता के लिए कहलवाया और वे विवाह के बीच मे ही उठ कर गायो को लौटा लाने के लिए चल दिये। युद्धस्थल मे वडी वीरतापूर्वक वे काम आये। वचन-पालन और कर्तव्य-परायणता के इसी श्रेप्ठ उदाहरणस्वरूप पाबूजी राजस्थान मे

देवता की तरह पूजे जाते हैं। इनकी गणना पाच पीरो (सिद्धो) मे की जाती है। इनके भक्त 'थोरी' जाति के लोग रावणहत्था नामक वाद्य-यन्त्र पर इनकी कीर्ति गाते गाव-गाव फिरते हैं। पाबूजी के यश-काव्य को 'पाबूजी का पवाडा' कह कर पुकारा जाता है।

पृष्ठ २०-२३

प्रस्तुत गीत सादू हू पा के स्थान पर महादान महडू द्वारा रचित माना जाता है, जिनका परिचय पृष्ठ १४-१५ की टिप्पणी मे दिया गया हैं। गीत के नायक भी जैसलमेर के रावल दुरजणसाल न होकर भाटी दुरजणसाल को माना गया है जो मरहठो से युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए थे।

सादू हू पा जैसलमेर के रावल दुरजणसाल के समकालीन थे। जब रावल युद्ध में खेत रहे और उनका मुण्ड असख्य नरमुण्डो से भरे हुए रणक्षेत्र मे पहिचाना न जा सका तो उनकी रानियो के लिए सती होना कठिन हो गया। तब प्रसिद्ध चारण कवि सादू हू पा को रावल का मुण्ड पहिचान कर लाने के लिए युद्धस्थल मे भेजा गया। कहते हैं हू पाजी ने रावल का बिरुद बोल कर सुनाया जिसे सुन कर दुरजणसाल का मुण्ड हस पडा जिसे लाकर हू पाजी ने सतियो को सौंप दिया।

गीत की जाति 'छोटो साणोर' है जिसका लक्षण पृष्ठ ४-५ की टिप्पणी मे दिया गया है।

नोट—गीत के अतिम दोहे की तीसरी पंक्ति मे 'सेस' के स्थान पर 'सीस' उपयुक्त पाठ है क्योकि 'सीस' की ही चर्चा प्रतिपाद्य है।

पृष्ठ २४-२५

प्रस्तुत गीत महाराणा सागा तथा मुगल बादशाह बाबर के बीच खानवा मे लडे गये युद्ध सबधित है। जब महाराणा युद्धभूमि में घायल होने के कारण मूर्च्छित होकर गिर पडे तो महाराणा के सामत उन्हे उठा कर डेरे मे

ले आये जब महाराणा को होश आया तो उन्होंने एक वीर राजपूत की भांति युद्धभूमि से बिना जीते जीवित लौट आने पर पश्चत्ताप किया। इस पर बारहठ जमणाजी ने कृष्ण, अर्जुन और राम के दृष्टांत देकर उन्हे सान्त्वना देते हुए यह गीत सुनाया।

गीत की जाति 'छोटी साणोर' है जिसका लक्षण पृष्ठ ४-५ की टिप्पणी मे वर्णित है।

पृष्ठ २६-२७

इस गीत की कवियित्री पदमा सादू ऊदाजी की पुत्री तथा मालाजी सादू की बहिन और बारठ सकर की स्त्री थी। पति द्वारा न अपनाई जाने के कारण वह बीकानेर महाराजा रायसिंह के छोटे भाई अमरसिंह के पास रहती थी। इनका जन्म १६२५-३० के लगभग हुआ था।

राठौड अमरसिंह विद्रोही होकर खालसा लूटा करते थे। बादशाही खजाना लूटने के कारण एक बार बादशाह अकबर इन पर बहुत कोधित हुआ और आरबखा नामक सेनापति को इन्हे पकडने के लिये भेजा। जब आरबखा के चढ आने की खबर पहुंची तो अमरसिंह अफीम का नशा करके सोये हुए थे। इनकी आदत थी कि जो कोई उन्हे सोते से जगाता उस पर कटारी फेंक कर वार करते थे। इस डर से कोई भी उन्हे जगाने का साहस नही करता था। जब पदमा को आरबखा की चढाई का समाचार मालूम हुआ तो उसने प्रस्तुत गीत बोल कर उन्हे जगाया। यह घटना संवत् १६५४ की बताई जाती है। अमरसिंह ने जग कर आरबखा का सामना किया और अपने घोडे को आरबखा के हाथी पर चढा कर होदे मे बैठे हुए सेनापति को मार कर वे स्वय काम आये। कर्नल टॉड ने अमरसिंह को 'उडना शेर' (फ्लाइग टाइगर) कह कर उनकी स्तुति की है। कहते हैं पदमा भी अमरसिंह की रानियो के साथ ही सती हो गई।

गीत का एक अतिम दोहा और प्राप्य है जो निम्नलिखित है—

जुड़े जमराण घमसाण मातौ जठै
साझ सुरताण घड बीच समरौ ।
आपरी ज का थह न दी भड़ अवर नै
आपवी जिकी थह रयौ अमरौ ॥

यह दोहा अमरसिंह की मृत्यु के बाद कहा गया है, इसलिए प्रस्तुत गीत का अग नही बनना चाहिए, पर उसी प्रसग मे और उसी छद मे कहा जाने के कारण इस गीत मे जोड दिया जाता है ।

इस प्रसग मे पदमा के कहे हुए दो अन्य दोहे भी उपलब्ध हैं जो इस प्रकार हैं—

आरब मार्‌यो अमरसी, बडहत्थै वरियाम
हठ कर खेडै हारणी, कमधज आयौ काम
कमर कटै उड कै कमध, भमर हुऐली भार
आरब हन होदै अमर, समर वजाई सार

गीत की जाति 'बडो साणोर' है जिसका लक्षण पृष्ठ ८—९ की टिप्पणी मे वर्णित है ।

पृष्ठ २८—२९

प्रस्तुत गीत मे उदयपुर के महाराणा प्रताप और मुगल सरदार बहलोलखा के युद्ध का वर्णन है । गीत की जाति पृष्ठ ८—९ पर वर्णित 'वडो साणोर' है ।

पृष्ठ ३०—३१

इस गीत के रचयिता 'चतुराजी' मेवाड के 'सावर' गाव के निवासी 'वालड' गोत्र के 'मोतीसर' थे । 'मोतीसर' चारणो के याचक माने जाते हैं । ये जोधपुर के महाराजा गजसिंह (सवत् १६५२—९५) के समकालीन थे । इन्होने महाराणा भीमसिंह तथा गजसिंह के बीच सवत् १६८१ मे हाजीपुरपट्टण

नामक स्थान पर हुए युद्ध मे महाराणा भीम की वीर मृत्यु की प्रशसा करते हुए एक गीत कहा जिसमे गजसिंह के युद्ध से भागने की बात थी। जब गजसिंह को इस गीत की खबर हुई तो उन्होने मारवाड से सारे मोतीसरो को निकाल दिया और कहा कि चतुरा मेरे पास आ जाये तो उसका काला मुंह करके गधे पर बैठाऊ और मार डालूं। चतुराजी यह समाचार सुनकर मारवाड आये। जब वे गजसिंह के सामने गये तो उन्होने मारने के लिए तलवार उठाई। इस अवसर पर चतुराजी ने प्रस्तुत गीत कहा। इसी प्रकार गजसिंह ने तीर, भाला आदि चौदह शस्त्र उठाये पर चतुराजी ने चौदह बार ही कविता बोल कर उन्हे शात कर दिया। इस पर गजसिंह बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें लाखपसाव देकर हाथी पर बिठा कर शहर में घुमाया।

इस गीत के लक्षण 'मुणाल सावझडो' तथा 'जयवत सावझडो' दोनो से मिलते हैं। मुणाल में पहली झड की मात्रा १८ तथा शेष की १६ होती हैं जो क्रम इस गीत मे भी है। पर मुणाल मे तुकात मे दो लघु और एक गुरु रहते हैं जो इसमे नही है। 'जयवत सावझडो' गीत के तुकात मे दो गुरु होते हैं जो इसमे भी हैं। पर 'जयवंत' की पहली पक्ति मे १९ मात्रायें होती हैं जब कि इसमे १८ ही हैं। इस प्रकार यह 'मुणाल' और 'जयवत' दोनो का मिश्रण सा है। इस प्रकार के अनेक अपवादयुक्त उदाहरण गीतो मे प्राय. मिलते हैं।

पृष्ठ ३२-३३

नागौर के राव अमरसिंह राठौड ने बादशाह शाहजहा के दरबार मे मुन्शी सलावतखा द्वारा अपमानजनक शब्द कहे जाने पर उसे कटार से मार डाला था। इस घटना से दरबार मे खलबली मच गई और दरबारी इधर-उधर छिप गये। अमरसिंह अपने साथियो सहित आगरे के किले से बाहर आने लगे। तभी अर्जुन गौड ने धोखे से उन्हे मार डाला। अमरसिंह का शव लेकर उनके साथी डेरे आये तो रास्ते मे सलावतखा की हवेली पर उसकी बीबियो को रोते देख कर कवि ने प्रस्तुत गीत कहा।

गीत 'जागडो साणोर' जाति का है जिनके प्रथम दोहे मे १८, १२, १६, १२ तथा शेष मे १६, १२, १६, १२ का क्रम रहता है। तुकात मे दो गुरु होते

हैं। इसे 'पूरिणया सारणोर' भी कहते हैं।

पृष्ठ ३४–३५

जब जोधपुर के महाराजा जसवतसिंह औरगजेब द्वारा काबुल भेजे जाने पर वहा मर गये तो औरगजेब ने उनके शिशु पुत्र अजीतसिंह को भी मारने का प्रयत्न किया। प्रसिद्ध स्वामिभक्त वीर राठौड दुर्गादास ने चतुराई से शिशु महाराजा को दिल्ली से दूर भिजवा दिया और स्वय ने औरगजेब का सामना किया। इस अवसर पर जसवतसिंह की रानी हाडी जसमादे द्वारा हाथी पर चढ कर सेना का सचालन किये जाने की जनश्रुति है जिसकी पुष्टि प्रस्तुत गीत से भी होती है।

गीत की जाति 'वेलियौ सारणोर' है जिसका लक्षण पृष्ठ २–३ की टिप्पणी मे वर्णित है।

पृष्ठ ३६–३७

इस गीत का रचयिता रघा मुहता जाति का ओसवाल (जैन) था। यह मारवाड मे 'बालरवा' नामक गाव का रहने वाला था जहा उसके वशज आज भी विद्यमान हैं। यह राठौड दुर्गादास के पास रहता था। डिगल गीतो के विशिष्ट रचयिताओ मे इसकी गिनती है। इसके बनाये हुए अनेक प्रसिद्ध गीत हैं।

पृष्ठ ३५–३६ की टिप्पणी मे जिस घटना का उल्लेख है उसी से सबधित प्रस्तुत गीत है।

गीत 'जागडो सारणोर' जाति का है जिसका लक्षण पृष्ठ ३२–३३ की टिप्पणी मे दिया है।

पृष्ठ ३८–३९

इस गीत के रचयिता द्वारकादास दधवाडिया शाखा के चारण थे। इनका जन्म मारवाड के बलूदा नामक गाव मे सवत् १७३५ के लगभग हुआ था। एक बार जोधपुर, जयपुर तथा उदयपुर के राजा एक स्थान पर मिले और अपने अपने कुलो की तारीफ करने लगे। इस प्रसग मे जयपुर से देवीदान गाडण,

उदयपुर से ईश्वरदास भादा और जोधपुर से द्वारकादास दधवाडिया को बुलाया गया। द्वारकादास ने राठौडो की प्रशंसा मे उस समय निम्न दोहा कहा—

ब्रज देसां, चदण वड़ां, मेरु पहाड़ा मौड़
गरुड़ खगां, लंका गढां, राजकुळां राठौड़

इन्होंने संवत् १०७२ मे जोधपुर के महाराजा की प्रशंसा मे 'रूपग दवावैत' नामक ग्रथ भी बनाया। महाराजा ने इन्हे 'वासनी' नामक गाव दिया था। इनके लिखे फुटकर गीत बहुत मिलते हैं।

गीत पृष्ठ ८–६ की टिप्पणी मे वर्णित 'वडो साणोर' जाति का है।

पृष्ठ ४२–४३

प्रस्तुत गीत के नायक सुजानसिंह खडेला के राजा न होकर 'छापोली' नामक ठिकाने के जागीरदार थे। इन्होने अपनी नववधु का मोह त्याग कर, औरगजेब की सेना का सामना कर खंडेले के मदिर की रक्षा की और स्वय वीर गति को प्राप्त हुए।

गीत 'वडो साणोर' जाति का है जिसका लक्षण पृष्ठ ६–१० की टिप्पणी में दिया गया है।

पृष्ठ ४४–४५

गीत के लेखक उपाध्याय धर्मवर्धन जैन धर्मावलम्बी साधु थे। आपका जन्म सवत् १७०० मे तथा मृत्यु संवत् १७८० के लगभग हुई। आप रखतर गच्छ के श्री विजय हर्पजी के शिष्य थे। जैन धर्म सबधो अनेक रचनाओ के अतिरिक्त आपके लिखे फुटकर गीत भी मिलते हैं।

गीत के नायक छत्रपति शिवाजी हैं जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि राजस्थानी कवियो को राष्ट्रीय भावना सकुचित नही थी।

गीत 'वडो साणोर' जाति का है जिसका लक्षण पृष्ठ ८–६ की टिप्पणी मे दिया गया है।

पृष्ठ ४६–४६

स्वातन्त्र्य-संग्राम मे सबधित यह गीत अग्रेजो से लडने वाले गोठडा के हाडावशीय सामत वलवंतसिह की प्रशसा मे कहा गया है।

यह उल्लेखनीय है कि महाकवि सूर्यमल्ल मीसण ने अपनी 'वीर सतसई' भी गोठडा महाराज भीमसिह को लक्ष्य करके बनाई थी, जो भीमसिह के युद्ध विमुख होने के कारण अधूरी रह गई।

गीत पृष्ठ ८–९ की टिप्पणी मे उल्लिखित 'वडौ साणोर' जाति का है।

पृष्ठ ५०–५१

वादशाह शेरशाह ने जव जोधपुर के राव मालदे पर आक्रमण किया तव संभवत: जोधपुर राज्यातर्गत खीवसर ठिकाने के ठाकुर पचायणसिह युद्ध मे काम आये। प्रस्तुत गीत उन्ही की प्रशसा म कहा गया है।

गीत 'खुडद' जाति का 'छोटौ साणोर' है जिसके प्रथम दोहे मे १८, १३, १६, १३ तथा शेष मे १६, १३, १६, १३ का क्रम रहता है। अत मे दो लघु होते हैं। इसे कई गीतशास्त्रकारो ने 'खुडद साणोर हसमग' भी कहा है। इस गीत की तीसरी झड 'वेलियौ साणोर, जाति की है जिसमे १६, १५, १६, १५ के साथ गुरु लघु की तुक रहती है।

पृष्ठ ५२–५३

गीत लेखक केशवदास गाडण जोधपुर राज्य के सोजत परगने के 'चिडिया' नामक ग्राम के निवासी सदमाल गाडण के पुत्र थे। इनका जन्म अनुमानत १६१० तथा मृत्यु १६९९ मे मानी जाती है। गृहस्थ होकर भी ये गेरुए वस्त्र पहिनते थे और साधुओ की तरह रहते थे। ये महाराजा गजसिह के कृपापात्र थे। गजसिह की प्रशसा मे इन्होंने गजगुणवध, नामक ग्रथ वनवाया। इस ग्रथ की प्रशसा सुनकर बीकानेर के महाराजा गजसिह ने भी इनसे ग्रथ वनवाया जिसका नाम इन्होंने 'गजगुण चरित्र' दिया। दोनो महाराजाओ ने इन्हे लाखपसाव और जागीरें दी। बीकानेर वाली बात विश्वसनीय नही प्रतीत होती। इनका वनाया हुआ 'विवेक वार्ता' नामक ग्रथ बहुत प्रसिद्ध

है । फुटकर गीत व दूहे भी इन्होंने वहुत लिखे । इनके विषय मे किसी विद्वान का कहा हुआ निम्नलिखित दूहा प्रसिद्ध है—

केसो गोरखनाथ कवि, चेलो कियो चकार
सिध रूपी रहता सवद, गाडण गुण भंडार

गीत के नायक नागौर के राव अमरसिंह हैं जिनके विषय से पृष्ठ ३२–३३ की टिप्पणी मे लिखा गया है।

गीत की जाति 'जागडो सागौर' है जिसका लक्षण पृष्ठ ३२–३३ की टिप्पणी मे दिया गया है।

पृष्ठ ५४–५५

गीतकार किसनाजी आढा प्रसिद्ध डिंगल कवि दुरसाजी आढा की वंश-परम्परा मे हैं। इनके पिता का नाम दूलहजी तथा जन्म स्थान जोधपुर राज्यान्तर्गत 'पाचेटिया' नामक गांव था। किसनाजी संस्कृत, प्राकृत, व्रज तथा राजस्थानी के उद्‌भट विद्वान थे। कर्नल टॉड को ऐतिहासिक सामग्री वटोर कर देने मे इनका वहुत वडा सहयोग था। ये उदयपुर महाराणा भीमसिंह के आश्रित थे जिनकी प्रशंसा मे इन्होंने 'भीमविलास' नामक ग्रंथ संवत १८७९ मे वनाया। 'रघुवर जस प्रकास' नामक लाक्षणिक ग्रंथ आपकी उत्कृष्ट रचना है। आपके वनाये हुए गीत भी वडी मात्रा मे मिलते हैं।

गीत की जाति 'सुपंखरो' है। यह वर्णिक छंद है। इसके पहले दोहे मे १८, १४, १६ १४ अक्षरो का क्रम रहता है तथा शेष मे १६, १४, १६, १४ का। तुकांत मे लघु आता है।

पृष्ठ ५६–५७

यह गीत चारण कवियित्री वरजू वाई का वनाया हुआ हैं। वरजू वाई के विषय मे अनेक धारणायें हैं। कई इसे करणीदान कविया की वहिन, कई लडकी तथा कई धर्मपत्नी वताते है। पर इसमे संदेह नही कि वरजू वाई अपने समय की प्रसिद्ध कवियित्री थी। वंशप्रभाकर के रचयिता महाकवि सूर्यमल्ल ने जिन कवियित्रियो की वंदना की है उनमे वरजूवाई का नाम भी है—

अजिता बाणी अंस, सुदरिका करनी सिरा।
वरजू चारण वस, काव्यकरी इत्यादि तिय ।।

कविराजा करणीदान जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के आश्रित थे। उन्होंने महाराजा की प्रशसा मे 'सूरज प्रकाश' नामक काव्य-ग्रथ बनाया था। वरजू बाई ने भी प्रस्तुत गीत उन्ही महाराजा की प्रशसा मे बनाया। यह सवत १८२७ तक जीवित बताई जाती है।

गीत 'सुपंखरो' जाति का है जिसका लक्षण पुष्ठ ५४-५५ की टिप्पणी मे दिया गया है।

पृष्ठ ५८-५९

पृथ्वीराज राठोड डिंगल साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि हैं। ये बीकानेर के महाराजा रायसिंह के अनुज तथा बादशाह अकबर के कृपापात्र थे। इनकी रचित 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' भारतीय साहित्य की अत्यत सुन्दर कृति मानी गई है।

चारण कवि रामोजी सादू जोधपुर के 'मोटाराजा' उदयसिंह के विरुद्ध चारणो द्वारा दिये गये धरने मे सम्मिलित थे। पर, उदयपुर मे राणा प्रताप मे मुगलो की लडाई का हाल सुनकर, वे धरना छोड कर युद्धार्थ चले गए। इस पर महाकवि प्रिथ्वीराज ने प्रस्तुत गीत कह कर उनका सार्वजनिक अभिनदन किया।

गीत 'सोहणो साणोर' जाति का है जिसका लक्षण पृष्ठ ७-८ की टिप्पणी मे दिया गया है। अतिम भड 'खुड्द साणोर' की है जिसे 'छोटो साणोर हसमग' भी कहते हैं।

पृष्ठ ६०-६१

प्रस्तुत गीत किनिया शाखा के चारण कवि माहवजी के युद्ध भूमि मे लडकर काम आने की प्रशसा मे कहा गया है। चारण कवि केवल कविता ही नही करते थे परतु समय आने पर युद्ध मे शस्त्र भी चलाते थे, यही स्तुति का विषय है।

गीत 'वडौ साणौर' जाति का है जिसका लक्षण पृष्ठ ६–१० की टिप्पणी मे दिया गया है।

पृष्ठ ६२–६५

यह गीत उदयपुर महाराणा भीमसिंह की सतियो की प्रशसा मे किसनाजी आढा द्वारा कहा गया है किसनाजी का परिचय पृष्ठ ५४–५५ की टिप्पणी में देखें।

गीत 'वडौ साणौर' जाति का है जिसका लक्षण पृष्ठ ८–६ की टिप्पणी मे है।

पृष्ठ ६६–६७

यह गीत उदयपुर के महाराणा सागा की मृत्यु पर लिखा गया है। ऐसी रचनाश्रो को 'मरसिया' कहा जाता है। चारण कवियो ने हर वीर, दातार तथा भक्त पर ऐसे मरसिये लिखे हैं। वह परम्परा आज भी चालू है।

'खानवा' के युद्ध में वादशाह बावर से युद्ध करते समय महाराणा सागा को उनके सामंतो द्वारा विष दिये जाने की किंवदन्ती है।

गीत की पहली झड 'वेलियौ साणौर' की तथा शेष दोनो 'खुडद साणौर' की है। ये दोनो 'छोटौ साणौर' गीत के ही अग हैं।

पृष्ठ ६८–६६

गीतकार आढा दुरसा राजस्थानी साहित्य के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कवि हैं। ये अकबर के कृपापात्र तथा महाराणा प्रताप के प्रशसक थे। इनकी रची हुई 'विडद–छहत्तरी' मे महाराणा प्रताप की प्रशसा के दोहे हैं जो हर राजस्थानी-प्रेमी की जिह्वा पर हैं। दुरसाजी का जन्म सवत् १५६२ में जोधपुर राज्य के धूदला नामक गाव मे हुआ था। इनके पिता का नाम मेहाजी तथा दादा का नाम अमराजी था। इनका देहान्त सवत् १७१२ मे पाचेटिया नामक गाव मे हुआ। इनके विषय मे अनेक किंवदतिया प्रसिद्ध हैं। इनके लिखे तीन ग्रंथ वताये जाते हैं—१. विरुद छहत्तरी, २. किरतार वावनी तथा ३. श्री कुमार अज्जाजी नी भूचर मोरी नी गजगत।

गीत के नायक बीकानेर के महाराजा रायसिंह है । ये राव कल्याणमल के पुत्र थे तथा अकबर के सेनापतियो मे से एक थे । इन्होने गुजरात की लडाई मे बडी वीरता दिखलाई थी । इनकी मृत्यु दक्षिण मे हुई जहा ये मुगल बादशाह की ओर से प्रशासक थे । ये महाराजा बडे शूरवीर और दानवीर थे । दुरसाजी को इन्होंने लाख पसाव भी दिया था । जब रायसिंह चित्तौड मे महाराणा उदयसिंह की पुत्री से विवाह करने गये थे तो पद्मिनी के महलो मे जाते समय इन्होंने चारणो को एक-एक सीढो पर दस–दस घोडे और एक एक हाथी दिया था ।

गीत की जाति 'बडो साणोर' है जिसका लक्षण पृष्ठ ८–९ की टिप्पणी पर दिया गया है ।

पृष्ठ ७०–७१

दुरसाजी आढा का परिचय पृष्ठ ६८–६९ की टिप्पणी मे दिया जा चुका हैं । वे अकबर के कृपापात्र और महाराणा प्रताप के प्रशसक थे । बादशाह अकबर की तारीफ मे लिखा हुआ यह गीत इस अर्थ में अनोखा है कि चारण कवियो ने विधर्मियो की तारीफ मे बहुत कम गीत लिखे हैं ।

गीत की जाति पृष्ठ ११–१२ की टिप्पणी मे वर्णित 'वेलियो साणोर' है ।

पृष्ठ ७२–७५

गीतकार बाकीदास आसिया का परिचय पृष्ठ ३–४ की टिप्पणी मे दिया गया है ।

प्रस्तुत गीत अग्रेजो के बढते हुए बल-वैभव से देशी राजाओ को सावधान करने के लिए चेतावनीस्वरूप लिखा गया है । इससे चारण कवि की राजनैतिक बुद्धिमत्ता का परिचय मिलता है ।

गीत की जाति 'सोहणो साणोर' है जिसका लक्षण पृष्ठ ७–८ की टिप्पणी मे दिया गया है ।

पृष्ठ ७६–७७

जिन दिनो देश मे प्राय होने वाले युद्धो के कारण सैनिक घायल होते

रहते थे उन दिनो नीम जैसे वृक्ष का वडा मान होना स्वाभाविक था। कवि ने एक सैनिक की पत्नी से नीम की प्रशंसा मे यह गीत कहलवाया है।

गीत की जाति 'जयवत सावझडो' मे मिलती है पर अन्तर इतना ही है कि उसमे पहली पक्ति मे १९ मात्रायें होती है जब कि इसमे १५ ही हैं। अन्य लक्षण सब मिलते हैं। 'जयवत सावझडो' के प्रथम दोहे मे १८, १६, १६, १६ तथा शेष मे १६, १६, १६, १६ के साथ दो गुरु आते हैं।

पृष्ठ ७८-७९

महाराजा जसवतसिंह राव अमरसिंह के छोटे भाई तथा जोधपुर के महाराजा गजसिंह के पुत्र थे। ये वडे साहित्यमर्मज्ञ तथा वीर एव धर्मप्राण थे। इनका रचा हुआ भाषाभूषण नामक साहित्य-शास्त्र विषयक ग्र थ हिन्दी साहित्य मे वडा प्रसिद्ध है।

प्रस्तुत गीत मे चारण कवि ने महाराजा जसवतसिंह को उज्जैन के युद्ध में कायरता दिखाने के लिये फटकार दी है। इस तथ्य से उस भ्रम का निराकरण हो जाना चाहिए जिसके अनुसार अनभिज्ञ लोग चारणो को चाटुकार और अतिशयोक्तिपूर्ण यश गाने वाले मात्र ही मानते हैं।

गीत की जाति 'वडो साणोर' है जिसका लक्षण पृष्ठ ८-९ की टिप्पणी मे दे दिया गया है।

पृष्ठ ८०-८१

कायरों की हसी उडा कर समाज मे उन्हे निन्दा का पात्र वना देने की युक्ति के उदाहरणस्वरूप चारण कवि का यह गीत है। परिणीता स्त्री के मुख से उसके पति की हसी उडाना और भी चोट करने वाली वात है।

गीत 'जागडो साणोर' जाति का है जिसका लक्षण पृष्ठ ३३-३४ की टिप्पणी मे दिया गया है।

पृष्ठ ८२-८३

दलाजी महडू द्वारा कहा गया यह गीत डूंगरपुर के चौहान सरदारो को

उलहना देने सबधी है। इन्होने अपने स्वामी को अंग्रेजो के विरुद्ध उकसा दिया तथा बाद मे उनका साथ न देकर उन्हे धोखा दिया।

गीत की जाति 'सुपखरो' है जिसका लक्षण पृष्ठ ५६–५७ की टिप्पणी में दिया गया है।

पृष्ठ ८४–८५

गीतकार बाकीदास आसिया ने कंजूस व्यक्ति की हसी उडाते हुए प्रस्तुत गीत लिखा है। गीतकार का परिचय पृष्ठ २–३ पर देखें।

गीत की जाति 'वेलियो साणोर' है जिसका लक्षण पृष्ठ २–३ की टिप्पणी मे दिया है।

पृष्ठ ८६–८६

गीतकार दुरसाजी आढा ने प्रस्तुत गीत बीकानेर के महाराजा रायसिंह की दानवीरता की प्रशसा में लिखा है।

महाराजा रायसिंह चित्तौड के महाराणा उदयसिंह की लडकी जसमादे से विवाह करने गये तो वहा पद्मिनी के महलो में जाते समय उन्होने एक–एक सीढी पर दस–दस घोडे और एक–एक हाथी चारणो को दान मे दिया। इस प्रकार ५०० घोडो ग्रोर पचास हाथियो का दान एक साथ दिया गया। उसी दान की प्रशसा मे यह गीत लिखा गया है।

गीत की जाति पृष्ठ २–३ की टिप्पणी में वर्णित 'वेलियो साणोर' है।

पृष्ठ ६०–६३

यह गीत उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की, दानवीरता की प्रशसा मे आढा किसना द्वारा कहा गया है। गीतकार तथा नायक का परिचय पृष्ठ ५४–५५ की टिप्पणी में दिया गया है।

गीत की जाति 'वेलियो साणोर' है जो पृष्ठ २–३ की टिप्पणी मे वर्णित है।

पृष्ठ ६४--६६

गीतकार महादान महड़ू ने महाराणा भीमसिंह द्वारा कवि को दान मे दी गई घोडी की प्रशंसा में यह गीत कहा है। गीतकार का परिचय पृष्ठ २०–२१ की टिप्पणी मे दिया गया है।

गीत की जाति 'सुपखरो' है जिसका लक्षण पृष्ठ ५६–५७ की टिप्पणी मे वर्णित है।

पृष्ठ ६८--६६

गीतकार श्रोपाजी सिरोही राज्य के 'पेशवा' नामक गाव के रहने वाले थे। इनका रचना-काल सवत् १८६०- ९० तक माना जाता है। इनके लिखे गये शात रस के गीत राजस्थानी साहित्य मे बहुत प्रसिद्ध हैं।

कुदान की निंदा मे लिखा गया यह गीत उदयपुर के चूडावत कुंवर रात्रवदे को सबोधित किया गया है जिन्होंने कवि को एक नाकाम घोडा दान मे दे दिया था।

गीत की जाति पृष्ठ २–३ की टिप्पणी मे वर्णित 'वेलियो साणोर' है।

पृष्ठ १००–१०१

गीतकार का नाम अज्ञात है तथा गीत के नायक का भी परिचय प्राप्त नही है।

गीत की जाति 'वडो साणोर' है जो पृष्ठ ८–६ की टिप्पणी मे वर्णित है।

पृष्ठ १०२–१०५

गीत 'वडो सावझड़ो' जाति का है जिसकी पहली पक्ति में तेईस मात्रा तथा शेप सभी मे २० मात्रायें होती हैं। अन्त मे रगण आता है तथा दूहो की चारो ही झडो की तुकें मिलती हैं।

पृष्ठ १०६–१०७

गीतकार छत्ताजी के विषय मे कोई जानकारी नही हैं।

गीत 'वडो साणोर' जाति का है जिसका लक्षण पृष्ठ ८–६ की टिप्पणी मे वर्णित है।

पृष्ठ १०८--१०९

प्रस्तुत गीत जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह की प्रशसा मे कहा गया है। ये प्रसिद्ध विद्याप्रेमी नरेश जसवतसिंह के पुत्र थे। गीतकार 'ढाढरवाला के कोई 'लालस' जाति के बताये जाते हैं।

गीत की जाति 'बडो साणोर' है जिसका वर्णन पृष्ठ ८--९ की टिप्पणी मे किया गया है।

पृष्ठ ११०--११३

गीत के लक्षण 'पालवणी' नामक गीत से मिलते हैं। पर, पालवणी की पहली पक्ति मे १६ मात्रायें ही होती हैं जबकि इसमे २० हैं। शेष सभी पक्तियो मे १६ मात्रायें होती है तथा चारो ही तुकें मिलती हैं। तुकात मे गुरु लघु का नियम नही होता।

पृष्ठ ११४-११५

गीतकार बारहठ लच्छीराम जोढपुर के महाराजा मानसिह के समकालीन बताये जाते हैं।

गीत 'बडो साणोर' जाति का है जिसका वर्णन पृष्ठ ९--१० की टिप्पणी मे दिया गया है।

पृष्ठ ११६--११७

कविया हिंगलाजदान जयपुरराज्यान्तर्गत 'सेवापुरा' नामक गाव के निवासी चारण थे। इनका जन्म संवत १९२४ वि मे प्रसिद्ध संत कवि सागरजी सिद्ध के वश में हुआ। इनके पिता श्री रामप्रतापजी ने बहुत छोटी अवस्था मे ही इन्हे नदी के जल मे खडा कर इनकी जीभ पर सरस्वती मत्र लिख दिया था। कहते हैं इसी कारण इनकी प्रतिभा बडी निखरी। इनके रचे हुए 'मेहाई महिमा' 'मृगया मृगेन्द्र' 'प्रत्यय पयोधर' तथा 'शालग्रहशतक' नामक ग्रथ प्रसिद्ध हैं। इन्होंने कलकत्ते मे कुछ राजस्थानी प्रवासियो के आग्रह से महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर को कुछ डिंगल गीत सुनाये थे, जिन्हे सुनकर रविबाबू ने डिंगल गीत

साहित्य की बड़ी प्रशंसा की। संवत् २००५ में ८१ वर्ष की अवस्था में इनका देहांत हुआ। ये आज के युग में डिंगल के उत्कृष्ट विद्वान माने गये।

गीत 'वलियौ साणौर' जाति का है तथा पृष्ठ २–३ की टिप्पणी में वर्णित है।

पृष्ठ ११८–११९

यह गीत भी उपर्युक्त 'वेलियौ साणौर' ही है।

पृष्ठ १२०–१२१

गीतकार नवलदान लालस का परिचय पृष्ठ १२–१३ की टिप्पणी में दिया गया है।

यह गीत कवि ने अपने गुरु साईदीन के मुर्गे की मृत्यु पर लिखा है। साईदीन के मुर्गे को एक दिन बिल्ली झपट गई। कवि ने शोकातुर होकर प्रस्तुत मरसिया कहा।

गीत की जाति पृष्ठ ३२–३३ की टिप्पणी में वर्णित 'जागडौ साणौर' है।

पृष्ठ १२२–१२५

शांत रस का यह अति प्रसिद्ध गीत राठौड़ प्रिथ्वीराज का कहा हुआ है।

गीतकार का परिचय पृष्ठ ५८–५९ की टिप्पणी में दिया गया है।

गीत पृष्ठ २०२ पर वर्णित 'वेलियौ साणौर' जाति का है। 'वेलियौ' पृथ्वीराज का सर्वाधिक प्रिय छंद है। इसी में इन्होंने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' बनाया और इस प्रकार इस छंद के नाम को ही अमर कर दिया।

पृष्ठ १२६–१२९

गीतकार ओपा आढा शांत रस के गीतों के श्रेष्ठ रचयिता थे। इनके परिचय के लिए पृष्ठ ९८–९९ की टिप्पणी देखें।

जीत पृष्ठ २--३ पर वर्णित 'वेलियो साणोर' जाति का है।

पृष्ठ १३०--१३१

गीतकार हरदान बारहठ के विषय मे कोई जानकारी नही है।

गीत के तीसरे दोहे की दूसरी पक्ति मे 'बाव' के स्थान पर 'वाप' होना चाहिये। 'वाप' जैसलमेर जिले मे एक गाव का नाम है।

गीत उपर्युक्त की भाति ही 'वेलियो साणोर' जाति का है।

डिंगळ गीत

शब्दार्थ

[पृष्ठानुक्रम से]

पृष्ठ ३

कीधौ = किया
तैं = तुमने
साभियो = मार डाला
कानौ = राव कान्हा,
(जांगलू का स्वामी)
रिड़मल = राठौड़-राव रिड़मल
नैं = को
दीधौ = दिया
चारणवाड़ां = चारणों के गांवों
तणी = की
लोक मही = जगत में
वरपाड़ां = वरप्राप्त लोगों
धरपाड़ां = भूमि नष्ट करने वालों
आभ = आकाश
जड़ां = जड़ों को
नांखै = डालती है
अपाड़ = उखाड़ कर
कोय न = कोई भी नहीं
गांज सकै = नष्ट कर सकता
किनियाणी = 'किनिया' जाति में
उत्पन्न
जीझणियाळ = आरण्यक वृक्षों
वाली देवी
तुहाळा = तेरे
झाड़ = बेर के वृक्ष, देवी की
कृपा से प्राप्त भूमि
मेछां = म्लेच्छों को
भाव = कृपा
गढवाड़ा गांव = चारणों के गांव
बांका = हे बाँकीदास !
मेहासधू=मेहाजी की पुत्री, करणी
म = मत
विसरै = भूलना
सांभळै = सुनते ही
साद = पुकार
ओलै = ओट में
गाजै = गरजते हैं, स्वच्छंद
विचरते हैं
मढ = देवी का मंदिर
गढां = गढों की

अजाद = मर्यादा

पृष्ठ ५

इम = इस प्रकार
वेत = सतान
विहुं = दोनों
आछा = अच्छे
भूंडइ = बुरे
कळ = कलियुग
कवर=कुमार
किरमाळा = तलवारों से
कंवरी = कुमारी
झळां = ज्वालाओं
न्हाण = स्नान
जामण = सतान
रूड़ा = सुंदर, उत्तम
वप = शरीर
जां रइ = जिनके
वसइ = निवास करता है
सारां = तलवारों की
हइ = है, ओहो,
राजवियां = राजपुत्रों की
जाय = सतान
विनइ हद = दोनो ही खूब हैं, असीम है
कळइ = फँसते हैं
विजड़ां = तलवारों की
काठां = लकड़ियों की चिता पर
चढ़े = चढ़ कर

बळइ = जलती हैं
स्यामध्रम = स्वामिभक्ति
साधइ = पालन करते हैं
अग = देह से
आराण = युद्ध
आसगइ = स्वीकार करते हैं
आग = अग्नि-ज्वाला
सुज = वही
जोत = ज्योति
हूँता = से
स्रग = स्वर्ग
लोहां झड़ां = शस्त्र-प्रहारों से
लाकड़ां = लकड़ियों (द्वारा प्रज्ज्वलित अग्नि) से
लाग = लग कर

पृष्ठ ७

वेढक = युद्ध
वेढकां = लड़ने वालों को
वाचै = कहता है
लेख प्रमाण = भाग्य के लिखे अनुसार
धकचाळां = भयङ्कर युद्धों में
धारा = तलवार की धारों पर
रीझलजुध = युद्ध में हर्षित होने वाला
अचीठा = विषम (जोरदार)
घड़ै = कहता है
ओझड़ = झटके

झटां = प्रहारों
टळै = टलते हैं
अड़ता = भिड़ते हुए
झड़ता = झड़ते हुए (मरते हुए)
झड़ै = झडते हैं (मरते हैं)
सास = श्वास
उसास = उच्छ्वास
मेल्हिया = रखे
साहब = विधाता
रसणा = जीभ से
कमधज = कर्मध्वज (राठौड़)
श्रेम = इस प्रकार
वाधाया = बढाये हुए, बढाने से
पण = भी
करक = मुर्दों का अस्थिपञ्जर
जतरै = जब तक
तणौ = के
अवस = अवश्य
रोळौ = युद्ध, शोर
रावत = वीर
दुजड़ा = तलवारों की
झिकोळो = डुबोकर प्रचालित करो
जोखौ = जोखिम

पृष्ठ ६

अनै = और
क्यूंकर = कैसे
सझै = बने, हो सके

हिक = एक
आचार करबो = दान देना
पमग = घोड़ा
मूंघा = बहुमूल्य
अतर = वस्त्र, इत्र
तांतिरस = तन्त्री वाद्यों की सरस ध्वनि
बिजाई = दूसरे
कुण = कौन
करड़ौ = प्रबल, कठिन
धकौ = धक्का
परा = एक ओर
दाटो = दबा कर, गाड़ कर
प्रामवै = प्राप्त करे
छेह = अंत
घाटौ = मार्ग, घाटी
ऊजळा = उज्ज्वल
दोखियां = शत्रुओं को
बीजळा = तलवार
झळां = ज्वालाओं से
केहरीहरा = केसरीसिंह के पौत्र
इळा = पृथ्वी
रीझ करि करि = दान दे-दे कर

पृष्ठ ११

पाट = राजसिंहासन
पटतर = समानता
मोजै = दान देने में

सचूप = शौकीन
अतमला = प्रबल
कळतै थकै दिहाड़ै=आयु के नष्ट होते हुए दिनों में
भींत = प्राचीर (दुर्ग आदि)
गीत = यश काव्य
समपति = बरोबरी वाले
समोभ्रम = पुत्र
नवसहसो = राठौड़
दाखै = कहता है, प्रकट करता है
नोख = अभिलाषा
गोखड़ा = गवाक्ष, झरोखे
भांजै = टूट जाते हैं
गोख = झरोखे
कळी = पत्थर की कलियाँ
कांगरा = कंगूरे
पड़ियां = गिरने पर
ढगळ = ढेर
हुवै = हो जाता है
पाखाण = पत्थर
भाखै = कहता है
कमठाण = कर्मस्थान
कीरत महल = यश काव्य
अेहा = ऐसे
वयण = वचन
दाखवै = कहता है
सांझी = प्रमुख
कुळमौड़ = कुलश्रेष्ठ
रहसी = रहेंगे

पृष्ठ १३

किसू = क्या
अवर = और
सागै = साथ
लुळै = झुकते हैं
गजबोह = चमत्कार
नायका = नायिका भेद
पाठड़ा = पाठ
हूँत = से
लायका = योग्य
छरा = हाथल, पंजा
अतर = यत्र, जहाँ
लाहा = लाभ
विरदायकां = विरुद प्राप्त करने वालों
माय = में
सकव = सुकवि
बायका = वचनों के
सायका = बाणों की
बाहा = मार, प्रहार
तिकण रौ = जिसका
सीखियां = सीखने पर
नावै = नहीं आता
पेखियां = देखने पर
सांसै = संशय में
विधक घणाजाणरा=अनेक विधियों के जानकार

माण = अभिमान
छांडे = छोड कर
वहै = फिरते हैं
वाण = वाणी
जहूरां = जौहर
वांसै = पीछे
कीधां = करने पर
जुड़ै=प्राप्त होता है, बन पड़ता है
सगत रा पुत्र = शक्तिपुत्र, चारण
उगत = उक्ति
घाट = मार्ग, ढग
औंडा = विषम, कठिन

पृष्ठ १५

उरा लिया = ले लिए
पाछा = वापिस
कवियो = कविया शाखा का चारण
खिड़ियो = खिड़िया ,,
महडू = महडू ,,
भादो = भादा ,,
वरण सिंगार = जाति का शृङ्गार
दूथी = चारण कवि
दीधा = दिये
लीधा = लिये
आं = इनके
ऊणो = शून्य
सुवप = सुन्दर शरीर
विहूणो = विहीन

पातां = चारण कवियों को
करे = कर के
तैं = तुमने
पोस्या = पोषित किया
खोस्या = छीन लिये
दईव = दैव
आसग = स्वीकार कर
रोड़ता = वचनों द्वारा ग्रस्त करते
बारण = चारण जाति
मसकर्‌यां = मजाकों से
हिलसी = आदी होंगे
पूण मही = हीनता में

पृष्ठ १७

सुपहां = राजाओं को
राण = राणा
कूरम = कूर्मवंशीय (कछवाहा)
देवो = देवीसिंह
मोटापण = बडप्पन
रूपगजोड़ां = रूपक जोड़ने वालों
(चारण कवियों)
माठां = अकर्मण्यों को
कोरड़ा = चाबुकों से
काठा = सूम, मू जी
सरै = बने, चले
ऊधमिया=लुटाने पर, दान देने पर
सिरै = ऊपर, श्रेष्ठ

ऊवरै = वचता है, चिरस्थायी होता है
चंद सुजाव = चद्रसिह का पुत्र
कथै = कहता है
वडचावो=सुप्रसिद्ध, वडे चाव वाला
जोड़ै = तुल्य
ज्यां = जिनको
अहळ = व्यर्थ
पांगी = कीर्ति
दाखै = प्रकट करते है
परै = पार
सोह = वह
सरै = श्रेष्ठ

पृष्ठ १६

भीनौ = युक्त, रगा हुआ
चमरी = चवरी
झोक = वाहवाही
वरी = वरण किया
जेण = जिस
वागै = वागे से (दूल्हे के पहिनने के वस्त्र से)
घड़ = सेना
कवारी = विना लड़ी हुई, अविजित
तेण = उसी
सगळ धमुळ = धवल-मंगल
दमगळ = युद्ध

वीरहक = वीरों की गर्जना
रग = विवाहोत्सव पर दान देने में
तूठौ = प्रसन्न हुआ
रूठौ = क्रोधित हुआ
सघण वूठौ = मेह वरसा
कुसुमवोह = फूलों की बौछार
विखम = विषम, भयङ्कर
लोह वूठौ = शस्त्र-वर्षा हुई
करण = करने के लिए
अखियात = प्रसिद्ध कथा
भलां = खूव ही
काळमी = कालमी नामक घोड़ी
निवाहण = निभाने के लिए
वैण = वचन
नेत = विरुद
खळां = शत्रुओं ने
किरमाळ = तलवार
खेत = रण क्षेत्र
वाहर = सहायतार्थ
सुरहरी = गाय
इतै = तव तक
जितै = जव तक
विहड = नष्ट कर
खीचियां = खीची राजपूतों
विभाड़े = खड-खड करके, विभक्त करके
पौढियो = सो गया

पृष्ठ २१

भाळौ = देखो
जूट = लग्न, जुटा हुआ
कराळौ = विकराल
भाटी = भाटी वंश का राजपूत
तरमाळो = नगारा
घुरियौ = बजा, गरजा
तिण = उस
वार = समय
लार = पीछे
पाळो = पैदल
लेवा = लेने के लिए
हाथ चला = शस्त्र-प्रहार कर
दखण = दक्षिणी, मराठों
दळ = सेना
हणिया = हनन किया, मारा
ऊफणिया = उफन पड़ा
खत्रवट = क्षत्रियत्व
भणिया = बोले
माथौ = मस्तक
भूतेसर = भूतेश्वर, महादेव
दुरजणिया = दुर्जनशाल
मोटा = बड़े
काचे मतै = अस्थिर मति वाले
आरण = युद्ध
वाचै = पढ़ते हैं
अजेव = अजेय
सुत खूमाण = खूमाणसिंह का पुत्र
साचै = सच्चे
जाचै = मांगते हैं
तेगां = तलवारों
दळबादळ = सैन्यसमूह
बरखा सी = वर्षा तुल्य
सर सोक = बाणों की ध्वनि
अेकण पगवाणू=अेक पैर पर स्थित
कासी बासी=काशी में बसने वाले
कमळ = सिर
कज = लिए
खर खर = झड़-झड़ कर
बाढ = तीक्ष्ण धार
खागां = तलवारों
बदै = कहते हैं
चाढ रा = पुकारते ही सहायतार्थ दौड़ने वाले से

पृष्ठ २३

कोट गाढ रा=दुर्ग को दृढ़ता प्रदान करने वाले
आपो = प्रदान करो
छक = घावों से पूर्ण
धू = सिर
माढ रा = माढ की भूमि के (जैसलमेर के)
छात = छत्र
झेलै = सहन करे

जोधहर = योद्धा, वीर
सत = सौ
लटका = लटके, रिझाने हेतु हाव-भाव
हर-अटका जोड़ै = जगन्नाथ के अटके सदृश्य

(जगन्नाथ का अटका करने पर जिस हंडिया मे चावल पकाये जाते हैं, वह चावल पकने के बाद स्वतः चार टुकडे होकर गिर जाती है ।)

जासी=जायेगा
आसी = आयेगा
बटका = टुकड़े
फोड़ा = कष्ट
कहिया = कहा हुआ
मूझ = मेरा
थाकौ = थक गया
दौड़ा = चक्कर
खोड़ा = वीर
वेरा = वार
अणभग = अजेय वीर
मळियौ = मिला
माळ = माला
माफक = तरह
जेसलमेरा=जेसलमेर वाले
उतवग = मस्तक
वसियौ जाय = जा बसा
हंस = जीवात्मा

पूगौ = पहुँचा
दसदसियौ = दशों दिशाओं में प्रसारित होने वाला (सुयश)
रज-रज = अत्यधिक छोटे टुकड़े
सेस = समाप्त
रणरसियो = रणरसिक
ताळी दे = ताली बजा कर
हसियौ = हसे

पृष्ठ २५

सत = सात, सौ
आगळ = सामने
श्रीरग = कृष्ण
विमहा = विमुख
टीकम = त्रिविक्रम
दीध = दिए
वग=मार्ग
मल्हि घात = घात लगा कर
नाखे अलग = दूर कर
पारथ = अर्जुन
हेकरसां = एक वार
हथणापुर = हस्तिनापुर
जका = जो
तका = वह
कांइ = कैसी
इकरा = एक वार
तिय = स्त्री

मद = मूर्ख
हरेगौ = हरकर लेगया
दहकमळ=दश सिर वाला (रावण)
सोइज = वही
तारिया = तैरा दिए
ऊपरा = ऊपर
राड़ = लड़ाई
अवत्थी = बिगड़ी
औरस = दुःख
आणे = लाते हो
केम = क्यों
माल तणा = मालदेव के
केवा = वैर, प्रतिशोध
कज मागण = मांगने के लिए
सांगण = राणा सांगा

पृष्ठ २७

सरद = विजय
कहर = कठिन
नर = वीर
थारी = तुम्हारी
उजागर = वंश को उज्ज्वल करने वाला
झाल = पकड़
जैतहर = राव जैत्रसिंह के पौत्र
आभरण = शृङ्गार
वीकहर = राव बीका के वंशज
धर = भूमि

मार = आक्रमण
वसू = वशीभूत
अभंग = अजेय
गयणाग = आकाश से
लकाळा = सिंह के समान वीर
कलियाण जाया = राव कल्याणमल के पुत्र
गोळ = गोले
अरगाहणा = शत्रुओं का दलन करने वाला
असमाण = आसमान
निवारौ = हटाओ
अवै = अब
दाखवौ = प्रगट करो, दिखाओ
पाण = पराक्रम

पृष्ठ २६

मान = मानसिंह कछवाहा
मुहर = आगे
ऊभौ हुतौ = खड़ा था
दुरद गत = हाथी की भांति
सिलह पोसां=कवचधारी सैनिकों
जूथ = समूह
तद = उस समय
वही = चली
रूक = तलवार
पातल = राणा प्रताप
पुत्र (समोभ्रम)

ऊद = राणा उदयसिंह
चेटक = राणा प्रताप के घोड़े का नाम
वहरार = वहरने वाली
घट = शरीर
आच = हाथ
सिरजा = मिरजा वहलोल खां
आछटी = चली
भाच रै=पहाड़ी के
चाचरै = सिर पर, चोटी पर
भटकी=भटक कर गिरी
सूरतन = वीरत्व
रीझता = मुग्ध होते समय
सैल गुर = बडे बड़े पहाड़
पहां = राजाओं
अन = अन्य
दीजतां = देते समय
दात चढना = सामने आते ही
पछटी = चलाई
दुजड़ = तलवार
आछै = कट कर
केवाण = कृपाण
हथवाह = खड्ग-प्रहार
दुय राय = हिन्दू मुसलमान दोनों
रटियै = स्तुति की
झलम = शिरस्त्राण
वगतर = जिरह वख्तर
वरग=टुकड़े
पाखर = घोड़े की लौह की जाली

पृष्ठ ३१

लागौ थकौ = लग्न हुआ
चाळै =युद्ध में
हीलोहळ = समुद्र
हीलोळै =हिल्लोड़ित करता है
अधपत = राजा
सको = सभी
ताहरै = तुम्हारे
ओलै = अधीनस्थ, ओट में
खड = मानमर्दित
देवड़ा = देवड़ा (चौहान) राजपूत
डड = दण्ड
दाखै = प्रगट करता है
गजवधी = गजसिंह, हाथी बांधने वाले
दध पारू = समुद्र पार
दिखण=दक्षिण
खुटौ = समाप्त हुआ
दारू = बारूद
सकत = भय
राज तणो = आपका
तो सारू = तुम्हारे समान
मछर = मत्सर, क्रोध
मारू = मरुदेश के राजा
वळै =फिर
पाजा = किनारों
वध-वध=बढ-बढ कर

पृष्ठ ३३

अखियात = अक्षय कथा
उवारी = चिरस्थायी की
भड़ = योद्धा
जीपण = जीतने वाला
व्रद = विरुद
भारी = उत्तम
पाड़ियौ = धराशायी किया
झुरै = रुदन करती है
जोगण पीठ = योगिनी पीठ (दिल्ली) यहां आगरा
दियै = देती हैं
घोरा = कब्रों
घूमरि = चक्कर
खवासी = सेविकायें
नाखै = छोड़ती हैं
सिसकारा = निश्वास
कठै = कहाँ
अळझ=उलझी हुई, अटकी हुई
कोया = आंखों में
कीवी=किए हुए
गळती = बीतती हुई
गोरी = सुन्दरी
वाबहिया = पपीहा

पृष्ठ ३५

माचै = छा जाये
दूंद = धुंध, अंधकार
खूंदवै=बादशाह से
दमगळ = युद्ध
पतसाही = बादशाहत
रोळ = शोर, खलबली
हलकारै = योद्धाओं को प्रोत्साहित करती है
हाडी = हाडा वंश में उत्पन्न रानी
लाडी = पत्नी
ऊगे = उगते ही
दीह = दिन
सुहड़ां भड़ां = अच्छे योद्धाओं को
धसै = बढे
आघौ = आगे
भाराथ = युद्ध
भाऊ = जसमादे के भाई का नाम (भाऊसिंह)
अरोड़ा = पराक्रमी वीर
जेहा = जैसे
चिगथां = मुसलमानों से
चलावै चोटा=प्रहार करती है
सत्रसल = शत्रुसाल (जसमादे के पिता)
वजावै सार = तलवार चलाती है
पख = पक्ष
अमर = अमरसिंह (जसवंसिंह के बड़े भाई)
पाणी = पानिय, तेज

तागौ = धागा, यज्ञोपवीत
(सारधर्म)

पृष्ठ ३७

जूनी = प्राचीन
ढेलड़ी = दिल्ली
जपै = कहती है
जोध = योद्धा
विळूंधा = विलुब्ध हुए
दुरग्गौ = दुर्गादास
रूंधा = रोक रखे हैं
हूंस = शौक, उत्कण्ठा
हुरम्मां = बेगमों के
कोकल = कोयल
नाह = पति
साह = बादशाह
आडौ = मार्ग रोके हुए
आसाणी = आसकर्ण का पुत्र
(दुर्गादास)
वेध = युद्ध मे
खेद = शत्रुता वश
धर लेवा = भूमि को लेने के लिए
खाग = तलवार
वळ = सेना
खांडै = नष्ट करता है
असपत = बादशाह
अड़पायत = परम वीर
नींबाहरौ = नींबा का पौत्र
(दुर्गादास)
काज = लिए
दिस = तरफ
मोकळ = भेज
साम = स्वामी

पृष्ठ ३९

फळसां = दरवाजों
अठी = इधर
लग = तक
धारे = धारण करती है
दुरखी = स्नेह रहित
जोय = देख कर
अगजीत = अजीतसिंह
नूं = को
पत = पति
ह्वी = हुई
हेक पुरखी = एक पति वाली
मछर = मत्सर, क्रोध
मांट्या = स्वामियों
भिरड़ = कुपित
गुमर = घमड
भागा = चूर हो गया
वियां = दूसरे
निजारा = आँखों के इशारे
अजा = अजीतसिंह
अकारा = प्रचण्ड
असल = आधिपत्य
आगा = सामने,

वडमुखां नांख = मुख के आवरण को हटाकर
छूटा पटा वहती = बाल बिखेर कर फिरती हुई
सकस वर = बलिष्ठ पति (श्रेष्ठ नर)
घातिया = डाले हुए
सखरा = सुंदर
जसा रा = जसवतसिंह के (पुत्र)
धूत = चतुर
आगळ = आगे
जमी = धरती
नमी = नमित हुई
हुकमी = हुक्म के वश
मसळे = मसल कर
पाधरी = सीधी
रू दळी = रौंधो हुई
दळे = दलों से
ऊकस = गर्वोन्नत
हमंस = हविश, हौंस
रैवतां = घोड़ों से
राज री = श्रीमान की (आप की)
कसपाण = अर्धाङ्गिनी
रैणा = पृथ्वी

पृष्ठ ४१

मालदे = राव मालदेव
मगज = मिजाज, गर्व, अकड़
समळा = सीधे
ढचरका = छेड़छाड़
लचरका लियै=सुख क्रीड़ा करती है
कमळा = पृथ्वी
वैर = पत्नी
इळ = पृथ्वी
गूघटो = घूंघट
हव = अब
सझै = सजती है
भोगवण = भोग्या
जोड़ = जोड़ी

पृष्ठ ४३

जसराज = जसवतसिंह (जोधपुर नरेश)
जगतौ = जगतसिंह
खत्री = क्षत्रिय
सह = सब
पूठ = पीठ
दूजा = दूसरे
पाळट हुवै = उलटा जा रहा है
पाट = देवसिंहासन
सादि = पुकार
मोहण=भगवान कृष्ण
सूजा = सुजानसिंह
ग्या मुगत = मुक्ति को प्राप्त हो गए
राय = राजा
अन = अन्य
परहरै = छोड़ रहे हैं
सांकड़ी बार = संकट के समय

तोसूं = तुम से
परम = परमेश्वर
ची = की
विया = दूसरा
सेखा = राव सेखा
वींसमै = विश्राम (मृत्यु) को प्राप्त हुए
आन = दूसरे
पह = राजा
ओसंकै = भय वश
न कू = कोई नहीं
हूँ = मैं
ऐकलौ = अकेला
असुर=शत्रु
उळटिया = आक्रमण किया
जुड़ण कज = युद्ध के लिए
स्याम जाया = स्यामसिंह के पुत्र
ऊससौ = जोश से फूल उठा
वाद = झगड़ा
मांड = करके
वाहतौ = चलता हुआ
करतां थकां = करते ही
पाड़ = धराशायी कर
थड़ = सेना
न कौ = कोई नहीं
मेछाण = म्लेच्छ
जोत = दिव्य ज्योति
पथर = मूर्ति
पाड़ौ = उखाड़ो

पृष्ठ ४५

सकति = शक्ति
काइ = या
किना = अथवा
धूणिया = प्रकंपित किए
साकै = सशंकित होता है
खसर = युद्ध की नीयत से छेड़खानी
जिके = जो
खू दिया = रौंद डाले
तिके = जो
जीविया = जीवित रहे
त्रिण लेहि = मुंह में तिनका लेकर
सांभळै = सुन कर
विली = बिल्ली
धणी = स्वामी
बीहै = डरता है
खलक = दुनिया
नाम खारै = जोशीले नाम वाला
वळै = फिर
दळै = सेना में
घसि = मलकर
हजरत्ति = बादशाह
कहर = वज्र
डहर = समतल मैदान
कद काटिवा=जड़मूल से नष्ट करने के लिए

लहर दरियाव = अपरिमित उदार
लोचै = खयाल कर, सोच कर
हिवै = अब

पृष्ठ ४७

उदमाद = उछलकूद
विढण=लड़ने के लिए
ताया = उतावला, व्यग्र
खळां=शत्रुओं को
देसू = दूगा
मिजमान = मेहमान, शत्रु
तासां = युद्ध के वाद्य (ताशे)
धमक=ध्वनि
हींस = हिनहिनाहट
विखस = विषम
तोड़ां = बारूद को प्रज्वलित करने वाली रस्सियों
अखम = असह्य
झाळ = ज्वाला
चावै=चाहती हैं
झाट = प्रहार,
पाव्रणा = पाहुन
जोवै = देख रहे हैं
चामळ = चवल
गिरद = चारों ओर
कीध = कर लिए
घाटा=रास्ते
जपत = जब्त, काबू में

लाग आंटा सपत = सात घेरे डालकर (व्यूह रचना करके)
गीध = गृद्ध
लूभां = लुभायमान हो रहे हैं
काढतौ = कहता
कारणै = लिए
बारणै = द्वार पर
ऊभा = खड़े हैं
असळाकतौ=आलस्य मोड़ता हुआ
उरड़ = सीना तान कर आगे बढ़ता हुआ
हाकतौ =सचालित करता हुआ
अधायौ = अतृप्त
स्रोयण=रक्त
चाखतौ = चखता हुआ
आखतौ = अति वेग से
पतग = पक्षी
डोली = घायलों को ले जाने की डोली
पतग = चिनगारिया
झड = झड़ी
छायलां = रणरसिकों (छैलों)
कोह = क्रोध
पूरै = पूर्ति करती है

पृष्ठ ४९

कमळ = सिर
तायला = आततायियों के

अजरायलां = अजेय
वागियौ = जूझा
वारां = समय में
खीज = क्रोध
खागियौ = नष्ट कर डाला
लागियौ = लगा
अभायौ = न सुहाने वाला
वहादर सुतन = वहादुरसिंह का पुत्र
साहव=अगरेज
उरां = हृदय मे
अछरीक = अप्सराओं का प्रिय
सोक = शोक
वय = अवस्था
मछरीक = चौहान

पृष्ठ ५१

मोताहळ = मोती
चुणतौ = चुगता हुआ
सांझी = श्रेष्ठ
असमर = तलवार
साझतौ = मारता हुआ
अर = शत्रु
पै=पानी
लीलग = हस
सेर = शेरशाह
सगत = विषम, सख्त
टहतौ = रखता हुआ

पोयपण = कमल
क्रमसीहौत= कर्मसिंह का पुत्र
क्रमियौ = चला
रिम = शत्रु
किरमाळ = तलवार
मेछ = म्लेच्छ
धू = सिर
माणक = मानिक
पावासर = मानसरोवर
धीरत = हस
पर = भांति
रभ = रंभा
झूलणै = विमान पर
रौदां = मुसलमानों के
दोखी = शत्रु
देख दिखाळ=पराक्रम प्रदर्शित कर
प्रिसणां = शत्रुओं
पाणीहंड = मोती
पुहतौ = पहुँचा
स्रगपाळ=स्वर्ग की सीमा

पृष्ठ ५२

गिळती=निगलती
रिण=रण
गटका = ग्रास
चळवै = रक्त से
सुचाली = अति वेग-चलने वाली
अवखास = आम खास

बळबळती = अति तप्त
अखियाळी = कटार
सुभियाणां = मुसलमानों
थाटा = सैन्य दलों
भजण = नष्ट करने वालो
थारी = आपकी
फोरी = घुमाने पर
फाड़ती = चीरती हुई
काठहड़ै = दरबार में
माल्है = विहार करती है
गोसलतन = गुस्सैल शरीर वाली
खणती = चीरती हुई
अनबधा = अजेय वीरों को
जमदढ़ = कटार
जोधपुरा = जोधपुर निवासी
धजबधां = ध्वजधारण करने वालों (नरेशों) को
विचाळै = बीच में
बरबरती = टुकड़े टुकडे करती हुई
बांगाळां = बांग देने वालों–मुसलमानों को
मालहरा = मालदेव के वंशज
प्रतिमाळी = कटार
भखती = भक्षण करती हुई
लील भुवाळां = मुसलमान राजाओं को
सोनहरी = स्वर्ण जटित

दीवाण दिलेसर = बादशाह के दरीखाने में
रायजादां = राजकुमारों को
गजन तणै = गजसिंह के पुत्र ने
गिलिया = निगल लिए, धराशायी किए
गजबंधी = हाथी रखने वालों (राजाओं) को
ऊमजती = गर्वोन्नत
गाजी = गरज उठी

पृष्ठ ५५

करां = हाथों मे
भीमेण = राणा भीमसिंह
फतै = विजय
अरिंदां = शत्रुओं के
कटा = टुकड़े, घाव
सामग = श्याम अंग वाली
स्रोयणां = रक्त
अचावणी = आचमन करने वाली
साव = स्वाद
अभियामणी = भयंकर
थटां = समूह
सामणी = सावन की
वणाव = समान
पाणां = हाथों में
डोहै = विलोड़ित करती है
काळ वाळी सुता=महाकाल की पुत्री

आजै = सुशोभित होती है
गै तमां=हाथी रूपी अंधकार को
भनेव = नष्ट करने वाली
उदता = प्रज्वलित होने वाली
मंगळां झळां = अग्नि ज्वालाओं
तरेमां = समान
जोपै = समानता प्राप्त करती है
वरस्साळ वाळी = वरसात की
जनेव = तलवार
अड़स्साणी = महाराणा अड़सी
की संतान
करग्गा = हाथों मे
ओपै = सुशोभित होती है
सिवा=महाकाली
विहडी = खंड-खंड करने वाली
चातुरगा = चतुरगिणी सेना
पव्वै = वज्र
प्रथीजंपा = लक्ष्य भेद कर
पृथ्वी पर टकराने वाली
चत्रमास = चौमासा
तराज = भांति
रत्तां = रक्त को
मैमटा = उन्मत्त वीरों के
पीण = पीने वाली
हैजमां = सेनाओं के
रिमां = शत्रुओं की
लटारी = लोट लेने वाली
अलट्टां = न लोटे जाने वालों को
भाराथां = युद्धों में
कराक = करने वाली
जैत हथां = हाथों में रहने पर
विजय प्राप्त कराने वाली

पृष्ठ ५७

अगंजी=अजेय
आण=आन (दुहाई) आकर
राळी = डाली
हेकै=एक ही
पाण = बल से
गैजूहा = गजयूथों
सिंधवां = घोड़ो
गरूठ=भयकर
त्र वाळा = नगारों की
गैला = रास्तों
खेहा = धूल
पूर = पूर्णतया
वोम = आकाश
वेहू = दोनों
राहा=राह, पक्ष (हिन्दू-मुसलमान)
छडाळ = भाले
ओलै = ओट मे
रगाचार = केसरिया वस्त्र धारण
किए हुए
बरूथा = सेना मे
डंडाळां=नगारों के
घूस पड़ै=गर्जन हो रहा हो

रोड=बजने से
अड़ीलां = उन्मत्त
छछाळां = हाथियों के
लगरां = शृंखलाओं
कूंत = भाला
खुरासाण = बादशाहत
जोखा=आनद
हिंदूकार = हिन्दू वर्ग
हरोला = सेना के अग्र भागों को
तटाक = तालाब
पूर = पूर्ण
चदोलां = सेना के पृष्ठ भागों को
कदम्बी = कीचड
सेव = आवभगत
अजीत वाळा = अजीतसिंह के पुत्र
गांजै = भाले
आण वागी = आ लगी है
गगेव = भीष्म
सेल = भाला
ओभकै = डर कर चमकते हैं
नचीती = निश्चिन्त

पृष्ठ ५६

भला = भले ही
धिन धिन = धन्य धन्य
सांदवां = सांदू चारणों के
जाड अणी = असख्य सेना
हेड़ो=सुभटों को प्रोत्साहित कर आगे बढा
जा = जिस
कळ = समय
अणी = शस्त्र की नोक से
पातला = राणा प्रताप की
अणी = सहायता
आहव=युद्ध में
राण = सादू राणा (सांदू चारणों को सांदू राणा कहते हैं)
त्रजड़ = तलवार
लाघण = अनशन
सांसण = जागीर के गांव
ससत्र = शस्त्र
सालिया = सालने वाले
सात्रव = शत्रुओं को
खालिया = घाव
नत्रीठौ दीनौ = वे रोकटोक आगे बढाया
घाये लीना = घायल किया
प्रसण = शत्रु
आंबाहरा = आंबा के पौत्र
बीजा = दूसरा
ओपम = उपमा पाने योग्य
तागा = धरने में कठों में कटार खाकर मरने की क्रिया
नसा=घमड
अबै समै = इस समय

नथ = नाथने वाला
अनथ = न नाथे जाने वालों को
धरमातणौ = धरमाजी का पुत्र
रभ रथ = अप्सरा के रथ पर

पृष्ठ ६१

चवै = कहते हैं
जरू = अवश्य
कथ = कथा
रहाई = रहेगी
जातां = बीत जाने पर भी
सहावै = साहब ने
ची = की
अभिनमौ=नवीन, द्वितीय
ऊवरण = अमर बनने के लिए
उससतौ = जोश से फूलता हुआ
वी = दोनों
दियण = देने के लिए
नोखै = नोखा नामक गांव में
वाहतौ = चलाता हुआ
साहतौ = ऊपर उठाता हुआ
वाकारतौ = ललकारता हुआ
अढगा = जोशीले
अड़वौ=अड़ीला, वीर
आगळा=पहिले
गढवौ = चारण
सांम = स्वामी
जीवण सुतन=जीवनसिंह का पुत्र
बनियौ = दूल्हा
हरी = हरिसिंह
कनियौ = किनिया शाखा का चारण

पृष्ठ ६३

अत = बहुत
जाग = जगा
राग = प्रेम
अहलोक = मृत्यु लोक
ढमकतां = बजते हुए
कराळां = भयङ्कर
झूमरा = समूह
झाळां = ज्वालाओं में
मज = स्नान कर
बसण = वस्त्र
सरसी = सुशोभित हुई
सेझ = शय्या
भळक = चमक
जरकस = जरी निर्मित
भूखणां = आभूषणों
धगन = दग्ध होने के लिए
धन = धन्य
जगाहर = जगतसिंह के पौत्र
अतर = इत्र
तेम = उसी प्रकार
विखमी = विषम
खमी = सहन की
ततियां = तप्त

अरस = राणा अड़सी
सहल = सैर

पृष्ठ ६५

हुलस-म्रित =मृत्यु का उल्लास
धरी=धारण करने वाली
उचर = बोल कर
ओड = समान
भानचक = सूर्यचक्र
तरहरी = तरी
आन = अन्य
लार = पीछे
तरी = स्त्रिया
आठह = आठों
विळकुळी = दृढ निश्चयी
धरहरी = प्रविष्ट हुई
ठाण = स्थान
सतपुर = सतीलोक
रजठाणियां = राजसी निवासों को
सूर = सूर्य
प्रथमाणिया = पृथ्वी पर
उमगाणियां = उमगती हुई
अखियात = चिरस्थायी
बात = कथा

पृष्ठ ६७

ऊगां विण = बिना उगे
सूर = सूर्य
जेहवौ = जैसा
अंबर = आकाश
पाखै = रहित
दुवार = द्वार
रिव = रवि
बौम = व्योम, आकाश
वसण = आवास
जोती = प्रकाश
धाराहर = जलयुक्त मेघ
जैसीहरा = जयसिंह के पौत्र
जाणेवी = जान पड़ती है
कळपतर = कल्पतरु
जळहर = मेघ
दुनी = दुनिया
जीवाडण = जीवित करने वाला
फबै नहीं = शोभित नहीं होता
फरक = लौ
साहां = बादशाहों को
ग्रहण = बंदी बनाने वाला
मोखणौ = मुक्त करने वाला
आथमियौ = अस्त हो गया, मर गया
मोटौ = प्रचण्ड
अरक = सूर्य

पृष्ठ ६८

सूर = वीर
सुदतार = अच्छा दातार
विसरामियौ = विश्राम कर गये, मर गए

वरसी=वरण करेगा
मौहताद = रीझ
कौडा = कोड़पसावों
मौज = दान
कळहगुर = युद्ध में श्रेष्ठ
हालियौ=चला गया
कलाउत=राव कल्याणमल का पुत्र-
लाख ऊपर = लाखों के दल पर
वाग लेसी = युद्धार्थ घोड़े की वाग उठाएगा
अम्हां = हमें
लखमोल = लाखों के मूल्य का
आपसी = देगा
जैतहर=जैतसी के पौत्र
आभरण = शृंगार
सतर घड़ = शत्रु सेना
जीपणा = जीतने वाला
फौजा तणा गहणा = हाथी
रतन रो मोल = एक करोड़
हिंदवां छात=हिंदुओं का सिरमौर
वोळग्यौ आंक=आंक रद कर गया
हसत = हाथी
हव = अव
हींडता = झूमते
रायहर = राजद्वार
सुणस = सुनेंगे
काने = कानों से

पृष्ठ ७१

बाणावळि=धनुर्विद्या मे प्रवीण
लखण = लक्ष्मण
अरजण = अर्जुन
सिर दस = रावण
रोळण = नष्ट करने वाला
कस सघार=कस को मारने वाला
सासौ = सशय
भाज = मिटा
सभोभ्रम = पुत्र
निगम = वेद
साख = साक्षी
मानुख = मनुष्य
असपत = बादशाह
कथ = कह
अण = इस
वेधण = भेदने वाला
झकवेधण=मत्स्य भेद करने वाला
गिरतारण=पत्थर तैराने वाला, राम
गिरधार=पहाड़ धारण करने वाला, कृष्ण
जोगी परा = दूर के योगी
करामत = करामात
जोता = देखते हुए
अस=अवतार
धूसण = नष्ट करने वाला
धणख = धनुप
करण = महारथी कर्ण

आख = कह
दलीस = दिल्लीश्वर
अनत = देव
किना = या
सागर बांधणहार = सागर पर पुल बनाने वाला
काळी नाथणहार = कालियदमन करने वाला
कहा = कहें

पृष्ठ ७३

मुलक = देश
आहस = आत्मबल
लीधा = लिया
उरा = अपनी ओर
धणिया = स्वामियों ने
मरे = मर कर भी
ऊभां = जीवित रहते
कीधी = की, बनाई
दोयण = शत्रु
खळा डळा = खण्ड विखण्ड
खवा = कधों तक
खाच = वह चूडा जो कोहनी के ऊपर बाहुओं मे पहना जाता है
खावद = पति
उणहिज = उसी
इळा = पृथ्वी
छाणत = अप्रिय
परी गमी = खो गई
बापड़ै = बेचारों ने (कायरों ने)
बोतां = गवाते समय
जोता जोता = देखते-देखते
दुय चत्र = दो- चार
वाजियौ = लडा
दिखणी = मराठे
भोम = भूमि
लिखत = लिखा हुआ, लेख
भवेस = होता ही है
पूगौ = पहुँचा

पृष्ठ ७५

बधियौ = आगे बढा
धजर = आन
गोम = पृथ्वी
भड़ = वीर
महि = पृथ्वी
जाता = जाते समय, छिनते समय
चीथाता = अत्याचार से आक्रांत होने पर
महळा = स्त्री
अवसाण = अवसर
कींहिक = कुछ तो
रजपूती = वीरता
मरदां = पुरुषों
पत = स्वामी

पह् = राजा
खूटा = समाप्त हुए
परियाण=वश
आंकै = इस समय
आंकै = कभी नहीं
वांकै = वांकीदास ने
आसल = आसिया वश के

पृष्ठ ७७

वाइयै = बोइए
तिकौ = जो
वेली = साथी
थित = स्थिर
राखीजै = रखना चाहिए
थेली = थैली (निधि)
सूदौ = सीधा
सोरो = सरल
हालौ = चलो
नींब=नीम
सींचवा=सींचने के लिए
हेली = सहेली
रासा = रायसिंह
पयपै = कहती है
रणरीझल = रणरसिक
माझी=श्रेष्ठ, प्रमुख
रतनाणी = रतनसिंह का पुत्र
सयाणी = सयानी
वांटे = पीस कर

जीवीजै = जी जाय
काली = पगली
अगर = अगरु
की = क्या
अम्हीणौ = हमारा, अपना
अगणित बळ = अपरिमित शक्ति
घायौ = घायल हुआ
बौह = बहुत
जतनां = यत्नपूर्वक
पाटौ = पट्टी
जमण=जन्म
भमण = इहलोक में
भामण = भामिनी

पृष्ठ ७८

महा = विशाल
मडियौ = रचा गया
जाग = यज्ञ
मधै = बीच मे
हेळवी = हिलाई हुई, अभ्यस्त की हुई
अमर = अमरसिंह
जसा = जसवतसिंह
अपछर = अप्सरा
जोती = देखती
काचा = कच्चा, कायर
अमर = न मर कर
सूरहर = सूरसिंह के पौत्र

कळोधर = कुलोद्धारक
डरत गत = भयातुर हो
पीधौ = पिया
फूल दारू = अप्सरा के हाथों का मद्य
वडा = वडे भाई (अमरसिंह)
भोळवी = भ्रम में डाली हुई
हूर = अप्सरा
आवी = आई
मेलती = छोड़ती
नीसास = नि श्वास
मारू = मरुधराधिपति
पाटवी = राज्याधिकारी, ज्येष्ठ
वेगमै = अप्सराये
पैलकै = पूर्व समय में
तैं = तुमने
अैलकै = इस समय
लीध = लिया
टाळा = बचाव
पागती = पार्श्व में
दलौ = दलपतसिंह
नै = और
रतन = रतनसिंह
परणीजतै = विवाह करते समय
गजनवाळा = गजसिंह के पुत्र
जै = जो
तो = तुझ से

रूक = तलवार
त्रासियौ = अतृप्त
मराड़ी = मरवा कर
जान = बारात
मांडवै = मडप में
अछर = अप्सरा
ताजा = कुमारी

पृष्ठ ८१

चाढवौ: = चढाओ
वेग = शीघ्र
करग = हाथ
वडारण = दासी
जपै = कहती है
मुळक = मदस्मित
मोसौ = ताना
किसौ = कैसा
अनै = और
नह = नहीं
भिन भिन = विभिन्न
भारथ = युद्ध
भाजै = भगते हैं
उचरै = कहते हैं
उमेदां = उमेद कु वर
कांसौ = भोजन का थाल
सतावी = शीघ्र
कामण = कामिनी
भामण = भामिनी

दिस = तरफ
भाळो = देखो
पाती = पत्ती (तलवार)
पाग = पगड़ी
पमग = घोड़ा
पैलां = परपक्ष को
उपाळो = पैदल
रायजादी=राजकुमारी
रधवायौ=पकवाया
इसड़ी = ऐसी
उतावळ = शीघ्रता
इंदै = इंद्रसिंह ईंदाराजपूत,
आधसीजे = आधा पकने पर

पृष्ठ ८३

मूंघा = महंगे
हालरां = लोरियों
उगेरे = गा कर
हलाया = झुलाया
पालणै = पलनों मे
पोखे = पोषित कर
केण = किस
थाने=आपको
पीव = प्रियतम
फिरंगी = अंग्रेजों
हूंता = से
भाट = टक्कर
बारणै = द्वार पर

आघा=आगे, दूर
मूंडो = मुंह
पाछोई = वापिस
हो = था
सारा = सब
भेळा=इकट्ठे
कूंत = साजना, व्यक्तित्व
थावतां = होते हुए
आक पीवणो = जहर पीना
जसूंत = जसवतसिंह
वेरागरां = दुश्मनों ने
छाप = कलंक
आवगी=पूरी की पूरी
गमावे = गँवा कर
चाल = मर्यादा
सल्ला = सलाह
खोड़ = कलंक
नांरा = निहोरे (वारवार)
संभर्या = (चौहानों) साभर वालों
मेल्ह = रख
मरोड़ = आन-बान

पृष्ठ ८५

वीरा रस = वीर रस
भावै = सुहाता
वरणण = वर्णन
मोनूं = मुझे
जस = यश

नीति = नीति
म्हारै = मुझे
गढवा = चारण कवि
काय = क्यों
मोद = प्रसन्नता
मचै = होती है
कर चढियां=हस्तगत होने पर
माया = धन
माथा पच = माथा पच्ची
रच = रचना कर
घरका = घर वालों
रूपग=काव्य, गीत
खोटी = बेकार
गुण = काव्य
खोलै = प्रकट करता है
कायब = काव्य
वकता=वक्ता, कहने वाला
कूंता = परख करने वाला
आखर = अक्षर
कागळ = कागज
लापरपणो = लबारपन
चिड़सूं = चिढ जाऊंगा
दियूं = दूंगा

पृष्ठ ८७

रहसी = रहेगा
बोल = सुयश
घणा = बहुत
रासा = रायसिंह
मोटै प्रब = महान पर्व
छोटै ब्रन = तुच्छ बात
हेकण = एक
मौज = रीझ
किणी = किसी
धिनो=धन्य
मौज वरीसण = दान की वर्षा करने वाले
त्रिभैमण = निर्भयमन (वीर)
सौ अधियाळ = सौ के आधे (पचास)
सुंडाळ = सूंड वाले (हाथी)
सावठा=एक साथ ही
कलियाण तणा=कल्याणमल के पुत्र
सिखर = सेहरा
लाधे = प्राप्त कर
इळपुड़ = पृथ्वी तल पर
वधे = वढाकर, विस्तार कर
अनमध = अजेय
नकौ = कोई नहीं
मारू राव = मरुधराधिपति
मदगध = हाथी
चीतगढ = चित्तौड़गढ
लेवा = लेने के लिए, पहिनने के लिए

तलाक = शर्त
चै = के
नैण = सामने, देखते हुए
जूथार = हाथी

पृष्ठ ८६

पैली = पहले
इण आग = इससे पूर्व
इळपत = राजा
रासै = रायसिंह ने
आलोचे = विचार कर
नग नग = अेक अेक
पैड़ी = सीढी
नाग = हाथी
बीकाण = बीकानेर
सगपण = विवाह सम्बन्ध
कळौ = कल्याणमल
इळ = पृथ्वी
जसमा = जसमादे
पसंग = घोड़े
हसत = हाथी

पृष्ठ ६१

कर = हाथ
बिहुंवै = दोनों
खैंच बाधौ=बिल्कुल ठप्प हो गया
दिवाण = राणा
अगै = आगे
अखरैं = अक्षरों का (विधाता के) लेख का
लगार = तनिक भी
क्रम = कर्म
काळा = काले
अक = अक्षर
कलम करै = नष्ट कर देते हैं
अड़सीत्रप वाळो = राजा अड़सी का पुत्र
काळा = काले, मदमस्त
हींडळै =झूमते हैं
हूं = से
दुज = ब्रह्मा
देवराज = विष्णु
खोस = छीन कर
खळ=शत्रु
राय = राजा
भिम = भीमसिंह
आंकां = अक्षरों की, विधाता के लेख की
अजाद=मर्यादा
वारण = हाथी
धारण = रखने वाले
अवळा = उलटे
मेट = मिटा कर
सवळा=सुलटे, सीधे
हेळ हमीर = हमीर के समान दान की उमग रखने वाला
हमीर हर = हमीर का पौत्र

पृष्ठ ६३

ब्रह्म = विष्णु
कामो = काम
निकामो = व्यर्थ
बक = टेढापन
आगैहि = पहिले ही
परख = पहिचान
आ = यह
प्रतपौ=राज्य करो
पाणां पाथ = बाहुबल में अर्जुन के समान
चक्रवत=चक्रवर्ती
बिलद चित = विशाल हृदय

पृष्ठ ६५

दिनां थोड़ी = अल्पायु
उरां = वक्षस्थल में
बधै=बढती है
फेट = टक्कर
लागां = लगने पर
कोड़ीमोल=करोड़ के मूल्य वाले
तेण = उन्हें
मोटोड़ी=बड़ी बड़ी
चसम्मां = आंखें
साळग्राम जोड़ी=शालिग्राम के समान
मोड़ीं = मोड़ देने वाली
भाणवां = चारण कवि को
आछोड़ी = अच्छी
बरीसी = दान में दी
भीमेण = भीमसिंह ने
ठेलणी = पीछे हटाने वाली
अरिदां = शत्रुओं को
छदा = नखरा, चचलता से
हालणी = चलने वाली
ठेका = छलाँग
पोहा = नरेशों से
लेणी = ली
छलेणी = छलकजाने, ऊपर निकल जाने, लांघ जाने
पूरपाण = पूरी शक्ति, (तालाब)
कछेरी = कच्छ देश की
मलेणी = मलफने वाली
तुजीहां = धनुषों की डोरी
घलेणी = डालने वाली
भाप = छलाग
पातां = चारण कवियों को
बलेणी = बछेरी
उलगी = लांघ कर
तरगी = तरङ्ग
ताछ = तरह
बेतंगी = दो तंगों वाली
भिड़गी = घोड़ी
लाहा = छलांग
सगी बाव = हवा के साथ
आप अगी = अपने शौक की

पगी काज=कीर्ति के लिए
चंगी = उत्तम
पसाव = इनायत, प्रसाद
दुसाला = दो साल की
चाला सुखपाला = चाल में पालकी के सदृश
उरा ढाला=ढाल सदृश उरस्थल वाली
कंध चाप = धनुपाकार ग्रीवा
कोयणा = नेत्रों
गुलाल = लाल
देवाळ = दानी
काला = उन्मत्त
आलाताला करती = अत्यधिक चंचलता दिखाती हुई
त्रिलाला = रसिक (मौजी)
त्रवो = प्रदान की
तछेरी = भांति
पछे = पांख
मागां = मार्गों में
तलफ्फां = तलफने में (शीघ्रता से इधर उधर मुड़ने में)
मछेरी = मछली
जत्रां रछेरी = जंत्री में से निकाले तार की तरह सुधरी हुई

पृष्ठ ६७

गछेरी = मोड़ देने वाली
लछेरी = लाख के मोल वाली
अछेरी = उत्तम
कीधी आचार = दान में दी
आलमां जिहान = सारा संसार
धावां = छलांगों की
वदती = प्रशंसा करता है
उडडाणी = घोड़ी
खरीती=खरी, सचमुच
झालियां परीती=प्रीति लिए हुए, लोभ में
धूनां = पुरानी
आळ = अयाल
असल्ली = असल
घटा वाळी ='घाट' प्रान्त की
अेम = ऐसे
लागां रान = रान दबाने पर
ताळी पीठ वागा=पीठ पर थपकी लगने पर
नटां वाळी = नटों की
तेम = जैसे
रूपगा = यशकाव्य से
आपजादी=अत्यधिक मूल्य प्राप्त करने वाली
चायजादी = इच्छानुसार
प्रथीरीधी = पृथ्वी पर व्याप्त हुई
सिंधू पाज = समुद्रपर्यन्त
तायजादी = तपाई हुई
लड़ालूम = भरपूर शृङ्गार

माती = मस्त
ताती = अत्यधिक वेग वाली
दोज = द्वितीया
ससी = चन्द्रमा
सारखी = समान
चोज = शाक
असी = ऐसी
अबार = इस समय
समापी = दी
मोज = दान

पृष्ठ ६६

धर=भूमि पर
पैंड = कदम
माथो = सिर
धूणै = हिलाता है
केण = किस
हैराव = श्रेष्ठ घोड़ा
दीठौ = देख लिया
पाप्या = पापियों ने
घाल्यौ=कर दिया
पूठै = पीछे
कवियण = कवि ने
कासू = कौन सा
धजराज = घोड़ा
अवेरो = वापिस सँभालो
दत=दान
भखै =खाये

अडोलै = पास में न आये
चचळ=घोडा
परौ = वापिस
चूडा = चूडावत
काइ = अथवा
सांकड़ी = पतली
कुरड़ = दत पक्ति
उघाड़ी = आवरणहीन
लोभा = नीचे लुढके हुए
लाखा बातां = किसी भी प्रकार

पृष्ठ १०१

जड़ै = वद किए
दरियाव = समुद्र
घाटा = मार्ग
जपत = जव्त, अधीन
सल्हा = सलाह, मंत्रणा
उक्त=युक्ति
साहै = लगा कर
सहु = सब
सुदा = सहित
बळी = नाली, कडी
जवर = जवर्दस्त
ध्रमस्याम = स्वामिभक्ति
साबत = पूर्ण
धड़ी = गढी
नेक = सच्चे
ऊघड़ी = खुली हुई

नाकै = किनारे पर
छत्रिवट = क्षत्रियत्व
उक्त = युक्ति, विद्या
डोकरा = प्रौढ
केम = किस प्रकार
डाकै = पार करे
आफळै = पूर्ण बलके साथ
निकलने की चेष्टा करते हैं
झींगा = छोटी मछलिया
किता = कितने ही
तमगळ = बडे मत्स्य
तासै = खोजते हैं
जळत्ररवा = जलजन्तु
पासै = पास मे
कत बिलद्द = कार्य कुशल
सुतन खूमाण=खूमाणसिंह के पुत्र
झक = मछली
मकर = मगर
झाड़ै = खंडित कर दिया है
ताळ = देर

पृष्ठ १०३

रजै = तृप्त होता है
हगामां=उत्सवों
होकवा = ठाट-बाट
सिंधू वगां = सिंधू राग बजने पर
आग वजराग = अपरिमित वीरत्व
अजव = अद्भुत

मत्र = बातचीत
कठालग = कहां तक
वाखाण = बखान, वर्णन
किसनाग = श्याम अंग वाले
(अफीम)
नवानी = नया
हामपूरण=इच्छा पूरी करने वाला
ची = की
हवानी = मस्ती
खात कर = शौक से
कासी भवर = भैरव
रक्वानी = खाते हैं
हूकवळ कळळ=युद्ध का कोला हाल
दळ = दल, सेना
वळोवल = दोनों ओर
हुवा हल = हलचल होने पर
त्रहक = नगाड़े का बजना
डक-डक = गड़गड़ाहट की ध्वनि
त्र बक = नगाड़े
तासा = वाद्य विशेष
तवल = वाद्य विशेष
सात्रळां = भालों की
वीजळां = तलवारों की
घाय = घायल
वळ = सेना
वेळा = समय
कर चौगणा=चौगुना अफीम लेकर

वावळा = उन्मत्त
उडडी = घोडे
रातंखिया = लाल नेत्रों वाले
खड़े = चलाते हैं
ऊतावळा = शीघ्रता से
सूरपण = वीरत्व
फोक = वाहवाही
सांवळा = श्यामल (अफीम)
आटियल = ऑटीले, टेक निभाने वाले
थका = हुए
आवळा = टेढे

पृष्ठ १०५

थाकिया = थकित, दुर्बल
थरक = कांपती हुई
गाळसा = गले हुए, घोल (अफीम)
खोवा = अजुलि
गरक = गहरी
अरक = सूर्य
सादा = साधारण लोगों ने (अफीम न लेने वालों ने)
हारिया = हार गए

पृष्ठ १०७

भोळप = भोलापन, मूर्खता
लखण = लक्षण, अवगुण
अरज = प्रार्थना
माहरी = मेरी

ठाकर = ठाकुर
लगाडै = लगाओ
थेट = प्रारम्भ
भोळै थकै = अनजान मे
मनवार = मनुहार
फौड़ = हठवादिता
कई = क्यो
माजणा काय काढो = फजीती क्यों करते हो
रता = रँगा
गैल = पीछा
हमरकै = अब की बार

पृष्ठ १०६

गिरा = पहाड़ों मे
सरां = तालावों मे
गहकिया = प्रसन्नताजनक ध्वनि करने लगे
गुणियण = गुणी जनों ने
अभिनमा = अभिनव
हमै = अब
सांभळ = सुनो
अजा = अजीतसिंह
सीख = बिदा की आज्ञा
वरसाळ = वर्षा ऋतु
सिखड = मोर
पूरिया = पूर्ण हुए
तरां = वृक्षों की

तिस = प्यास
तूठौ = प्रसन्न हुआ
सेवगां = सेवकों को
सहसवळ = परम पराक्रमी
वीज = बिजली
सेहरा = पर्वत शिखरों पर
खिवै = चमकती है
इंद्र वूठौ = वर्षा होगई है
बाजतौ रयौ = चलना बंद होगया
वाळ = पवन
लीली=हरी
पुहम = पृथ्वी
रजा=आज्ञा
सांसण = दान की जागीरे
वगस = प्रदान कर
नवकोट=नवकोटि मारवाड़
सैधणी = स्वामी
जस करा = सुयश गाये
रावळौ = आपका
हिंदवा छात = हिन्दुओं के छत्र
पात = चारण कवि

पृष्ठ १११

इम = इस प्रकार
माची = मची
जागा=स्थान
लू विया=लूस आये
जूना = पुराने
डेडरा = मेंढक
पड़दां = तहों मे
ओसर = समय
छावैं = छा रहे है
रुत=ऋतु
ताजी = घोड़ा
सू स = सौगन्ध
दुपटैं = दुकूल
पेच = आँटा, वव
पाछी = वापिस
मदपीधा = मदमस्त
रीधा = प्रसन्न, रीझे हुए

पृष्ठ ११३

ताता = तीव्रगामी
तोखारा = घोड़ों को
धूजै = कॉप रहा है
अवर = आकाश
सेहा = सेवन करेगी
व्हैहां = होंगी
लेहा = लेगी
देहा = देंगी

पृष्ठ ११५

साद = आवाज, कूक
अव=आम के वृक्ष
थया = हुए
मौरा लदन = मजरियों से लदे हुए
द्यु त = युति, कांति

ताम = वैसे ही
आतस = तपत
आगमरण = स्वीकार करने वाली
पेख = देख कर
पोखतां = प्रोषितपतिकाओं के
झाळां = ज्वालायें
छ्छाळा = फव्वारे, झोंके
इसक-चाळा = काम-चेष्टायें
फूलवाळा विमक=काम बाण
गड़ागड़ साज = वाद्य ध्वनि
रत = लाल
अतर = इत्र
सड़क = सरोवार
गाहां छत्रधरा = राजगृहों में
गरकाव = पूर्णतया आच्छादित
कुमकुमा = केसर
हौद = हौज
कमोदरण = कुमुदिनि
मोद = हर्ष
फावै = शोभायमान हैं
इसौ = ऐसा
सैणिया = सज्जन गण
मिलण तावै = मिलन हेतु
भणै = कहते हैं
ऊमणै = उन्मन
दुलखै = दुर्लक्षित करते हैं

पृष्ठ ११७

सरवरण = श्रवणकुमार
चावै = चाहे
ऊजळै चीत = उज्ज्वल मन
जाया = जन्म दिया
धिनोधिन = धन्य
जानैं = जिनको
माईत = माता पिता
होड़ा = सेवा
दाखै = कहे
फजर = प्रातः
सद = अच्छे
पू गरणा = वस्त्रों से
बरदास = धीरज
तिरळोकी = तीनों लोकों

पृष्ठ ११६

फरजंद = पुत्र
छक = आपूर्ण
मछर = मत्सर, गर्व
छिलै=उफलता है, उन्मत्त होता है
महळी = पत्नी
भूंड = बुराई
ठीक = उचित
पड़वा = शयनागार
जोड़ायत = पत्नी
तोडायत = दरिद्री
बरतै=काम मे ले
सोड़ सोड़िया = ओढने-बिछाने के रजाई-गद्दे

पैमद = कारियां लगी गुदड़ी
हेटौं=नीचे
लालौ = लाडला
सिळावण=शीतल करने वाला
थोथै = व्यर्थ
राळी = डाली

पृष्ठ १२१

कूकड़ा = मुर्गा
वेकाजा=निकम्मा
जावतड़ौ = जाता हुआ
जाभा = अनेक
पण = भी
भाट = भोंका
पड़ = लगने से
भोला = भूले, भोंके
मिनड़ी = बिल्ली
पुळ = अवसर
वाहड़ = लौट आ
सहेतौ = स्नेह सहित
आंबली = इमली
अेकरसां = अेक बार
भळ = पुन:
सैणां = सज्जनों
वहे = चल कर
छोगाळा = कलगी वाले
साद = बांग, आवाज

पृष्ठ १२३

सुखरास रमता=आनदकेलि करते
खवास = सेवक
मौकळा = प्रचुर
दाम = धन
पखै = बिना
कलिया = कल्याणमल
मुळकती = मद मद हँसती
चां = का
जाधौ = बधा हुआ
जमारौ = जीवन
धौळहर = शुभ्र अट्टालिकायें
लाखाधणी = लक्षाधिपति
प्रयाणै लावै = दूर की यात्रा
जुहार = अभिवादन
कडूबौ = कुटुम्ब
भेळौ = एकत्रित
पिड = मृत शरीर
पुळ = घड़ी
चापरि = शीघ्रता
काढौ = घर से निकालो
असिया = घोड़े
पग्ग आफळता= टापों से पृथ्वी खूदते हुए
मदभर = हाथी
खळहळता=लौह शृंखला बजाते हुए
मैमत = मदमस्त

पृष्ठ १२५

वहळौ = बाहुल्य
पाळौ=पैदल
देहळी = देहली
फळसा = द्वार
मड़हट = मरघट
किणियन=किसी ने भी
ताती = गर्म
झळियां = ज्वालाओं
धड़ी धड़ी कर = धड़ धड़ कर
तड़ी=लकड़ी
ध्रौवियौ = कुरेदा
बड़ी बड़ी = टुकड़े टुकड़े कर
बाळियौ = जलाया
वप=शरीर
चरचतौ = लेप करता था
भणहणता=गुनगुनाते
रजियौ = सुशोभित हुआ
पूगरणै = वस्त्र से
मुसाणां = श्मसानों
खाटी = कमाई
दाटी = दवाई
खोदे = खोद कर
हेक = अेक
सिळी = तिनका
पैठो = प्रविष्ट हुआ

पृष्ठ १२७

पांतरियां = भटके हुओं
बाट=मार्ग
नपीरां = पीहर विहीनों
नमाया = मातृविहीनों
तीकम=त्रिविक्रम
बापौ = पिता
पाळग = पालक
पांगळां = पगुओं
त्रसियां = तृषितों
रसाळ = स्वादिष्ट
थाकां = थकितों
वीसामौ = विश्राम
वूडा = डूबे हुओं
नीघरियां = गृह हीनों
मादां = रुग्णों
ओखद = औषधि
तेड़्यौ = बुलाने पर
तीजी ताळ=तीसरीताली बजते ही, अति शीघ्र
विखमी = विषम
घाट = मार्ग
वोळाऊ = यात्रा रक्षक
साइ = स्वामी, प्रभु
सुगाळ = सुकाल

पृष्ठ १२९

पाळा = पैदलों

सुखपाळ = पालकी
बौहनामी = अनेक नामधारी
ऊघाड़ां = नगों
बखतर = कवच
ढळियौ = ढला हुआ
तसती = दु ख
रान=उजाड़
बसती = बस्ती

पृष्ठ १३१

हरिया = हे हरिदान !
हाक = चला
मती = मत
जाच = मांग
किसन = हल
दाळद = दरिद्रता
ऊवरां = दूसरों
भाजै = नष्ट हो
ऊणत = अभाव
फिटा कर = छोड़
फोग = झाड़ विशेष
गुड़ाय = काट गिरा
मखरा = उत्तम
बळद = बैल
सांजत = साज सामान
कसी=कुदाली
जाचतौ = मांगता
नाईवर = हल
बिचाळै = बीच में
कूवा=हल
ऊनाळ = ऊनालू फसल
कुस रौ बाप = हल

डिंगळ गीत

भौगोलिक, जातीय तथा वैयक्तिक नामों की

अकारादिक्रम सूची

र

ल

व

स

ह